TOP SELLING PGT PRACTICE SETS

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा
चयन बोर्ड द्वारा आयोजित

PGT

प्रवक्ता चयन परीक्षा

Most Updated Book!
UP PGT के सभी नवीनतम पेपर्स इस पुस्तक में शामिल हैं।

शिक्षाशास्त्र

15 सॉल्व्ड प्रैक्टिस सेट्स
एवं 04 सॉल्व्ड पेपर्स
(2021, 2019, 2016, 2013)

Code	Price	Pages	ISBN
CB984	₹ 229	264	978-93-5561-358-5

विषय-सूची

Student's Corner

पृष्ठ संख्या

- ⊙ **Agrawal Examcart Help Centre** — **iv**
- ⊙ **Best Strategy** परीक्षा की तैयारी करने का सही तरीका! — **v**
- ⊙ **Current Affairs!** की **100%** सटीक तैयारी कैसे करें ? — **vi**
- ⊙ **Student's Corner** — **vii**
- ⊙ प्रवक्ता चयन परीक्षा पाठ्यक्रम — **viii**

सॉल्व्ड पेपर्स

- ☆ प्रवक्ता चयन परीक्षा–2021 शिक्षाशास्त्र हल प्रश्न-पत्र (परीक्षा तिथि : 18 अगस्त, 2021) — **1-16**
- ☆ प्रवक्ता चयन परीक्षा–2016 शिक्षाशास्त्र हल प्रश्न-पत्र (परीक्षा तिथि : 2 फरवरी, 2019) — **1-16**
- ☆ प्रवक्ता चयन परीक्षा–2013 शिक्षाशास्त्र हल प्रश्न-पत्र (परीक्षा तिथि : 8 सितम्बर, 2013) — **17-32**
- ☆ प्रवक्ता चयन परीक्षा–2011 शिक्षाशास्त्र हल प्रश्न-पत्र (परीक्षा तिथि : 15 जून, 2016) — **33-47**

प्रैक्टिस सेट्स

- ➢ प्रैक्टिस सेट–1 — **48-60**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–2 — **61-73**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–3 — **74-87**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–4 — **88-100**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–5 — **101-113**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–6 — **114-126**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–7 — **127-139**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–8 — **140-152**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–9 — **153-165**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–10 — **166-179**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–11 — **180-192**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–12 — **193-205**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–13 — **206-220**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–14 — **221-233**
- ➢ प्रैक्टिस सेट–15 — **234-247**

प्रवक्ता चयन परीक्षा, 2013
शिक्षाशास्त्र

परीक्षा तिथि : 8 सितम्बर, 2013

1. **कथन 1**—42वें संशोधन से पूर्व शिक्षा राज्यों की जिम्मेदारी थी।

कथन 2—1976 में शिक्षा को संघ सूची में हस्तान्तरित किया गया।

(A) केवल 1 सही है

(B) केवल 2 सही है

(C) दोनों 1 तथा 2 सही हैं

(D) न 1 और न ही 2 सही है

1. (A) (1) 42 अनुच्छेद (1976) राज्य की जिम्मेदारी थी।

(2) 1976 में पाँच विषय को समवर्ती सूची में शामिल किया गया—

(1) शिक्षा, (2) वन, (3) नाप तौल, (4) वन्य जीवन–पक्षी संरक्षण, (5) न्याय।

- ये संशोधन मुख्यतः स्वर्णसिंह आयोग की सिफारिशों को लागू करने के लिए थे।
- कुछ महत्त्वपूर्ण संशोधन समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्र की अखंडता के उच्चादर्शों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने, नीति निदेशक सिद्धांतों को अधिक व्यापक बनाने और उन्हें उन मूल अधिकारों, जिनकी आड़ लेकर सामाजिक–आर्थिक सुधारों को निष्फल बनाया जाता रहा है, पर वरीयता देने के उद्देश्य से किए गए।
- इस संशोधनकारी अधिनियम द्वारा नागरिकों के मूल कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में एक नया अध्याय जोड़ा गया।
- कानूनों की संवैधानिक वैधता से सम्बन्धित प्रश्नों पर निर्णय लेने के लिए न्यायाधीशों की न्यूनतम संख्या निर्धारित करने तथा किसी कानून को संवैधानिक दृष्टि से अवैध घोषित करने के लिए कम–से–कम दो–तिहाई न्यायाधीशों की विशेष बहुमत व्यवस्था करके न्यायपालिका सम्बन्धी उपबंधों का भी संशोधन किया गया।
- उच्च न्यायालयों में अनिर्णीत मामलों की बढ़ती हुई संख्या को कम करने के लिए और सेवा, राजस्व, सामाजिक–आर्थिक विकास और प्रगति के संदर्भ में कतिपय अन्य मामलों के शीघ्र निपटारे को सुनिश्चित करने के लिए इस संशोधनकारी अधिनियम द्वारा संविधान के अनुच्छेद 136 के अधीन ऐसे मामलों में उच्चतम न्यायालय के अधिकार क्षेत्र को सुरक्षित रखते हुए प्रशासनिक और अन्य न्यायाधिकरणों के गठन के लिए उपबंध किया गया।
- अनुच्छेद 226 के अधीन उच्च न्यायालयों के रिट अधिकार क्षेत्र में भी कुछ संशोधन किया गया।

2. ''निषेधनात्मक शिक्षा'' का प्रत्यय सम्बन्धित है—

(A) अरस्तू से (B) कमेनियम से

(C) सुकरात से (D) रूसो से

2. (D) रूसो के अनुसार, वह ज्ञान अथवा क्रिया जिसे बच्चे स्वयं करके स्वयं के अनुभवों से सीखते हैं, वह स्थायी होता है। इसे रूसो ने निषेधात्मक या नकारात्मक शिक्षा की संज्ञा दी।

रूसो के अनुसार, शिक्षा में तीन महत्वपूर्ण पक्ष हैं–बच्चे की अन्तर्निहित शक्ति, सामाजिक वातावरण तथा भौतिक वातावरण।

3. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार पाठ्यक्रम होना चाहिए—

(A) लचीला (B) कठोर

(C) एकसमान (D) विषय केन्द्रित

3. (A) पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए, जिससे उसमें परिवर्तन एवं संवर्धन किया जा सके। पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है जो विद्यालयों में परम्परागत रूप से पढ़ाये जाते हैं, बल्कि इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी सम्मिलित होती है, जिनको विद्यार्थी विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला, खेल के मैदान तथा शिक्षक एवं छात्रों के अनेक अनौपचारिक सम्पर्कों से प्राप्त करता है।

4. 'द प्रिंसिपल्स ऑफ एजुकेशनल सोशियोलॉजी' के लेखक हैं—

(A) स्पेन्सर (B) ऑगस्ट कॉम्ट

(C) जॉन डीवी (D) मैक्स वेबर

4. (*) 'द प्रिंसिपल्स ऑफ एजुकेशनल सोशियोलॉजी के लेखक Walter Robinson Smith (1928) थे। कोई भी विकल्प सही नहीं है।

5. अधिगम का सम्बद्ध प्रतिक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है—

(A) ई.एल. थॉर्नडाइक ने

(B) बी.एफ. स्किनर ने

(C) ई.आर. गथरी ने

(D) आई.पी. पॉवलाव ने

5. (A) ई. एल. थॉर्नडाइक ने ''सम्बद्ध प्रतिक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसे सम्बन्धवाद बंधन तथा प्रयास व त्रुटि सिद्धान्त भी कहते हैं।

एडवर्ड ली थॉर्नडाइक ने सन् 1913 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'एजुकेशनल साइकोलॉजी' में सीखने का एक नवीन सिद्धान्त प्रतिपादित किया था। इसे उत्तेजक – प्रतिक्रिया सिद्धान्त या सीखने का सम्बन्ध प्रतिक्रिया सिद्धान्त भी कहते हैं।

थॉर्नडाइक ने सीखने के सिद्धान्त में तीन महत्पूर्ण नियमों का वर्णन किया है, जो निम्नांकित हैं–

1. अभ्यास का नियम
2. तत्परता का नियम
3. प्रभाव का नियम

6. किसका विचार था कि बालक एवं बालिकाओं दोनों को संगीत, सैन्य अभ्यास तथा गृहकार्य सिखाया जाना चाहिए ?

(A) प्लेटो (B) डीवी

(C) अरस्तू (D) महात्मा गाँधी

6. (A) प्लेटो के अनुसार, ''बालक एवं बालिकाओं दोनों को संगीत, सैन्य अभ्यास तथा गृह कार्य सिखाया जाना चाहिए।''

मानव इतिहास में शिक्षा के सम्बन्ध में प्रथम पुस्तक प्लेटो द्वारा रचित 'रिपब्लिक' है, जिसे रूसो ने शिक्षा की दृष्टि से अनुपम कृति माना। इसके अतिरिक्त 'लाज' में भी

शिक्षा के सम्बन्ध में प्लेटो के विचार मिलते हैं। तत्कालीन प्रजातंत्र हो या कुलीनतंत्र, राजनीति स्वार्थ पूर्ति का साधन बन गई थी। षड्यंत्रों, संघर्षों एवं युद्धों की जगह समदर्शी शासन जो नागरिकों के बीच सद्भावना को बढ़ा सके, के महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्लेटो ने एक नये समाज की रचना को आवश्यक माना। इस तरह के समाज की रचना का सर्वप्रमुख साधन प्लेटो ने शिक्षा को माना। समाज संघर्षविहीन तभी होगा जब अपने–अपने गुणों के अनुसार सभी लोग शिक्षित होंगे।

7. किसने बहुउद्देशीय विद्यालयों के लिए प्रस्तावित किया ?

(A) विश्वविद्यालय आयोग 1948

(B) विश्वविद्यालय आयोग 1964

(C) विश्वविद्यालय आयोग 1882

(D) मुदालियर आयोग 1952

7. (D) मुदालियर आयोग का गठन 1952-53 में किया गया। इसके द्वारा त्रिभाषा सूत्र व बहुउद्देश्यीय विद्यालयों के लिए प्रस्ताव किया गया।
मुदालियर आयोग माध्यमिक शिक्षा के ढाँचे में सुधार लाने के लिए गठित किया गया था। भारत सरकार ने 23 सितम्बर, 1952 को डॉ. लक्ष्मणस्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में ''माध्यमिक शिक्षा आयोग'' की स्थापना की थी, उन्हीं के नाम पर इसे 'मुदालियर कमीशन' कहा गया।

8. 'SITE' का पूरा नाम है–

(A) सैटेलाइट इन्टरनेशनल टेलीविजन एक्सपेरीमेण्ट

(B) सैटेलाइट इन्टरनेशनल ट्यूटोरियल एक्सपेरीमेण्ट

(C) सैटेलाइट इन्ट्रक्शन टेलीविजन एक्सपेरीमेण्ट

(D) सैटेलाइट इन्ट्रक्शन टेलीविजन एक्सपेरीमेण्ट

8. (C) 'SITE' का पूरा नाम–
सैटेलाइट इन्ट्रक्शन टेलीविजन एक्सपेरीमेण्ट।

9. अचेतन मन के अध्ययन हेतु सर्वोत्तम तकनीक है–

(A) वस्तुनिष्ठ (B) आत्मनिष्ठ

(C) प्रक्षेपण (D) ये सभी

9. (C) प्रक्षेपीय विधि अचेतन मन के अध्ययन की सर्वोत्तम तकनीकी है। प्रक्षेपीय से अभिप्राय अचेतन को जानने की उस प्रक्रिया से है, जिसमें व्यक्ति अपने विचारों, दृष्टिकोण, संवेगों, गुणों, आवश्यकताओं आदि को अन्य व्यक्ति या वस्तुओं के माध्यम से अपरोक्ष ढंग से अभिव्यक्त कर देता है।

10. शिक्षा का आधारभूत उद्देश्य है–

(A) ज्ञान प्रदान करना

(B) व्यक्ति का विकास करना

(C) परीक्षा उत्तीर्ण कर उपाधि प्राप्त करना

(D) किसी व्यवसाय हेतु तैयार करना

10. (B) शिक्षा का आधारभूत उद्देश्य ''व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है।''
शिक्षा के लिए प्रयुक्त अँग्रेजी शब्द एजुकेशन (Education) पर विचार करें तो भी उसका यही अर्थ निकलता है।''एजूकेशन'' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के तीन शब्दों से मानी गयी है–
1. **एजुकेटम** – इसका अर्थ है– शिक्षण की क्रिया
2. **एजुकेयर** – शिक्षा देना– ऊपर उठाना
3. **एजुसियर** – आगे बढ़ना
सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षा का अर्थ है– प्रशिक्षण, संवर्धन और पथ–प्रदर्शन करने का कार्य। इस प्रकार एजुकेशन का सर्वमान्य अर्थ हुआ बालक की जन्मजात शक्तियों या गुणों को विकसित करके उसका सर्वांगीण विकास करना।

11. सामान्य संभाव्यता वक्र में किसी भी प्राप्तांक के मध्यमान तथा ± 1 σ के बीच आने की संभावना होती है–

(A) 66.4% (B) 68.3%

(C) 96.4% (D) 99.7%

11. (C) सामान्य संभाव्यता वक्र के प्राप्तांक
$-1\sigma + 1\sigma\% = 68.38\%$
$-2\sigma + 2\sigma\% = 95.44\%$
$-3\sigma + 3\sigma\% = 99.97\%$

12. पूर्वाग्रह का विकास घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है–

(A) सामाजिक परिवर्तन से

(B) समाजीकरण से

(C) नगरीकरण से

(D) आधुनिकीकरण से

12. (B) समाजीकरण की प्रक्रिया में ही पूर्वाग्रह का विकास होता है।
समाजीकरण का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से अंतः क्रिया करता हुआ सामाजिक आदतों, विश्वासों, रीति-रिवाजों तथा परंपराओं एवं अभिवृत्तियों को सीखता है। इस क्रिया के द्वारा व्यक्ति जन कल्याण की भावना से प्रेरित होते हुए अपने आपको अपने परिवार, पड़ोस तथा अन्य सामाजिक वर्गों के अनुकूल बनाने का प्रयास करता है, जिससे वह समाज का एक श्रेष्ठ, उपयोगी तथा उत्तरदायी सदस्य बन जाए तथा उक्त सभी सामाजिक संस्थाएँ तथा वर्ग उसकी प्रशंसा करते रहें।

13. क्रेश्मर के व्यक्तित्व वर्गीकरण का आधार है–

(A) शारीरिक गठन

(B) मूल्य

(C) सामाजिक अन्तर्क्रियायें

(D) प्रकृति

13. (A) मनोवैज्ञानिक क्रेश्मर के व्यक्तित्व के वर्गीकरण का आधार शारीरिक गठन है। इन्होंने व्यक्तित्व को तीन भागों में विभक्त किया है–(1) Asthenic, (2) Athletic, (3) Pycnic
1. **स्थूलकाय प्रकार**–ऐसे व्यक्ति का कद छोटा होता है तथा शरीर भारी एवं गोलाकार होता है, गर्दन छोटी और मोटी होती है। इनका स्वभाव सामाजिक और खुशमिजाज होता है।
2. **कृशकाय प्रकार**–इस तरह के व्यक्ति का कद लम्बा होता है, परन्तु वे दुबले-पतले शरीर के होते हैं। ऐसे व्यक्तियों के शरीर की माँसपेशियाँ विकसित नहीं होती हैं। स्वभाव चिड़चिड़ा होता है तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से दूर रहने की प्रवृत्ति अधिक होती है।
3. **पुष्टकाय प्रकार**–ऐसे व्यक्ति की माँसपेशियाँ काफी विकसित एवं गठी होती हैं। शारीरिक कद न तो अधिक लम्बा होता है न अधिक मोटा। शरीर सुडौल और सन्तुलित होता है। इनके स्वभाव में न अधिक चंचलता होती है और न अति मन्दन। इन्हें काफी सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है।

14. DIET की स्थापना निम्नलिखित स्तर के शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु की गयी–

(A) पूर्व–प्राथमिक स्तर

(B) प्राथमिक स्तर

(C) माध्यमिक स्तर

(D) उच्च स्तर

14. (B) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में शिक्षक शिक्षा के समुन्नत बनाने के लिए प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों और अनौपचारिक शिक्षा शिक्षकों के लिए पूर्व सेवा एवं सेवारत पाठ्यक्रमों के आयोजन के लिए प्रत्येक जिले में जिला शिक्षा तथा प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने का प्रावधान किया गया।

15. बुद्धि के किस घटक पर प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है ?

(A) G कारक

(B) S कारक

(C) G और S कारक दोनों

(D) किसी भी कारक पर नहीं

15. (A) बुद्धि के G कारक (सामान्य कारक) पर प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि G कारक को जन्मजात कारक माना जाता है।

इस सिद्धान्त के प्रवर्तक ब्रिटेन के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्पियरमैन हैं। उन्होंने अपने प्रयोगात्मक अध्ययनों तथा अनुभवों के आधार पर बुद्धि के इस द्वि-तत्व सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनके मतानुसार बुद्धि दो शक्तियों के रूप में है या बुद्धि की संरचना में दो कारक हैं जिनमें एक को उन्होंने सामान्य बुद्धि तथा दूसरे कारक को विशिष्ट बुद्धि कहा है। सामान्य कारक या G-factor से उनका तात्पर्य यह है कि सभी व्यक्तियों में कार्य करने की एक सामान्य योग्यता होती है।

16. अधिगम के संस्थिति सिद्धान्त में जीवन विस्तार का मुख्य घटक है–

(A) लक्ष्य (B) व्यक्ति

(C) बाधायें (D) शक्ति

16. (B) **लेविन** के अनुसार, ''व्यक्ति किसी वस्तु को अपने परिवेश के सन्दर्भ में ग्रहण करता है न कि उसके समग्र रूप में।'' संस्थिति सिद्धान्त, लेविन के द्वारा दिया गया है। इस क्षेत्र का मुख्य घटक 'व्यक्ति' है।

17. निम्नलिखित में से कौन प्रदत्त भूमिका का एक निर्धारक है?

(A) जन्म क्रम

(B) व्यावसायिक परिस्थिति

(C) रुचि

(D) शैक्षिक उपलब्धि

17. (A) जन्म क्रम प्रदत्त भूमिका का एक निर्धारण तत्व होता है।

18. 'फिलॉसफी' दो शब्दों के योग से बना है–

(A) फिलॉस + सोफिया

(B) फिलो + सोफिया

(C) फि + लोसोफिया

(D) फिल + ओसोफिया

18. (A) दर्शन शब्द को अंग्रेजी में फिलॉसफी कहते हैं। इस शब्द की उत्पत्ति दो ग्रीक शब्दों Philos (फिलॉस) तथा Sophia (सोफिया) से हुई है, जिसका अर्थ 'ज्ञान के लिए प्रेम' है।

दर्शन शब्द संस्कृत की दृश् धातु से बना है–''दृश्यते यथार्थ तत्वमनेन'' अर्थात् जिसके द्वारा यथार्थ तत्व की अनुभूति हो वही दर्शन है। अंग्रेजी के शब्द फिलॉसफी का शाब्दिक अर्थ ''ज्ञान के प्रति अनुराग'' होता है। भारतीय व्याख्या अधिक गहराई तक पैठ बनाती है, क्योंकि भारतीय अवधारणा के अनुसार दर्शन का क्षेत्र केवल ज्ञान तक सीमित न रहकर समग्र व्यक्तित्व को अपने आप में समाहित करता है। दर्शन चिन्तन का विषय न होकर अनुभूति का विषय माना जाता है। दर्शन के द्वारा बौद्धिक तृप्ति का आभास न होकर समग्र व्यक्तित्व बदल जाता है।

19. अधिगम स्थानान्तरण के समान तत्वों के सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया था ?

(A) थॉर्नडाइक (B) स्पियरमैन

(C) कोह्लर (D) जड़

19. (A) समान तत्वों के सिद्धान्त का प्रतिपादन ''थॉर्नडाइक'' महोदय ने किया था।

20. निम्नलिखित में से कौन–सा पूर्व प्राथमिक शिक्षा का केन्द्र नहीं है ?

(A) बालबाड़ी (B) आँगनबाड़ी

(C) नर्सरी स्कूल (D) किण्डर गार्टेन

20. (C) पूर्व प्राथमिक शिक्षा का केन्द्र बालबाड़ी आँगनबाड़ी तथा किण्डर गार्टेन है एवं प्राथमिक शिक्षा का केन्द्र नर्सरी स्कूल है।

21. बालिकाओं की शिक्षा को अधिक प्राथमिकता देने की आवश्यकता है, क्योंकि–

(A) लड़कियाँ अधिक बुद्धिमान होती हैं

(B) लड़कियाँ संख्या में कम होती हैं

(C) पूर्व में लड़कियों से भेदभाव होता रहा है

(D) केवल लड़कियाँ ही सामाजिक परिवर्तन की अगुवाई कर सकती हैं।

21. (C) हेल्थ मैनेजमेन्ट इन्फॉरमेशन सिस्टम 2014-15 की रिपोर्ट में बाल लिंग अनुपात घटकर 883 बालिकाएँ प्रति 1 हजार बालक रह गया है। इसलिए बालिकाओं की शिक्षा को अधिक प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

22. निम्नलिखित में से कौन–सा चिह्न 16 व्यक्तित्व कारकों में से किसी को भी प्रदर्शित नहीं करता है ?

(A) E (B) K

(C) L (D) N

22. (B) कैटल द्वारा 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली विकसित की गयी है। इसमें से 16 PF की लोकप्रियता अधिक है।

कैटल ने प्रमुख शीलगुणों की शुरुआत ऑलपोर्ट द्वारा बतलाये गए 18,000 शीलगुणों में से 4,500 शीलगुणों को चुनकर किया। बाद में, इनमें से समानार्थक शब्दों को एक साथ मिलाकर इसकी संख्या उन्होंने 200 कर दी और फिर बाद में विशेष सांख्यिकीय विधि यानी कारक विश्लेषण के सहारे अन्तर सहसम्बन्ध द्वारा उसकी संख्या 35 कर दी। कैटल ने शीलगुणों को दो भागों में विभाजित किया है–

1. **सतही शीलगुण**–इस तरह का शीलगुण व्यक्तित्व के ऊपरी सतह या परिधि पर होता है यानी इस तरह के शीलगुण ऐसे होते हैं, जो व्यक्ति के दिन–प्रतिदिन की अन्तःक्रिया में आसानी से अभिव्यक्त हो जाते हैं।
2. **स्रोत या मूल शीलगुण**–कैटल के अनुसार मूल शीलगुण व्यक्तित्व की अधिक महत्वपूर्ण संरचना है तथा इसकी संख्या सतही शीलगुण की अपेक्षा कम होती है। मूल शीलगुण सतही शीलगुण के समान, व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन की अन्तः क्रिया में स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं हो पाते हैं।

23. किशोरावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्या है–

(A) कल्पनाशीलता का प्रभाव

(B) स्थायित्व एवं समायोजन का अभाव

(C) विषमलिंगी प्रेम का अभाव

(D) समाज सेवा की भावना का अभाव

23. (C) किशोरावस्था एडोलसेन्स नामक अंग्रेजी शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है, जिसका अर्थ है परिपक्वता की ओर बढ़ना। इस समय बच्चे न छोटे बच्चों की श्रेणी में आते हैं और न ही बड़े या अपने शब्दों में कहें तो ये छोटे से बड़े बनने की प्रक्रिया की समयावधि से गुजरते हैं।

किशोरावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्या विषमलिंगी प्रेम का अभाव है। स्वप्रेम, समलिंगी प्रेम तथा विषमलिंगी प्रेम के रूप में किशोर–किशोरियाँ अपनी

कामप्रवृत्ति (Sex Instinct) की संवेगात्मक अभिव्यक्ति करते है।

24. हाईस्कूल व्यक्तित्व प्रश्नावली का विकास किया है–

(A) बर्नराइटर द्वारा (B) ऑलपोर्ट द्वारा

(C) कैटल द्वारा (D) मूरे द्वारा

24. (C) कैटल द्वारा व्यक्ति परीक्षण का निर्माण किया गया था जोकि 16 PF टेस्ट के नाम से जाना जाता है।

25. असंगत कथन की पहचान कीजिए–

(A) वृद्धि केवल शारीरिक परिवर्तन को प्रकट करती है।

(B) विकास में वृद्धि सम्मिलित है

(C) वृद्धि जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है

(D) वृद्धि में परिवर्तनों को मापा एवं देखा जा सकता है।

25. (C) विकास जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जबकि बुद्धि एक निश्चित आयु तक ही होती है।

विकास का तात्पर्य व्यक्ति में नई–नई विशेषताओं एवं क्षमताओं का विकसित होना है जो प्रारम्भिक जीवन से आरम्भ होकर परिपक्वावस्था तक चलती है। हरलॉक के शब्दों में, "विकास अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है, इसके बजाय इसमें प्रौढ़ावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है। विकास के परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन विशेषताएँ और नवीन योग्यताएँ प्रकट होती हैं।" हरलॉक की इस परिभाषा से तीन बातें स्पष्ट होती हैं–

1. विकास परिवर्तन की ओर संकेत करता है।
2. विकास में एक निश्चित क्रम होता है।
3. विकास की एक निश्चित दिशा एवं लक्ष्य होता है।

26. मानव व्यवहार को स्पष्ट करने के लिए आवश्यकताओं का उत्तरोत्तर क्रम प्रस्तुत किया गया–

(A) फ्रायड द्वारा (B) मैस्लो द्वारा

(C) ऑलपोर्ट द्वारा (D) लेविन द्वारा

26. (B) मैस्लो के आवश्यकता के वर्गीकरण के अनुसार मनुष्य की शारीरिक, सुरक्षा सम्बन्धी, सामाजिक आवश्यकता, प्रतिष्ठा रक्षक, आत्म संतुष्टि सम्बन्धी आवश्यताओं के आधार पर अभिप्रेरण के मुख्य रूप से तीन प्रकार बताये गये हैं–

1. धनात्मक एवं ऋणात्मक अभिप्रेरण
2. बाह्य एवं आंतरिक अभिप्रेरणा–
3. मौद्रिक एवं अमौद्रिक अभिप्रेरणा

मैस्लो का आवश्यकता का उत्तरोत्तर क्रम इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है–

आत्मानुभूति माँग
सम्मान माँग
सामाजिक माँग
सुरक्षा माँग
शरीरिक माँग।

27. किस विचारधारा के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् होना चाहिए ?

(A) आदर्शवादी (B) मानववादी

(C) प्रकृतिवादी (D) यथार्थवादी

27. (A) आदर्शवादी विचारधारा में आत्मानुभूति अथवा ईश्वर प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक मूल्य सत्यं, शिवम् और सुन्दरम् की प्राप्ति आवश्यक होती है। जो सत्य है वही शिव है और जो शिव है वही सुन्दर है।

आदर्शवाद अंग्रेजी के आइडियलिज्म का शाब्दिक अर्थ है। यह दर्शन की एक शाखा के लिए प्रयुक्त होता है। इस दर्शन में उच्च आदर्शों की बात की जाती है। इस दर्शन से सम्बन्धित दार्शनिक विचार की चिन्तन सत्ता में विश्वास करते हैं, अतः मूलतः यह दर्शन ''विचारवादी दर्शन अथवा आइडियलिज्म'' है। हिन्दी में उसका शब्दतः अनुवाद उभर आया। यद्यपि ''विचारवाद'' शब्द का प्रयोग करना उपयुक्त होता, परन्तु शब्द की रूढ़ प्रकृति को ध्यान में रखकर यहाँ आदर्शवाद शब्द का प्रयोग किया जा रहा है।

28. विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा एक प्रक्रिया है–

(A) बालक के सामाजीकरण की

(B) सभी शक्तियों के सामंजस्य–पूर्ण विकास की

(C) बालक में सर्वोत्तम को बाहर लाने की

(D) बालक में विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति की

28. (D) विवेकानन्द के अनुसार, ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है।''

स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त निम्नलिखित हैं–

1. शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास हो सके।
2. शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक के चरित्र का निर्माण हो, मन का विकास हो, बुद्धि विकसित हो तथा बालक आत्मनिर्भर बने।
3. बालक एवं बालिकाओं दोनों को समान शिक्षा देनी चाहिए।
4. धार्मिक शिक्षा, पुस्तकों द्वारा न देकर आचरण एवं संस्कारों द्वारा देनी चाहिए।
5. पाठ्यक्रम में लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के विषयों को स्थान देना चाहिए।
6. शिक्षा, गुरुगृह में प्राप्त की जा सकती है।
7. शिक्षक एवं छात्र का सम्बन्ध अधिक से अधिक निकट का होना चाहिए।
8. सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार किया जाना चाहिये।
9. देश की आर्थिक प्रगति के लिए तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था की जाए।
10. मानवीय एवं राष्ट्रीय शिक्षा परिवार से ही शुरू करनी चाहिए।

29. भारतीय शिक्षा के इतिहास में सर्वप्रथम किस समिति ने 'अपव्यय एवं अवरोधन' पर विचार किया ?

(A) जाकिर हुसैन समिति

(B) राममूर्ति समिति

(C) हर्टांग समिति

(D) हंसा मेहता समिति

29. (C) भारतीय शिक्षा पद्धति की जाँच हेतु सरकार ने सर फिलिप हर्टांग की अध्यक्षता में 1929 में समिति का गठन किया। इन्होंने माध्यमिक शिक्षा में बच्चों के अधिक अनुत्तीर्ण होने के फलस्वरूप अत्यधिक व्यय को देखते हुए व्यावसायिक विषयों को स्थान देने का सुझाव दिया।

30. यदि कोई शिक्षक किसी छात्र की प्रत्येक चौथी अनुक्रिया पर पुनर्बलन देता है तो वह निम्नलिखित प्रकार का पुनर्बलन दे रहा है–

(A) निश्चित अनुपात रूप

(B) निश्चित अन्तराल रूप

(C) परिवर्तनशील अनुपात

(D) परिवर्तनशील अन्तराल रूप

30. (A) पुनर्बलन सीखने के सिद्धान्त से सम्बन्धित है। यह चार प्रकार का होता है–

1. निश्चित अनुपात रूप, 2. निश्चित अन्तराल रूप, 3. परिवर्तनशील अनुपात, 4. परिवर्तनशील अन्तराल रूप।

छात्र की प्रत्येक चौथी अनुक्रिया पर पुनर्बलन निश्चित अनुपात रूप पुनर्बलन को दर्शाता है।

31. भारत जैसे एक धर्मनिरपेक्ष जनतांत्रिक समाज में शिक्षा में धर्म का स्थान होना चाहिए–

(A) शिक्षा में कोई स्थान नहीं

(B) अनिवार्य विषय के रूप में

(C) अपने धर्म के अध्ययन की स्वतंत्रता

(D) सभी धर्मों की शिक्षा

31. (D) अनुच्छेद 25 अन्तःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मान्य आचरण और प्रचार करने की स्वतन्त्रता।

32. एक घड़ी प्रतिघण्टा दो मिनट सुस्त हो जाती है। इससे क्या प्रदर्शित होता है ?

(A) घड़ी वैध नहीं है।

(B) घड़ी विश्वसनीय है।

(C) घड़ी विश्वसनीय है पर वैध नहीं है

(D) घड़ी वैध है पर विश्वसनीय नहीं है

32. (D) प्रत्येक वैध परीक्षण विश्वसनीय होता है, परन्तु विश्वसनीय परीक्षण वैध भी हो, यह आवश्यक नहीं है।

33. प्राथमिक शिक्षा का सम्पूर्ण दायित्व स्थानीय संस्थाओं के हाथों में सौंप देने का सुझाव दिया गया था–

(A) लॉर्ड मैकाले द्वारा

(B) लॉर्ड रिपन द्वारा

(C) लॉर्ड कर्जन द्वारा

(D) हण्टर आयोग द्वारा

33. (B) हन्टर शिक्षा आयोग की स्थापना ब्रिटिश शासनकाल में लॉर्ड रिपन (1880–1884 ई.) द्वारा 1882 ई. में की गई थी। चार्ल्स वुड के घोषणा पत्र द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में हुई प्रगति की समीक्षा के लिए सरकार ने विलियम विलसन हन्टर की अध्यक्षता में इस आयोग की नियुक्ति की थी। इस आयोग में आठ भारतीय सदस्य भी थे। 'हन्टर शिक्षा आयोग' को प्राथमिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा की समीक्षा तक ही सीमित कर दिया गया था।

आयोग के सुझाव

'हन्टर शिक्षा आयोग' ने जो महत्वपूर्ण सुझाव दिए, वे निम्नलिखित थे–

1. हाईस्कूल स्तर पर दो प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था हो, जिसमें एक व्यावसायिक एवं व्यापारिक शिक्षा दिये जाने पर बल दिया जाये तथा दूसरी ऐसी साहित्यिक शिक्षा दी जाये, जिससे विश्वविद्यालय में प्रवेश हेतु सहायता मिले।
2. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के महत्व पर बल एवं स्थानीय भाषा तथा उपयोगी विषय में शिक्षा देने की व्यवस्था की जाये।
3. शिक्षा के क्षेत्र में निजी प्रयासों का स्वागत हो, लेकिन प्राथमिक शिक्षा उसके बगैर भी दी जाये।
4. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का नियंत्रण जिला व नगर बोर्डों को सौंप दिया जाये।

34. कौन–सी परिस्थिति सीखने की प्रक्रिया को सफलता के लिए सबसे अनिवार्य है ?

(A) सीखते समय अवधान

(B) सीखे हुए कार्य का अभ्यास

(C) सीखने वाले का उच्च बौद्धिक स्तर

(D) सीखने वाले का अभिप्रेरणा स्तर

34. (D) सीखने की प्रक्रिया तब ही सरल, शीघ्र तथा स्थायी होती है, जब व्यक्ति सीखने का इच्छुक (अभिप्रेरित) होता है। सीखना एक निरंतर चलने वाली सार्वभौमिक प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म से सीखना प्रारंभ कर देता है तथा जीवन-पर्यंत कुछ न कुछ सीखता रहता है। परिस्थिति तथा आवश्यकता के अनुरूप सीखने की गति घटती-बढ़ती रहती है। सीखने के लिए कोई स्थान विशेष निश्चित नहीं होता व्यक्ति कहीं भी, किसी भी समय, किसी से भी, कुछ भी सीख सकता है। मनोवैज्ञानिक भाषा में सीखने को अधिगम कहते हैं।

35. बेसिक शिक्षा की मुख्य विशेषता है–

(A) नैतिक शिक्षा प्रदान करना

(B) अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना

(C) स्वावलंब की भावना विकसित करना

(D) निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना

35. (C) वर्धा शिक्षा योजना का सूत्रपात राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा 1937 ई. में 'वर्धा' नामक स्थान पर हुआ था। गाँधीजी ने वर्धा में अपने हरिजन के अंकों में शिक्षा पर योजना प्रस्तुत की, इसे ही 'वर्धा योजना' कहा गया। इसमें शिक्षा के माध्यम से हस्त उत्पादन कार्यों को महत्व दिया गया। इसमें बालक अपनी मातृभाषा के द्वारा 7 वर्ष तक अध्ययन करता था। अतः बेसिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों में स्वावलम्बन की भावना विकसित करना था।

36. शिक्षा को भारतीय संविधान की समवर्ती सूची में सम्मिलित किया गया–

(A) 1950 में

(B) 1965 में

(C) 1972 में

(D) 1976 में

36. (D) भारतीय संविधान में शिक्षा को समवर्ती सूची में सन् 1976 में लाया गया। इसका अर्थ यह है कि केन्द्र व राज्य दोनों का दायित्व अपने नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण व उचित शिक्षा की व्यवस्था करना।

37. परम्पराओं, में परिवर्तन कहलाता है–

(A) भौतिक परिवर्तन

(B) अभौतिक परिवर्तन

(C) सामाजिक गतिशीलता

(D) क्षैतिज परिवर्तन

37. (B) भौतिक परिवर्तन के अन्तर्गत, जो परिवर्तन हमें दिखायी देते हैं, जो परिवर्तन हमें दिखायी नहीं देते, अर्थात् अदृश्य रूप में होते हैं, अभौतिक परिवर्तन कहलाते हैं; जैसे–धर्म, परम्पराओं एवं मान्यताओं में परिवर्तन।

38. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना का वर्ष है–

(A) 1950

(B) 1952

(C) 1953

(D) 1954

38. (C) 28 दिसंबर, 1953 को तत्कालीन शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने औपचारिक तौर पर यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन की नींव रखी थी।

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग विश्व-विद्यालयी शिक्षा के मापदंडों के समन्वय, निर्धारण और अनुरक्षण हेतु वर्ष 1956 में संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित एक स्वायत्त संगठन है।
- पात्र विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को अनुदान प्रदान करने के अतिरिक्त, आयोग केन्द्र और राज्य सरकारों को उच्चतर शिक्षा के विकास हेतु आवश्यक उपायों पर सुझाव भी देता है।
- इसका मुख्यालय देश की राजधानी नई दिल्ली में अवस्थित है। इसके छः क्षेत्रीय कार्यालय पुणे, भोपाल, कोलकाता, हैदराबाद, गुवाहाटी एवं बंगलुरू में हैं।

39. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में अल्पसंख्यकों को अपनी शैक्षिक संस्थायें स्थापित करने, संचालित करने का अधिकार दिया गया है ?

(A) 26वें

(B) 30वें

(C) 31वें

(D) 21वें

39. (B) भारत के संविधान में अल्पसंख्यकों को मूल अधिकारों के तहत अनुच्छेद 25 से 30 के अंतर्गत विशेष रक्षोपाय प्रदान किये गए हैं। अनुच्छेद 29, जहाँ विशिष्ट भाषा, लिपि या संस्कृति के सम्बन्ध में है, वहीं अनुच्छेद 30 शैक्षिक संस्थानों की स्थापना में राज्य की तरफ से सहायता अनुदान प्राप्त करने की बात करता है।

40. निम्नलिखित में से शिक्षा आयोग (1964-66) द्वारा क्या प्रस्तावित नहीं किया गया था ?

(A) उत्पादन हेतु शिक्षा

(B) शिक्षा का निजीकरण

(C) सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता हेतु शिक्षा

(D) शिक्षा और प्रजातांत्रिक मूल्य

40. (B) शिक्षा आयोग (1964-66) द्वारा शिक्षा का निजीकरण प्रस्तावित नहीं था।

41. शिक्षा की दृष्टि से बालक की आवश्यकता क्या है ?

(A) मनोवैज्ञानिक व्यवहार की आवश्यकता

(B) मानवीय व्यवहार की आवश्यकता

(C) समान व्यवहार की आवश्यकता

(D) सहशिक्षा की आवश्यकता

41. (A) शिक्षा का सम्बन्ध सीखने से है और सीखना व्यवहार में आये स्थायी परिवर्तन से होता है। (Learning is a behaviour Modification)

42. उत्सुकतापूर्ण व्यवहार में सम्बन्धित संवेग है–

(A) उल्लास

(B) अचरज

(C) डर

(D) आनन्द

42. (B) मैक्डूगल ने मनुष्य के 14 संवेग बताए हैं जिनमें उत्सुकतापूर्ण व्यवहार भी है जोकि आचरण से सम्बन्धित है।

मैक्डूगल के 14 संवेग और मूल प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं–

क्रम सं	संवेग	मूल प्रवृत्तियाँ
1.	भय	पलायन
2.	क्रोध	युयुत्सा
3.	घृणा	निवृत्ति
4.	आश्चर्य	जिज्ञासा
5.	वात्सल्य	शिशु रक्षा
6.	विषाद	शरणागति
7.	संरचनात्मक भावना	रचनात्मक
8.	स्वामित्व की भावना	संचय प्रवृत्ति
9.	एकाकीपन	सामूहिकता
10.	कामुकता	काम (sex)
11.	श्रेष्ठता की भावना	आत्मगौरव
12.	आत्महीनता	दैन्य
13.	भूख	भोजन अन्वेषण
14.	आमोद	ह्रास

43. प्रयोजनवादी विद्यालय को इस रूप में देखते हैं–

(A) मानव निर्माण संस्था

(B) बच्चों का बगीचा

(C) शान्ति का स्थान

(D) समाज का लघुरूप

43. (D) जॉन डी.वी. के अनुसार, 'विद्यालय समाज का लघुरूप है, अतः उसे कृत्रिमता से दूर रखना चाहिए और वहीं बच्चों को अपने जीवन से सम्बन्धित समस्याओं को हल करने के अवसर प्रदान करने चाहिए। शिक्षा की दृष्टि से डी.वी. के करणवाद का बड़ा महत्व है। इसने शिक्षा में क्रांति दी। यह व्यवहारवाद करणवाद के रूप में इसीलिए प्रसिद्ध हुआ, क्योंकि इनके मतानुसार मस्तिष्क ज्ञान उपकरण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। वे अपने आप में साध्य नहीं हैं। उनके मतानुसार मस्तिष्क तथा बुद्धि का विकास प्राकृतिक ढंग से हुआ। जीवन के विविध सामाजिक परिस्थितियों का सामना करने के लिए मनुष्य को जो प्रक्रियायें करनी पड़ीं उनके उप–उत्पाद्य के रूप से इसका विकास हुआ। डी.वी. के अनुसार ज्ञान मस्तिष्क के परे नहीं है, विचार मस्तिष्क की क्रिया मात्र है। डी. वी. का दूसरा प्रमुख विचार प्रयोगवाद का है। डी.वी. ने प्रयोगात्मक विक्रिया को जो वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रयुक्त होती है, मानवीय सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए उपयुक्त समझा। डी.वी. के अनुसार हमारी चिन्तन प्रक्रिया में वे सभी चरण होते हैं जो वैज्ञानिक प्रयोगशाला में प्रयुक्त होते हैं। यदि हमें अपने अनुभवों का लाभ प्रभावी ढंग से लेना है, तो प्रयोगात्मक विधि से करें। डी.वी. के अनुसार शिक्षा अनुभवों की पुनर्रचना मानी जाती है। इसी आधार पर उनके दर्शन को पुनर्रचनावाद भी कहा जाता है।

44. मूल्यांकन की तुलना में मापन है–

(A) अधिक व्यापक (B) अधिक शुद्ध

(C) अधिक प्रयोज्य (D) कम विश्वसनीय

44. (D) मापन के अन्तर्गत किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के गुणों अथवा विशेषताओं का वर्णन मात्र ही किया जाता है, जबकि मूल्यांकन के अन्तर्गत उस व्यक्ति अथवा वस्तु के गुणों अथवा विशेषताओं की वांछनीयता पर दृष्टिपात किया जाता है।

45. शिक्षा को एक निवेश कहा जाता है, क्योंकि–

(A) शिक्षित व्यक्तियों को अधिक वेतन मिलता है।

(B) शिक्षा कार्मिकों की उत्पादन क्षमता बढ़ा देती है

(C) शिक्षित व्यक्ति विदेश जा सकते हैं।

(D) शिक्षित व्यक्ति अधिक पूँजी निवेश कर सकते हैं।

45. (B) शिक्षा को एक निवेश कहा जाता है, क्योंकि शिक्षा कार्मिकों की उत्पादन क्षमता बढ़ा देती है।

46. आज के वैश्वीकरण के युग में शिक्षा को महत्व देना चाहिये–

(A) व्यक्तिगत एकीकरण पर

(B) भावात्मक एकीकरण पर

(C) राष्ट्रीय एकीकरण पर

(D) अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण पर

46. (D) वैश्वीकरण के युग में शिक्षा को महत्व देना ही अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण है। "वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण राष्ट्रीय सीमाओं के आर–पार बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के फैलाव की सक्रिय प्रक्रिया भी है तथा साथ ही आर्थिक सम्बन्धों की एक संरचना भी है जिसका निरन्तर विकास हो रहा है।" "अपने व्यापक अर्थ में वैश्वीकरण केवल शुद्ध आर्थिक प्रक्रिया नहीं है, अपितु यह तो विश्व के सभी भागों में रहने वाले लोगों के मध्य सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक सम्बन्धों के विकास की व्यापक प्रक्रिया है।"

47. सामाजिक परिवर्तन का द्योतक क्या है ?

(A) उद्विकास (B) पर्यावरण

(C) समुदाय (D) प्रथा

47. (A) उद्विकास सामाजिक परिवर्तन का द्योतक है। 'उद्विकास' शब्द का प्रयोग सबसे पहले जीव–विज्ञान के क्षेत्र में चार्ल्स डार्विन (Charles Darwin) ने किया था। डार्विन के अनुसार उद्विकास की प्रक्रिया

में जीव की संरचना सरलता से जटिलता (Simple to Complex) की ओर बढ़ती है। यह प्रक्रिया प्राकृतिक चयन (Natural Selection) के सिद्धान्त पर आधारित है। आरंभिक समाजशास्त्री हरबर्ट स्पेन्सार ने जैविक परिवर्तन (Biological Changes) की भाँति ही सामाजिक परिवर्तन को भी कुछ आन्तरिक शक्तियों (Internal Forces) के कारण संभव माना है और कहा है कि उद्विकास की प्रक्रिया धीरे–धीरे निश्चित स्तरों से गुजरती हुई पूरी होती है।

48. चिंतन में प्रयुक्त भाषा संकेत कहलाते हैं–

(A) श्रेणियाँ (B) प्रत्यय

(C) वाक्य (D) प्रतिमायें

48. (B) चिंतन की प्रक्रिया में संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, प्रत्यय निर्माण पूर्व अधिगम, स्मृति आदि का समावेश होता है।

चिंतन शब्द का प्रयोग उस क्रिया के लिए किया जाता है, जिसमें शृंखलाबद्ध विचार किसी लक्ष्य या उद्देश्य की ओर अविराम गति से प्रवाहित होते हैं।

चिंतन के मुख्य रूप से 4 प्रकार हैं–

1. प्रत्यक्षात्मक चिंतन
2. प्रत्ययात्मक चिंतन
3. कल्पनात्मक चिंतन
4. तार्किक चिंतन

49. गिलफोर्ड के 'बुद्धि संरचना' मॉडल के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन बुद्धि की एक विमा नहीं है ?

(A) विषय वस्तु (B) तंत्र

(C) संक्रियायें (D) उत्पाद

49. (B) गिलफोर्ड (1959, 1961, 1967) तथा उसके सहयोगियों ने तीन मानसिक योग्यताओं के आधार पर बुद्धि संरचना की व्याख्या प्रस्तुत की। गिलफोर्ड का यह बुद्धि संरचना सिद्धान्त त्रि–पक्षीय बौद्धिक मॉडल कहलाता है। उन्होंने बुद्धि कारकों को तीन श्रेणियों में बाँटा है, अर्थात् मानसिक योग्यताओं को तीन विमाओं में बाँटा है। ये हैं–संक्रिया, विषय–वस्तु तथा उत्पादन। कारक विश्लेषण के द्वारा बुद्धि की ये तीनों विमाएँ पर्याप्त रूप से भिन्न हैं। इन विमाओं में मानसिक योग्यताओं के जो–जो कारक आते हैं, वे इस प्रकार हैं–

1. **विषय वस्तु**–इस विमा में बुद्धि के जो विशेष कारक हैं वे विषय-वस्तु के होते हैं। जैसे–आकृतिक, सांकेतिक, शाब्दिक तथा व्यावहारिक। आकृतिक विषय-वस्तु को दृष्टि द्वारा ही देखा जा सकता है तथा ये आकार और रंग–रूप के द्वारा निर्मित होती हैं। सांकेतिक विषय–वस्तु में संकेत, अंक तथा शब्द होते हैं जो विशेष पद्धति के रूप में व्यवस्थित होते हैं। शाब्दिक विषय–वस्तु में शब्दों का अर्थ या विचार होते हैं। व्यावहारिक विषय-वस्तु में व्यवहार सम्बन्धी विषय निहित होते हैं।
2. **उत्पादन**–ये छः प्रकार के माने गए हैं–(1) इकाइयाँ (2) वर्ग (3) सम्बन्ध, (4) पद्धतियाँ (5) स्थानान्तरण तथा (6) अपादान।
3. **संक्रिया**–इस विमा में मानसिक योग्यताओं के पाँच मुख्य समूह माने हैं–1. संज्ञान 2. मूल्यांकन 3. अभिसारी चिंतन 4. अपसारी चिंतन।

50. शिक्षा की 10+2+3 संरचना अपनाने का सुझाव सर्वप्रथम दिया गया–

(A) कोठारी आयोग द्वारा

(B) मुदालियर आयोग द्वारा

(C) राधाकृष्णन आयोग द्वारा

(D) राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 द्वारा

50. (A) कोठारी आयोग की नियुक्ति जुलाई, 1964 ई. में डॉक्टर डी.एस. कोठारी की अध्यक्षता में की गई थी। इस आयोग में सरकार को शिक्षा के सभी पक्षों तथा प्रक्रमों के विषय में राष्ट्रीय नमूने की रूपरेखा, साधारण सिद्धान्त तथा नीतियों की रूपरेखा बनाने का सुझाव दिया गया।

प्रमुख सुझाव

कोठारी आयोग भारत का ऐसा पहला शिक्षा आयोग था, जिसने अपनी रिपार्ट में सामाजिक बदलावों के मद्देनजर कुछ ठोस सुझाव दिए। आयोग के अनुसार समान स्कूल के नियम पर ही एक ऐसी राष्ट्रीय व्यवस्था तैयार हो सकती है, जहाँ सभी वर्ग के बच्चे एक साथ पढ़ेंगे। अगर ऐसा नहीं हुआ तो समाज के उच्च वर्गों के लोग सरकारी स्कूल से भागकर प्राइवेट स्कूलों का रुख करेंगे और पूरी प्रणाली ही छिन्न–भिन्न हो जाएगी। आयोग ने जो सुझाव दिए, वे निम्नलिखित थे–

1. शिक्षा के अनिवार्य अंग के रूप में समाज सेवा और कार्य अनुभव, जिसमें हाथ से काम करने तथा उत्पादन अनुभव सम्मिलित हों, आरम्भ किए जाएँ।
2. माध्यमिक शिक्षा को व्यावसायिक बनाने पर बल दिया गया।
3. शिक्षा के पुनर्निर्माण में कृषि, कृषि में अनुसंधान तथा इससे सम्बन्धित विज्ञानों को उच्च प्राथमिकता दी जाए।
4. विश्वविद्यालयों में एक छोटी–सी संस्था ऐसी बनायी जाए, जो उच्चतम अन्तर्राष्ट्रीय मानकों को प्राप्त करने का उद्देश्य रखती हो।

51. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक प्रेरक है ?

(A) भूख

(B) प्यास

(C) आत्मगौरव

(D) प्रेम

51. (C) सामाजिक अभिप्रेरक सामाजिक मान्यताओं, सम्बन्धों, परिस्थितियों, आदर्शों आदि के कारण उत्पन्न होते हैं; जैसे–प्रतिष्ठा, सुरक्षा, आत्मगौरव संग्रह आदि।

52. निम्नलिखित में से कौन बुद्धि के थर्स्टन के सिद्धान्त में एक प्राथमिक मानसिक योग्यता नहीं है ?

(A) सांख्यिक योग्यता

(B) शाब्दिक योग्यता

(C) स्थानगत योग्यता

(D) यांत्रिक योग्यता

52. (D) थर्स्टन के समूह कारक सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि न तो सामान्य कारकों का प्रदर्शन है न ही विभिन्न विशिष्ट कारकों का, अपितु इसमें कुछ ऐसी निश्चित मानसिक क्रियाएँ होती हैं जो सामान्य रूप से मूल कारकों में सम्मिलित होती हैं। ये मानसिक क्रियाएँ समूह का निर्माण करती हैं जो मनोवैज्ञानिक एवं क्रियात्मक एकता प्रदान करते हैं।

थर्स्टन ने यह स्पष्ट किया कि बुद्धि कई प्रकार की योग्यताओं का मिश्रण है जो विभिन्न समूहों में पाई जाती है। उनके अनुसार मानसिक योग्यताएँ क्रियात्मक रूप से स्वतंत्र हैं फिर भी जब ये समूह में कार्य करती हैं तो उनमें परस्पर सम्बन्ध या समानता पाई जाती है। कुछ विशिष्ट योग्यताएँ एक ही समूह की होती हैं और उनमें आपस में सह–सम्बन्ध पाया जाता है। जैसे– विज्ञान विषयों के समूह में भौतिक, रसायन, गणित तथा जीव–विज्ञान भौतिकी एवं रसायन आदि। इसी प्रकार संगीत कला को प्रदर्शित करने के लिए तबला, हारमोनियम, सितार आदि बजाने में परस्पर सह–सम्बन्ध रहता है। बुद्धि की अनेक प्रकार की योग्यताओं के मिश्रण को प्रस्तुत किया है। इन योग्यताओं का संकेतीकरण इस प्रकार है–

1. आंकिक योग्यता

2. वाचिक योग्यता
3. स्थान सम्बन्धी योग्यता
4. स्मरण शक्ति योग्यता
5. शब्द प्रवाह योग्यता
6. तर्क शक्ति योग्यता

53. सामाजिक परिवर्तन का कारण नहीं हो सकता–
(A) प्राकृतिक विपदा
(B) मनोवैज्ञानिक तनाव
(C) सांस्कृतिक जड़त्व
(D) सांस्कृतिक संश्लेषण

53. (C) सांस्कृतिक जड़त्व, सांस्कृतिक पिछड़ेपन को प्रदर्शित करता है अतः सामाजिक परिवर्तन का कारण नहीं है।
सामाजिक परिवर्तन के मुख्य कारण– आविष्कार, आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण भूमण्डलीकरण व आन्तरिक विभेदीकरण हैं।

54. शिक्षा में 'अवरोधन' का अर्थ है –
(A) उपयुक्त विद्यालयों की कमी
(B) प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी
(C) छात्रों द्वारा निर्धारित समय में पाठ्यक्रम पूरा करने में असफलता
(D) विद्यालयों में उपयुक्त साज-सज्जा का अभाव

54. (C) अवरोधन का अर्थ–छात्रों द्वारा निर्धारित समय में पाठ्यक्रम पूरा करने में असफलता।

55. 3R के शिक्षण में कौन सम्मिलित नहीं है ?
(A) लिखना (B) पढ़ना
(C) गणित (D) दोहराना

55. (D) 3R गाँधीजी के बेसिक शिक्षा का आधार था, जिसमें (1) पढ़ना, (2) लिखना, (3) गणित सम्मिलित था।

56. प्राप्तांकों के एक समूह का मध्यमान 'M' तथा मानक विचलन 'S' है। यदि प्रत्येक प्राप्तांक का तीन गुना कर दें तो नया मध्यमान और मानक विचलन होगा–
(A) M तथा S (B) M तथा 3S
(C) 3M तथा 3S (D) 3M तथा S

56. (C) प्राप्तांकों को तीन गुना करने पर मध्यमान तीन गुना हो जायेगा। अतः विकल्प (C) सही उत्तर है।

57. प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण की लक्ष्य प्राप्ति में मुख्य समस्या है–
(A) शिक्षा के समान अवसरों का अभाव
(B) निर्धनता
(C) शिक्षा के प्रति रुचि का अभाव
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

57. (C) प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने का प्रयास सर्वप्रथम 1910 में गोपाल कृष्ण गोखले ने किया था। शिक्षा के प्रति रुचि के अभाव के कारण प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण की समस्या होती है।

58. एक व्यक्ति के सामाजिक स्तर में परिवर्तन कहलाता है–
(A) सामाजिक गतिशीलता
(B) सामाजिक परिवर्तन
(C) प्रव्रजन
(D) सांस्कृतिक परिवर्तन

58. (A) किसी व्यक्ति के सामाजिक स्तर में परिवर्तन सामाजिक गतिशीलता कहलाता है। सोरोकिन महोदय ने सामाजिक गतिशीलता के दो प्रकार बताए हैं–
(1) क्षैतिज सामाजिक गतिशीलता– जिसमें व्यक्ति का समान स्तर वाले सामाजिक समूह से स्थानान्तरण होता है।
(2) लम्बवत् सामाजिक गतिशीलता जिसमें व्यक्ति या सामाजिक वस्तु का स्थानान्तरण एक समान स्तर से भिन्न सामाजिक स्तर का होता है।

59. एक निबन्धात्मक परीक्षण में निम्नलिखित में से किसकी जाँच न्यूनतम होती है ?
(A) भाषा क्षमता
(B) विषय-वस्तु संगठन
(C) मौलिकता
(D) तथ्यात्मक सूचना

59. (D) निबन्धात्मक परीक्षणों से तथ्यात्मक सूचना मिलना मुश्किल होता है।
निबन्धात्मक परीक्षणों के निम्नलिखित गुण हैं–
1. इन परीक्षणों का आयोजन सरलता–पूर्वक किया जा सकता है।
2. इन परीक्षाओं के प्रश्नों को सुगमता से तैयार किया जा सकता है।
3. यह विधि समस्त विषयों के लिए उपयोगी है।
4. इसमें बालक को पूर्ण अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता रहती है।
5. यह प्रणाली बालक के लिए भी सुगम होती है, क्योंकि प्रश्न–पत्र समझने में उन्हें विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं पड़ती।
6. छात्रों के तर्क, विचार संगठन तथा चिंतन शक्ति का ज्ञान कराने में ये परीक्षाएँ सहायक होती हैं।
7. यह प्रणाली छात्रों को परिश्रम करने के लिए प्रेरित करती है।
8. यह प्रणाली बालकों के अर्जित ज्ञान का वास्तविक मूल्यांकन करती है।

60. यथार्थवाद तथा आदर्शवाद के समन्वय वाली शिक्षा व्यवस्था है–
(A) महात्मा गाँधी की
(B) श्री अरविन्द की
(C) रबीन्द्र नाथ टैगोर की
(D) स्वामी विवेकानन्द की

60. (A) यथार्थवाद तथा आदर्शवाद के समन्वय वाली शिक्षा की व्यवस्था गाँधीजी ने की। गाँधीजी ने अपनी शैक्षिक विचारधारा उस समय प्रस्तुत की थी जब भारत में ब्रिटिश–शासन था तथा ब्रिटिश शासन के कुछ निहित उद्देश्यों के लिए ही शिक्षा–व्यवस्था की गयी थी। आज देश की परिस्थितियाँ काफी बदल गयी हैं। इस स्थिति में गाँधीजी की शैक्षिक विचारधारा कुछ क्षेत्रों में तो आज भी महत्त्वपूर्ण मानी जाती है, जबकि कुछ पक्षों का अब कोई व्यावहारिक महत्त्व नहीं है। सर्वप्रथम अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की धारणा आज भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। इसी प्रकार स्त्री–शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा को प्रोत्साहन देने की बात भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण मानी जा रही है।
गाँधीजी के आत्मानुशासन की धारणा भी हर किसी को मान्य है। शिक्षा के माध्यम से बालक के सर्वांगीण विकास की मान्यता भी उचित है। इससे मित्र गाँधीजी द्वारा हस्तकलाओं को दी जाने वाली अतिरिक्त मान्यता आज भी परिस्थितियों में प्रासंगिक नहीं मानी जाती। बेसिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के खर्च के लिए बालकों द्वारा निर्मित वस्तुओं की बिक्री की बात
कही गयी थी। यह अव्यावहारिक तथा अप्रासंगिक है। इसी प्रकार आज विज्ञान की शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है, जबकि गाँधीजी की विचारधारा में यह मान्यता नहीं थी। इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्तमान शिक्षा–व्यवस्था में गाँधीजी की शैक्षिक विचारधारा एक सीमित रूप में ही प्रासंगिक है।

61. यशपाल कमेटी के अनुसार प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षक–छात्र अनुपात होना चाहिए–
(A) 1 : 20 (B) 1 : 30
(C) 1 : 40 (D) 1 : 50

61. (C) प्रो. यशपाल की अध्यक्षता में एक समिति का गठन मार्च 1992 में किया गया, जिसे यशपाल समिति कहा गया, इनके अनुसार प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक छात्र का अनुपात 1 : 40 रखा गया।

62. कौन-सी एक अच्छे प्रश्न की विशेषता नहीं है ?
(A) संक्षिप्त एवं प्रत्यक्ष
(B) लम्बे एवं अप्रत्यक्ष
(C) सरल एवं स्पष्ट भाषा
(D) केवल एक सही उत्तर

62. (B) एक अच्छे प्रश्न की विशेषताएँ निम्न होती हैं–
संक्षिप्त स्पष्ट भाषा, सरल, प्रत्यक्ष या पारदर्शिता आदि।

63. स्वतंत्र भारत में शिक्षा के इतिहास में जो प्रथम आयोग गठित हुआ, वह सम्बन्धित था–
(A) प्राथमिक शिक्षा से
(B) माध्यमिक शिक्षा से
(C) विश्वविद्यालयी शिक्षा से
(D) तकनीकी शिक्षा से

63. (C) राधाकृष्णन आयोग 1948-49 में गठित किया गया था, जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी कहा जाता है।

64. यदि बुद्धि प्ररीक्षण की विषय-वस्तु अभिवृत्तियों तथा मूल्यों से सम्बन्धित है, तो वह परीक्षण–
(A) विश्वसनीय नहीं है
(B) वैध नहीं है
(C) विषयनिष्ठ नहीं है
(D) व्यापक नहीं है

64. (B) परीक्षण वैधता का परीक्षण के उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। एक अवैध परीक्षण कभी भी निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति नहीं करता। कोई परीक्षण जितनी शुद्धता और सार्थकता से अपने उद्देश्यों का मापन करता है, वह परीक्षण उतना ही वैध होता है। अतः किसी परीक्षण की वैधता उसकी वह मात्रा है जिस सीमा तक वह उस वस्तु का मापन करता है जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है। कोई भी परीक्षण शत–प्रतिशत उद्देश्यों को पूरा नहीं करता अर्थात् वह उस वस्तु का पूर्णरूपेण मापन नहीं कर पाता, जिसके लिए उसका विकास किया जाता है। इस प्रकार यदि कोई परीक्षण उच्च मात्रा में वही मापता है जिसे मापने के लिए उसका निर्माण किया गया है तो उसे वैध परीक्षण कहेंगे।
कोई भी परीक्षण वैध तब कहलाता है जब वह उन उद्देश्य की पूर्ति करता है जिनके लिए वह बनाया गया है। यदि बुद्धि परीक्षण के विषय-वस्तु अभिवृत्ति व मूल्यों से सम्बन्धित है तो वह वैध नहीं कहलायेगा, क्योंकि बुद्धि परीक्षण का उद्देश्य बुद्धि मापन है।

65. फ्रायड के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सी विकास की तीसरी अवस्था है ?
(A) मुख अवस्था
(B) गुदा अवस्था
(C) शैशव अवस्था
(D) सुप्तावस्था

65. (C) फ्रायड ने अपने व्यक्तित्व के सिद्धान्त को विकास के **मनोलैंगिक** स्तरों के आधार पर संगठित किया। **मनोलैंगिक विकास** की पाँच अवस्थायें होती हैं–(1) मुखावस्था, (2) गुदा अवस्था, (3) लिंगावस्था/शैशवस्था, (4) जननिक अवस्था, (5) सुप्तावस्था।

66. निम्नलिखित में से कौन-सा आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का आदर्श है ?
(A) आत्मानुभूति
(B) जीवन निर्वाह
(C) नागरिकता
(D) सामाजिक सामंजस्य

66. (A) आदर्शवादियों के अनुसार, मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य आत्मा परमात्मा के चरम को जानना है, इसी को आत्मानुभूति, आदर्श व्यक्तित्व की प्राप्ति, आत्माभिव्यक्ति, ईश्वर की प्राप्ति, आध्यात्मिक पूर्णता की प्राप्ति अथवा परम आनन्द की प्राप्ति कहा जाता है। इस प्रकार आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का आदर्श आत्मानुभूति व आत्माभिव्यक्ति है।

67. प्रकृतिवाद किस प्रकार के अनुशासन का समर्थन करता है ?
(A) प्रभावात्मक
(B) दमनात्मक
(C) प्रभावात्मक एवं दमनात्मक दोनों
(D) मुक्त्यात्मक

67. (D) प्रकृतिवादी "मुक्त्यात्मक अनुशासन' का समर्थन करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रकृतिवादियों ने ''प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन के सिद्धांत'' का प्रतिपादन किया है।
इनके अनुसार, बालक पर किसी प्रकार का कृत्रिम दबाव या प्रभाव नहीं डालना चाहिए।

68. ''बालक एक ऐसी पुस्तक है जिसे शिक्षक को आधान्त पढ़ना पड़ता है।'' यह कथन किसका है ?
(A) अरस्तू
(B) रूसो
(C) जॉन डीवी
(D) टैगोर

68. (B) **रूसो** के अनुसार, ''बालक एक ऐसी पुस्तक है जिसे शिक्षक को अद्यान्त पढ़ना पड़ता है।''
रूसो बालक को ईश्वर की पवित्र कृति मानता है। प्रकृति–निर्माता के हाथों से जो भी वस्तु आती है वह पवित्र होती है, परन्तु मनुष्य के हाथों में आकर उसकी पवित्रता खत्म होने लगती है। रूसो बालक को जन्म से अच्छा और पवित्र मानता है और यह सुझाव देता है कि बालक के प्रकट गुणों को शिक्षा के द्वारा समाप्त न किया जाये। रूसो का यह स्पष्ट मत है कि बच्चे को बच्चा रहने दिया जाये– शिक्षा द्वारा कृत्रिम रूप से उसे अल्पावस्था में ही वयस्क बनाने का प्रयास न किया जाये। मानव–जीवन के क्रम में बचपन का एक स्थान है, निश्चय ही प्रौढ़ को प्रौढ़ और बच्चे को बच्चा मानकर व्यवहार करना चाहिए।
रूसो बालक पर किसी भी तरह के दबाव डाले जाने का विरोधी है। वह समाज की बुराइयों से बच्चे को बचाना चाहता है। वह उसे प्रसन्न देखना चाहता है।

69. कौन-सी साक्षात्कार विधि की एक कमजोरी/कमी नहीं है ?
(A) अत्यधिक खर्चीली विधि
(B) समय की अधिक खपत
(C) साक्षात्कारकर्ता के पक्षपातपूर्ण होने की संभावना
(D) प्रश्नों को पुनर्रक्षित करने का अवसर नहीं

69. (D) प्रश्नों को पुनर्रक्षित करने का अवसर न मिलना ही साक्षात्कार विधि का दोष होता है।

70. 'द्विखण्ड' बुद्धि सिद्धान्त विकसित किया है–
(A) थर्स्टन
(B) अल्फ्रेड बिने
(C) गिलफोर्ड
(D) स्पियरमैन

70. (D) 'द्विखण्ड' बुद्धि सिद्धान्त के प्रवर्तक ब्रिटेन के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्पियरमैन हैं। उन्होंने अपने प्रयोगात्मक अध्ययनों तथा अनुभवों के आधार पर बुद्धि के इस द्वि–तत्व सिद्धान्त का प्रतिपादन 1905 ई. में किया। उनके मतानुसार बुद्धि दो शक्तियों के रूप में है या बुद्धि की संरचना में दो कारक हैं जिनमें एक को उन्होंने सामान्य बुद्धि तथा दूसरे कारक को विशिष्ट बुद्धि कहा है। सामान्य कारक या G-factor से उनका तात्पर्य यह है कि सभी व्यक्तियों में कार्य करने की एक सामान्य योग्यता होती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति कुछ सीमा तक प्रत्येक कार्य कर सकता है। ये कार्य उसकी सामान्य बुद्धि के कारण ही होते हैं। सामान्य कारक व्यक्ति की सम्पूर्ण मानसिक एवं बौद्धिक क्रियाओं में पाया जाता है, परन्तु यह विभिन्न मात्राओं में होता है। बुद्धि का यह सामान्य कारक जन्मजात होता है तथा व्यक्तियों को सफलता की ओर इंगित करता है।

व्यक्ति की विशेष क्रियाएँ बुद्धि के एक विशेष कारक द्वारा होती हैं। यह कारक बुद्धि का विशिष्ट कारक कहलाता है। एक प्रकार की विशिष्ट क्रिया में बुद्धि का एक विशिष्ट कारक कार्य करता है तो दूसरी क्रिया में दूसरा विशिष्ट कारक। अतः भिन्न–भिन्न प्रकार की विशिष्ट क्रियाओं में भिन्न–भिन्न प्रकार के विशिष्ट कारकों की आवश्यकता होती है।

71. विचलनशीलता का सर्वोत्तम मापन है–

(A) प्रसार (B) माध्य विचलन

(C) मानक विचलन (D) चतुर्थांश विचलन

71. (C) विचलनशीलता का सर्वोत्तम मापन ''मानक विचलन'' है। इसे प्रामाणिक विचलन कहते हैं। यह विश्वसनीय एवं महत्वपूर्ण है।

मानक विचलन परिवर्तनशीलता या विविधता सांख्यिकी और प्रायिकता सिद्धान्त में इस्तेमाल का एक व्यापक रूप से इस्तेमाल किया उपाय है। इससे पता चलता है बहुत भिन्नता या ''फैलाव'' औसत (मतलब, या उम्मीद मूल्य) से है।

72. दो वर्ग–सीमाओं के मध्य का अंतर कहलाता है–

(A) वर्ग–अंतराल (B) वर्ग विशालता

(C) आवृत्ति (D) मध्य बिन्दु

72. (B) दो वर्ग–सीमाओं का अन्तर वर्ग विशालता कहलाता है।

73. निम्नलिखित में से कौन वस्तुनिष्ठ प्रश्न का उदाहरण नहीं है ?

(A) बहुविकल्पीय प्रश्न

(B) लघुउत्तरीय प्रश्न

(C) सुमेलित करने वाले प्रश्न

(D) वर्गीकरण प्रकार के प्रश्न

73. (B) वस्तुनिष्ठ प्रश्न चार प्रकार के होते हैं– (1) बहुविकल्पीय प्रश्न, (2) सुमेलित प्रश्न, (3) वर्गीकरण प्रश्न, (4) सत्य, असत्य प्रश्न, विषयनिष्ठ प्रश्न होते हैं।

74. प्राचीन भारत में गुरुकुल पद्धति में अपनायी जाने वाली शिक्षण विधियाँ थीं–

(1) श्रवण (2) मन

(3) निध्यायन

(A) 1 (B) 1 और 2

(C) केवल 2 (D) 1 और 3

74. (D) प्राचीन काल में हमारे देश में शिक्षा का सुव्यवस्थित रूप उपलब्ध था। वैदिककाल में भी भारतवासी शिक्षा के महत्त्व से भली–भाँति परिचित थे तथा शिक्षा–प्रणाली का समुचित विकास हो चुका था। उस काल में भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, समाज की उन्नति एवं प्रगति तथा सभ्यता के बहुपक्षीय विकास के लिए शिक्षा को आवश्यक माना जाता था। प्राचीन-कालीन भारतीय समाज ने अपने मौलिक चिन्तन के आधार पर ही एक उन्नत तथा व्यवस्थित शिक्षा–प्रणाली को जन्म दिया था। प्राचीन भारतीय समाज ने शिक्षा की अवधारणा के प्रति एक मौलिक तथा सन्तुलित दृष्टिकोण विकसित कर लिया था। उस काल में शिक्षा को क्रमशः विद्या, ज्ञान, बोध तथा विनय के रूप में स्वीकार किया गया था। शिक्षा की प्रक्रिया को व्यापक तथा सीमित दोनों ही रूपों में प्रस्तुत किया गया था। इस तथ्य को डॉ. अल्तेकर ने इन शब्दों में प्रस्तुत किया है, ''व्यापक अर्थ में शिक्षा का तात्पर्य है व्यक्ति को सभ्य और उन्नत बनाना। वैदिक काल में, गुरुकुल शिक्षा पूर्णरूपेण मौखिक थी, निध्यायन, वाद–विवाद, भाषणविधि, सूक्ति विधि, कथा विधि आदि विधियाँ थीं।

75. विद्यार्थियों को सक्रिय एवं निष्क्रिय में वर्गीकृत करने के लिए निम्नलिखित मापनी का प्रयोग किया जा सकता है–

(A) नामित (B) क्रमिक

(C) समान अन्तराल (D) अनुपात

75. (A) विद्यार्थियों को सक्रिय एवं निष्क्रिय में वर्गीकृत करने के लिए नामित मापनी का प्रयोग किया जा सकता है।

76. बुनियादी शिक्षा पाठ्यक्रम में निम्नलिखित शामिल नहीं था–

(A) बुनियादी कला

(B) शारीरिक क्रियायें

(C) माध्यम के रूप में अंग्रेजी

(D) सहसम्बन्ध का सिद्धान्त

76. (C) गाँधीजी द्वारा 1937 में बुनियादी शिक्षा या वर्धा शिक्षा की नींव रखी गयी। बुनियादी शिक्षा पाठ्यक्रम में, बुनियादी कला, शारीरिक क्रियाएँ तथा सहसम्बन्ध का सिद्धान्त सम्मिलित है। गाँधीजी के बुनियादी शिक्षा के लिए मुख्य आधार,

(1) 6 से 14 वर्ष के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा पर बल,

(2) शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो,

(3) हस्त केन्द्रित शिक्षा पर बल।

77. सीखने का अन्तरण हो सकता है–

(A) एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में

(B) व्यक्ति से पशुओं में

(C) एक संस्था से दूसरी संस्था में

(D) एक अंग से दूसरे अंग में

77. (D) सीखने के अन्तरण से आशय सीखे गये ज्ञान का प्रयोग अन्य विषयों में करने से है। यह धनात्मक व ऋणात्मक दोनों हो सकता है।

- **सकारात्मक या धनात्मक अधिगम स्थानांतरण (Positive Transfer)** : इस प्रकार के अधिगम अंतरण में एक विषय का ज्ञान दूसरे विषय का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है। उदाहरणार्थ किसी व्यक्ति का हिन्दी का ज्ञान उसे संस्कृत सीखने में मदद करेगा यही सकारात्मक अधिगम अंतरण है।
- **नकारात्मक या ऋणात्मक अधिगम स्थानांतरण (Negative Transfer)** : जब पहले प्राप्त किया गया ज्ञान या कौशल नए ज्ञान या कौशल में बाधा उत्पन्न करता है। उदाहरणार्थ–अंग्रेजी भाषा का प्राप्त ज्ञान व्यक्ति को संस्कृत भाषा के ज्ञान में बाधा या अवरोध का सामना करना पड़ता है।
- **शून्य अधिगम स्थानांतरण (Zero Transfer)** : इस प्रकार के अधिगम अंतरण में एक विषय का ज्ञान न तो दूसरे विषय के लिए सहायक होता है

और न ही बाधा उत्पन्न करता है। उदाहरणार्थ, क्रिकेट का एक खिलाड़ी बल्लेबाजी के बाद गेंद फेंकने में कौशल सीखता है इस पर बल्लेबाजी के कौशल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

78. प्राप्तांक का अधिक व्यवस्थित समूहों में व्यवस्थापन कहलाता है–

(A) प्राप्तांक वितरण (B) आवृत्ति वितरण

(C) तालिका निर्माण (D) आवृत्ति बहुभुज

78. (B) प्राप्तांक का अधिक व्यवस्थित समूहों में व्यवस्थापन आवृत्ति वितरण कहलाता है।

79. जब सर्वाधिक स्थायित्व वाले केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप की आवश्यकता होती है, तब प्रयुक्त होता है–

(A) मध्यमान (B) मध्यांक

(C) बहुलांक (D) प्रसार

79. (A) केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप में (Mean, Median तथा Mode तीनों केन्द्र बिन्दु पर होते हैं, परन्तु इन तीनों में (Mean) (मध्यमान) सर्वाधिक स्थायी होता है।

80. बुद्धि का त्रिआयामी सिद्धान्त दिया गया था–

(A) गाल्टन द्वारा (B) गिलफोर्ड द्वारा

(C) स्पियरमैन द्वारा (D) टरमैन द्वारा

80. (B) गिलफोर्ड (1959, 1961, 1967) तथा उसके सहयोगियों ने तीन मानसिक योग्यताओं के आधार पर बुद्धि संरचना की व्याख्या प्रस्तुत की। गिलफोर्ड का यह बुद्धि संरचना सिद्धान्त त्रि–पक्षीय बौद्धिक मॉडल कहलाता है। उन्होंने बुद्धि कारकों को तीन श्रेणियों में बाँटा है, अर्थात् मानसिक योग्यताओं को तीन विमाओं में बाँटा है। ये हैं–संक्रिया, विषय-वस्तु तथा उत्पादन । कारक विश्लेषण के द्वारा बुद्धि की ये तीनों विमाएँ पर्याप्त रूप से भिन्न हैं।

81. 'इदम्' संचालित होता है–

(A) यथार्थता के नियम द्वारा

(B) प्रतिवाद के नियम द्वारा

(C) आनन्द के नियम द्वारा

(D) नैतिकता के नियम द्वारा

81. (C) इदम् जन्मजात प्रकृति का होता है। यह बिना किसी बाधा के तत्काल आनन्द, सुख व सन्तुष्टि प्राप्त करना चाहता है। इदम् वर्णता अचेतन में कार्य करता है। फ्रायड ने व्यक्तित्व की संरचना का वर्णन करने के लिए निम्नलिखित दो मॉडल का निर्माण किया है–(i) आकारात्मक मॉडल (ii) गत्यात्मक मॉडल या संरचनात्मक मॉडल।

82. सीखने में थॉर्नडाइक बल देते हैं–

(A) सहचर्यात्मक सम्बन्धों पर

(B) गत्यात्मक सम्बन्धों पर

(C) न सहचर्यात्मक और न ही गत्यात्मक दोनों सम्बन्धों पर

(D) सहचर्यात्मक तथा गत्यात्मक सम्बन्धों पर

82. (A) थॉर्नडाइक ने सीखने में सहचर्यात्मक रूपान्तरण का नियम दिया है। इसमें किसी संवेदनशील परिस्थिति से जोड़कर प्राणी से कोई भी अनुक्रिया करायी जा सकती है, जिसे करने में वह समर्थ है।

83. डी.वी. के अनुसार, शिक्षा से अभिप्राय है–

(A) सुख का साधन (B) मोक्ष का साधन

(C) जीवन की तैयारी (D) स्वयं जीवन

83. (D) डी.वी. के अनुसार, शिक्षा विकास है और चूँकि विकास जीवन की विशेषता है। अतः शिक्षा स्वयं जीवन है।
शिकागो के 'स्कूल ऑफ एजुकेशन' में उनके कार्यों ने लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इन्हीं वर्षों में उन्होंने अपने कार्यों में प्रयोगवादी झुकाव दिखाया जो 1952 में उनकी मृत्यु के समय तक बना रहा। उनका मस्तिष्क अंत तक शिक्षा में किसी भी नये प्रयोग के लिए खुला रहा। 'स्कूल्स ऑफ टूमॉरो' में उनकी रुचि अंत तक बनी रही।

84. उपलब्धि परीक्षण में किसी एकांश का सबसे वांछनीय कठिनाई मान स्तर क्या है ?

(A) 1 (B) 9 से 8

(C) 7 से 3 (D) 2 से शून्य

84. (C) उपलब्धि परीक्षण का सबसे वांछनीय (अच्छा) कठिनाई मान स्तर .7 से .3 होता है।

85. निबन्धात्मक प्रश्न अच्छे होते हैं, क्योंकि वे होते हैं–

(A) वस्तुनिष्ठ

(B) समय की बचत वाले

(C) विश्वसनीय

(D) निदानात्मक

85. (D) निबन्धात्मक परीक्षाओं का प्रारम्भ सर्वप्रथम ''चीन'' में किया गया था। निबन्धात्मक प्रश्न निदानात्मक होते हैं।

86. रवीन्द्र नाथ टैगोर ने निम्नलिखित स्थान पर विद्यालय की स्थापना की–

(A) बोलपुर (B) जयपुर

(C) पाण्डिचेरी (D) वर्धा

86. (A) रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने विद्यालय शान्ति निकेतन की स्थापना सन् 1901 में बोलपुर में की। इसमें बालक थे। उस समय उन्होंने शिक्षण सम्बन्धी विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। सुनील चन्द्र सरकार के अनुसार, ''टैगोर रूसी तथा फ्रोबेल के विचारों से अवश्य प्रभावित थे, यह प्रभाव उन पर अपना विद्यालय चलाने से पूर्व था और उस समय तक जब तक कि उन्होंने अपने प्रयोग किये, वे डी.वी. के शिक्षाशास्त्र के प्रभाव क्षेत्र में आ चुके थे।'' शिक्षा के बारे में टैगोर की धारणा इस प्रकार है–''शिक्षा जीवन का स्थायी साहस है। यह अस्पताल की पीड़ायुक्त चिकित्सा की नीति नहीं है, जिससे उनका (छात्रों का) इलाज हो सके, उनकी अज्ञानता का निरोध हो सके, अपितु यह तो स्वास्थ्य की एक क्रिया है जो स्वाभाविक रूप, से मस्तिष्क को उपयोगी बनाती है।''

87. निम्नलिखित में से किसे मनो–ऊर्जा का भण्डार-गृह कहा जाता है ?

(A) इदम् (B) अहम्

(C) पराअहम् (D) ये सभी

87. (A) इदम् जन्मजात प्रकृति का होता है। इसमें मुख्य रूप से व्यक्ति की प्रवृत्तियाँ, मूल वासनाएँ तथा दमित इच्छाएँ आती हैं। यह तत्काल आनन्द प्राप्त करना चाहता है, जबकि अहम् वास्तविकता से सम्बन्धित होता है और पराअहम् सामाजिक मान्यताओं, संस्कारों तथा आदर्शों से सम्बन्धित होता है।

88. निम्नलिखित में से क्या वंशानुगत होता है ?

(A) शारीरिक विभिन्नता

(B) व्यवहारगत विभिन्नता

(C) शैक्षिक विभिन्नता

(D) आर्थिक विभिन्नता

88. (A) वैयक्तिक विभिन्नता वंशानुगत एवं वातावरणीय होती है। शारीरिक भिन्नता वंशानुगत होती है।

89. यूनेस्को द्वारा सन् 1972 में प्रस्तुत शिक्षा पर प्रतिवेदन का शीर्षक था–

(A) लर्निंग टू लिव

(B) लर्निंग टू बी

(C) लर्निंग विदाउट बर्डन

(D) कंटीनुअस लर्निंग

89. (B) यूनेस्को द्वारा सन् 1972 में प्रस्तुत शिक्षा का प्रतिवेदन "Learning to Be" था।

90. अनुशासन स्थापना का सकारात्मक साधन है–
(A) निलम्बन एवं निष्कासन
(B) शारीरिक दण्ड
(C) आर्थिक दण्ड
(D) छात्र स्वशासन

90. (D) स्वशासन, आत्मानुशासन अनुशासन का सकारात्मक साधन है, जबकि निलम्बन एवं निष्कासन, शारीरिक, आर्थिक दण्ड, निन्दा, नकारात्मक साधन है।

91. सृजनात्मकता का परीक्षण विकसित किया है–
(A) बिने ने (B) वैश्लर ने
(C) कैटल ने (D) टॉरेन्स ने

91. (D) टॉरेन्स के द्वारा तैयार किया गया, सृजनात्मक चिन्तन परीक्षण 2 भागों में है–(1) शाब्दिक परीक्षण, जिसे शब्दों के साथ सृजनात्मक चिन्तन कहते हैं। (2) आकृतिक परीक्षण, जिसे चित्रों के साथ सृजनात्मक चिन्तन कहते हैं।

92. बिने का बुद्धि परीक्षण है–
(A) शाब्दिक सामूहिक परीक्षण
(B) अशाब्दिक सामूहिक परीक्षण
(C) शाब्दिक वैयक्तिक परीक्षण
(D) अशाब्दिक वैयक्तिक परीक्षण

92. (C) बिने साइमन ने 1905 में सर्वप्रथम बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया। बिने साइमन ने शाब्दिक वैयक्तिक परीक्षण का निर्माण किया। जिसमें केवल एक समय में एक व्यक्ति पर शब्दों या भाषा के माध्यम से प्रश्न या समस्याओं को प्रस्तुत किया जाता है।

शाब्दिक बुद्धि परीक्षण

जैसा कि हमने पूर्व में लिखा है कि शाब्दिक बुद्धि परीक्षणों को भी दो वर्गों में विभक्त किया गया है– 1. वैयक्तिक (Individual) तथा 2. समूह (Group) बुद्धि परीक्षण।

93. व्यक्तिगत विभेद पाये जाते हैं–
(A) वातावरणीय परिस्थिति में
(B) ज्ञानात्मक परिस्थितियों में
(C) भावात्मक परिस्थितियों में
(D) प्रत्याक्षात्मक परिस्थितियों में

93. (D) प्रत्यक्षात्मक परिस्थितियों में व्यक्तिगत विभेद पाये जाते हैं। व्यक्तिगत विभिन्नता वंशानुगत एवं वातावरणीय होती है।

94. निम्नलिखित में से कौन सृजनात्मकता की विशेषता नहीं है ?
(A) नवीनता (B) मौलिकता
(C) सहानुभूति (D) संवेदनशीलता

94. (C) प्रत्येक व्यक्ति में सृजनशील होने के गुण होते हैं, परन्तु अच्छा वातावरण न मिल पाने के कारण इसका विकास नहीं हो पाता है। सृजनात्मकता को उन्नत बनाने के लिए आसवार्न ने विक्षिप्तीकरण विधि को महत्वपूर्ण बताया है। इस विधि में व्यक्ति को अधिक से अधिक संख्या में नये–नये विचारों को देना होता है तथा अन्य लोगों के विचारों को भी संयोजित कर सकते हैं। इसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को तथा एक-दूसरे को प्रोत्साहित करता है। अनुसंधानों से यह पता चलता है कि विक्षिप्तीकरण से विचारों की गुणवत्ता तथा मात्रा दोनों में बढ़ोतरी होती है।

सृजनात्मकता को उन्नत बनाने के लिए गौर्डन द्वारा साइनेक्टिस विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें सादृश्यता का प्रयोग किया गया है। मुख्य रूप से व्यक्तिगत सादृश्यता इस तरह की सादृश्यता में व्यक्ति को अपने आप को किसी परिस्थिति में रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। जैसे यदि आप यह चाहते हैं कि कोई खास मशीन ठीक ढंग से कार्य करे तो कल्पना करें कि खुद ही वह मशीन हैं। प्रत्यक्ष सादृश्यता इसमें व्यक्ति को ऐसी चीजें पाने या खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो समस्या के समाधान में सहायता करता है। सांकेतिक सादृश्यता में वस्तुनिष्ठ अव्यक्तिक का प्रयोग करके सृजनात्मकता बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। कल्पनाचित्र सादृश्यता में व्यक्ति किसी घटना या वस्तु पर सामान्य सीमाओं से स्वतंत्र होकर कल्पना करता है। इन विधियों के उपयोग द्वारा उद्योग, व्यवसाय तथा शिक्षा के क्षेत्र में लोगों की सृजनात्मकता को बढ़ाया जाता है।

सृजनात्मकता की विशेषताएँ निम्न हैं–
(1) प्रवाह (Fluency)
(2) विविधता (Flexibility)
(3) मौलिकता/नवीनता (Originality)
(4) विस्तारण (Elaberation)

95. प्लेटो द्वारा शिक्षा पर लिखी महान पुस्तक है–
(A) एजुकेशनल फिलॉस्फी
(B) द एजुकेशन
(C) द रिपब्लिक
(D) द एमीन

95. (C) प्लेटो – द रिपब्लिक
रूसो – एमीन
हेनरी एडम्स – द एजुकेशन
जॉन डी.सी. – एजुकेशनल फिलॉस्फी

96. राममूर्ति समिति ने सभी बच्चों को उत्तम शिक्षा दिलाने के प्रयास में निम्नलिखित में से किसके पक्ष में सिफारिश की ?
(A) पब्लिक स्कूल (B) पड़ोसी स्कूल
(C) नवोदय विद्यालय (D) मुक्त विद्यालय

96. (C) यशपाल समिति का गठन 1992 में किया गया था, जिसमें सभी बच्चों को उत्तम शिक्षा दिलाने के प्रयास में नवोदय विद्यालय की सिफारिश की गयी।

97. स्मृति की तीन अवस्थायें कौन–सी हैं ?
(A) पहचान, धारण, प्रत्याह्वान
(B) संवेदन, संचयन, पुनःप्राप्ति
(C) धारण, विश्लेषण, संश्लेषण
(D) संकेतन, धारण, पुनःप्राप्ति

97. (A) स्मृति या स्मरण

1. **वुडवर्थ** के अनुसार, ''पूर्व में एक बार सीखी गयी क्रिया का पुनः स्मरण ही स्मृति है।''

2. **हिलगार्ड और ऐटकिन्सन** के अनुसार, ''स्मृति का अर्थ है कि वर्तमान में उन अनुक्रियाओं या प्रतिक्रियाओं को प्रदर्शित करना जिनको हमने पहले सीखा था।'' लेहमैन, लेहमैन एवं बटरफिल्ड के अनुसार विषेश कलाविधि के लिए सूचनाओं को संपोशित रखना ही स्मृति है।

स्मृति की तीन अवस्थाएँ पहचान (Recognition), धारण (Retention) तथा प्रत्याह्वान (Recall) हैं।

वुडवर्थ ने स्मृति के 4 घटक बताए हैं जिन्हें 4R कहते हैं। Reading, Retention, Recall, Recognition.

98. कौन–सी अभिवृत्ति की विशेषता नहीं है ?
(A) यह अर्जित होता है
(B) यह व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है
(C) यह गत्यात्मक है
(D) यह स्थायी है

98. (D) अभिवृत्ति अर्जित, व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित तथा स्थायी होती है पर इसमें परिवर्तन या संशोधन सम्भव है।

अभिवृत्ति की पहली विशेषता यह है कि यह एक मानसिक एवं स्नायविक अवस्था है, दूसरी विशेषता यह है कि यह प्रतिक्रिया करने की एक तत्परता है। तीसरी विशेषता यह है कि यह एक जटिल एवं हस्तक्षेपीय या मध्यस्थ अवधारणा है। जटिल और संगठित इसलिए है कि, इसमें जो संघटक हैं– भावनात्मक, संज्ञानात्मक

और व्यवहारात्मक। ये तीनों अत्यन्त जटिल होते हैं। इसलिए अभिवृत्ति भी जटिल होती है। कई संघटकों के कारण यह संगठित होती है। जहाँ तक मध्यस्थ या हस्तक्षेपीय अवधारणा की बात है अभिवृत्ति स्वतंत्र चर का न केवल परिणाम होती है, अपितु स्वयं में भी स्वतंत्र चर (किसी व्यवहार या प्रतिक्रिया का निर्धारक होने के कारण) होती है। अभिवृत्ति की चौथी विशेषता यह है कि, यह अर्जित की जाती है। व्यक्ति अपने जीवन काल में विविध कारकों के सहयोग से अभिवृत्तियों को अर्जित करता या सीखता है। पाँचवीं विशेषता यह है कि अभिवृत्ति बहुधा स्थायी होती है। विशेष परिस्थितियों में इसमें परिवर्तन भी पाया जाता है। इसकी अन्तिम छठी विशेषता यह है कि इसमें एक दिशा और तीव्रता होती है। दिशा या तो सकारात्मक होती या नकारात्मक। सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति में तीव्रता के आधार पर अन्तर होता है। जैसे किन्हीं दो व्यक्तियों में किसी के प्रति घृणा या पसन्दगी की मात्रा कम या ज्यादा हो सकती है। सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति में अनुकूल या प्रतिकूल व्यवहार या प्रतिक्रिया के प्रेरक गुण होते हैं।

अभिवृत्ति की उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर हम इसके पाँच पहलुओं का उल्लेख कर सकते हैं– दिशा, तीव्रता, केन्द्रीयता, प्रमुखता तथा सुसंगति।

99. शैक्षिक प्रक्रिया की प्रकृति है–

(A) सामाजिक (B) आर्थिक

(C) नैतिक (D) भौतिक

99. (A) शैक्षिक प्रक्रिया की प्रकृति सामाजिक होती है।

100. अधिगम, जिसमें परिणामों के फलस्वरूप ऐच्छिक व्यवहार रॉयल अथवा निर्बल हो जाता है, जाना जाता है–

(A) शास्त्रीय अनुबन्धन

(B) सक्रिय अनुक्रिया अनुबन्धन

(C) प्रयत्न एवं भूल

(D) संकेत अधिगम

100. (B) सक्रिय अनुक्रिया अनुबन्धन के प्रवर्तक बी.एस. स्किनर थे। इसे क्रियाप्रसूत अनुबन्धन, नैमित्तिक, यान्त्रिक या साधनात्मक अनुबन्ध सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है। इसमें परिणाम के फलस्वरूप ऐच्छिक व्यवहार होते हैं।

101. मापन का प्रथम तथा निम्नतम स्तर कौन–सा है ?

(A) क्रमिक (B) नामित

(C) अन्तराल (D) अनुपात

101. (B) स्टीवेन्स ने मापन के निम्न स्तर बताए हैं–

(1) नामित मापन

(2) क्रमिक मापन

(3) आन्तरिक मापन

(4) आनुपातिक मापन।

नामित मापन का निम्नतर स्तर माना जाता है। इनमें व्यक्तियों अथवा घटनाओं को किसी गुण या विशेषता के आधार पर कोई नाम, शब्द, अंक या संकेत प्रदान किया जाता है। इनमें कोई क्रम या सम्बन्ध अंतर्निहित नहीं रहता है। यह एक गुणात्मक मापन है तथा प्राप्त मानों या संकेतों से कोई भी गणितीय संक्रिया; जैसे–जोड़, घटाना, गुणा, भाग आदि सम्भव नहीं है। गुणों के आधार पर मात्र विभिन्न समूहों या उप समूहों की रचना की जा सकती है। जैसे–

शहरी, ग्रामीण या कला, विज्ञान, वाणिज्य आदि।

102. इनमें से कौन शिक्षा का एक वैयक्तिक उद्देश्य नहीं है ?

(A) शारीरिक शिक्षा

(B) मानसिक विकास

(C) नागरिक रूप में विकास

(D) सौन्दर्य बोधात्मक विकास

102. (C) नागरिक रूप में विकास शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य है।

103. शिक्षा मनोविज्ञान का जनक किसे कहते हैं ?

(A) हरबर्ट (B) विलियम जेम्स

(C) वुण्ट (D) मॉरिसन

103. (B) शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों के योग से बना है – 'शिक्षा' और 'मनोविज्ञान'। अतः इसका शाब्दिक अर्थ है – शिक्षा सम्बन्धी मनोविज्ञान। दूसरे शब्दों में, यह मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप है और शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। अतः हम स्किनर के शब्दों में कह सकते हैं ''शिक्षा मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से, जो सामाजिक प्रक्रिया है और मनोविज्ञान से, जो व्यवहार सम्बन्धी विज्ञान है, ग्रहण करता है।'' शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ का विश्लेषण करने के लिए स्किनर ने अधोलिखित तथ्यों की ओर संकेत किया है–

1. शिक्षा मनोविज्ञान का केन्द्र, मानव व्यवहार है।
2. शिक्षा मनोविज्ञान खोज और निरीक्षण से प्राप्त किए गए तथ्यों का संग्रह है।
3. शिक्षा मनोविज्ञान में संगृहीत ज्ञान को सिद्धांतों का रूप प्रदान किया जा सकता है।

शिक्षा मनोविज्ञान के जनक 'ई.एल. थॉर्नडाइक' हैं, लेकिन 1890 से पहले शिक्षा मनोविज्ञान के जनक जॉन हरबर्ट थे।

104. अधिगम 'के प्राथमिक' नियम हैं–

(A) अभ्यास, प्रभाव तथा तत्परता का नियम

(B) प्रयोग, प्रेरणा तथा प्रभाव का नियम

(C) तत्परता, प्रभाव तथा प्रेरणा का नियम

(D) अभ्यास, प्रभाव तथा प्रेरणा का नियम

104. (A) थॉर्नडाइक महोदय ने अधिगम के 3 प्राथमिक नियम दिए हैं–(1) अभ्यास का नियम (2) प्रभाव का नियम (3) तत्परता का नियम।

105. न्यूनतम अधिगम स्तर निर्धारित किया गया है–

(A) कक्षा IV एवं V के विद्यार्थियों के लिए

(B) कक्षा VIII के विद्यार्थियों के लिए

(C) कक्षा X एवं XII के विद्यार्थियों के लिए

(D) कक्षा IX एवं XI के विद्यार्थियों के लिए

105. (A) न्यूनतम अधिगम स्तर पूर्व बाल्यावस्था में होता है तथा IV एवं V के विद्यार्थियों के लिए यह उत्तर निर्धारित है।

106. I.Q. (बुद्धि–लब्धि) का प्रत्यय किसने दिया ?

(A) स्पियरमैन (B) बिने

(C) टर्मन (D) साइमन

106. (C) बुद्धि–लब्धि का प्रत्यय टर्मन तथा स्टर्न ने दिया। बुद्धि–लब्धि को मानसिक आयु तथा वास्तविक आयु के अनुपात से ज्ञात किया जाता है। बुद्धि–लब्धि प्राप्त करने के लिए पहले बुद्धि परीक्षण से मानसिक आयु ज्ञात की जाती है तथा फिर उसमें व्यक्ति की वास्तविक आयु का भाग दे दिया जाता है तथा संख्या को पूर्ण बनाने के लिए इस अनुपात को 100 से गुणा कर दिया जाता है।

बुद्धिलब्धि IQ =

$$\frac{\text{MA}(\text{मानसिक आयु})}{\text{CA}(\text{वास्तविक आयु})} \times 100$$

बुद्धि-लब्धि वितरण का उदाहरण

बुद्धिलब्धि सीमाएँ	वर्ग
130 से अधिक	प्रतिभाशाली (Genius)
121–130	प्रखर बुद्धि (Superior)

111–120	तीव्र बुद्धि (Above Average)
91–110	सामान्य बुद्धि (Average)
81–90	मन्द बुद्धि (Feeble minded)
71–80	अल्प बुद्धि (Dull)
71 से कम	जड़ बुद्धि (Idiot)

107. किसने कहा था–''शिक्षा एक दो–ध्रुवीय प्रक्रिया है''?

(A) जॉन लॉक

(B) जॉन डीवी

(C) जॉन एडम्स

(D) टी.पी.नन

107. (C) जॉन एडम्स के अनुसार ''शिक्षा दो–ध्रुवीय प्रक्रिया है।'' शिक्षक, विद्यार्थी,

जॉन डी.वी. के अनुसार ''शिक्षा त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है।'' शिक्षक, विद्यार्थी और पाठ्यक्रम।

108. थिमेटिक अपरसेप्शन परीक्षण (TAT) मापन करता है–

(A) बुद्धि का

(B) अभिक्षमता का

(C) निष्पत्ति का

(D) व्यक्तित्व का

108. (D) प्रासंगिक अन्तर्बोधि परीक्षण मापन की प्रक्षेपी विधि है।

प्रक्षेपी विधि के इतिहास पर 1400 ए.डी में लियोनार्डो द विन्सी ने कुछ ऐसे बच्चों का चयन किया, जिन्होंने कुछ अस्पष्ट प्रारूपों में विशिष्ट आकार तथा पैटर्न की खोज की। इस खोज से यह स्पष्ट हुआ कि उन बच्चों में रचनात्मकता का गुण विद्यमान था। इसके बाद सन् 1800 के उत्तरार्द्ध में बिने ने एक खेल जिसका नाम उन्होंने स्लोटो बताया, के माध्यम से बच्चों की निष्क्रिय कल्पना को मापने का प्रयत्न किया। स्लोटो खेल में बच्चों को कुछ स्याही के धब्बे देकर उनसे पूछा जाता था कि इन धब्बों में उन्हें क्या आकार या प्रारूप दिखाई देता है। इसके उपरान्त सन् 1879 में गाल्टन द्वारा एक परीक्षण का निर्माण किया गया, जिसका नाम था–''शब्द साहचर्य परीक्षण''। केन्ट तथा रोरोजानोफ्फ द्वारा परीक्षण कार्यों में गाल्टन द्वारा निर्मित परीक्षण का प्रयोग किया गया। सन् 1910 में युंग द्वारा नैदानिक मूल्यांकन के लिए इसी प्रकार के परीक्षण का प्रयोग किया गया। इविंग होंस ने बुद्धि मापने के लिए ''वाक्यपूर्ति परीक्षण'' का उपयोग किया। धीरे–धीरे इन अनौपचारिक प्रक्षेपीय प्रविधियों ने औपचारिक प्रक्षेपी परीक्षणों को जन्म दिया, जो अपेक्षाकृत अधिक मानकीकृत थे और इनके माध्यम से पहले की तुलना में अधिक अच्छे ढंग से मानसिक योग्यताओं का मापन करना संभव हो सका।

109. निम्नलिखित में से कौन शिक्षा से सम्बन्धित नहीं है ?

(A) हण्टर कमीशन

(B) सैडलर कमीशन

(C) साइमन कमीशन

(D) कोठारी कमीशन

109. (C) साइमन कमीशन का गठन सन् 1927-28 में सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में हुआ। इसका गठन उस समय हुआ जब भारत में साम्प्रदायिक दंगे तथा राजनीतिक वातावरण क्रान्तिकारी, आतंकवादी गतिविधियों के कारण भयानक उत्तेजनापूर्ण था।

110. नवोदय विद्यालय है–

(A) आवासीय विद्यालय

(B) केवल बालिकाओं के लिए विद्यालय

(C) राज्य सरकार द्वारा संचालित

(D) प्राथमिक विद्यालय

110. (A) नयी शिक्षा नीति 1986 की समीक्षा तथा प्रो. यशपाल कमेटी 1922 की सिफारिश पर नवोदय विद्यालय की स्थापना की गयी। इसे आवासीय विद्यालय भी कहा गया।

111. जब एक कार्य का निष्पादन दूसरे कार्य के निष्पादन में अवरोध उत्पन्न करता है, इसे कहा जाता है–

(A) सकारात्मक स्थानान्तरण

(B) नकारात्मक स्थानान्तरण

(C) शून्य स्थानान्तरण

(D) क्षैतिज स्थानान्तरण

111. (B) जब एक कार्य का निष्पादन दूसरे कार्य के निष्पादन में अवरोध उत्पन्न करता है, इसे नकारात्मक स्थानान्तरण कहते हैं।

जब एक विषय या कौशल का अधिगम दूसरे विषय या कौशल के अधिगम में बाधक होता है तब उसे नकारात्मक स्थानांतरण कहते हैं।

नकारात्मक स्थानांतरण की प्रकृति निम्न दो प्रकार की होती है–

(अ) पूर्वलक्षी नकारात्मक स्थानांतरण– जब पहले प्रकार से सीखी गई कोई चीज दूसरी प्रकार की सीखी जाने वाली किसी चीज से दुष्प्रभावित होने लगे या बोलने लगे तो इस स्थिति को पूर्वलक्षी नकारात्मक स्थानांतरण कहते हैं।

उदाहरण–दूसरी कविता को याद कर लेने के बाद पहले याद की गई कविता भूलने लगे या उसकी स्मृति कमजोर पड़ जाए।

(ब) प्रतिलक्षी नकारात्मक स्थानांतरण– जब पहले प्रकार की सीखी गई कोई चीज दूसरे प्रकार की सीखे जाने वाली किसी चीज पर बुरा प्रभाव डालने लगे या बाधा उत्पन्न करने लगे तो इस स्थिति को प्रतिलक्षी नकारात्मक स्थानांतरण कहते हैं।

उदाहरण–पहली याद की गई कविता के बाद यदि दूसरी कविता याद करने में बाधा उत्पन्न हो अथवा स्मृति में पहली कविता की पंक्ति आ जाये।

112. शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार का अर्थ है–

(A) शिक्षा को समाज के अनुसार बनाना

(B) समाज को शिक्षा के अनुसार परवर्तित करना

(C) शिक्षा की समस्याओं को हल करने में समाजशास्त्र के ज्ञान का उपयोग

(D) समाजशास्त्र के सिद्धान्तों के निर्माण में शिक्षा के ज्ञान का उपयोग

112. (D) शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार का अर्थ समाजशास्त्र के सिद्धांतों के निर्माण में शिक्षा के ज्ञान का उपयोग करना।

113. राष्ट्रीयता में अंधविश्वास रखने की कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं–

(A) राष्ट्रीय अखण्डता के विकास में

(B) सामुदायिक सामंजस्य के विकास में

(C) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में

(D) सामाजिक सामंजस्य के विकास में

113. (B) राष्ट्रीयता में अंधविश्वास सामाजिक समुदाय में सामंजस्य बनाने में जटिलता पैदा करता है।

114. निम्नलिखित में से कौन–सी विधि व्यक्तित्व प्रक्षेपी विधि नहीं है ?

(A) रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण

(B) प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण

(C) हाईस्कूल व्यक्तित्व प्रश्नावली

(D) बालक अन्तर्बोध परीक्षण

114. (C) रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण, प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण (TAT) बालक अन्तर्बोध परीक्षण (CAT), व्यक्तित्व प्रक्षेपी विधि है, जबकि ''हाईस्कूल व्यक्तित्व प्रश्नावली'' 'कैटल' द्वारा तैयार की गयी प्रश्नावली है। यह प्रक्षेपी विधि नहीं है।

115. सतत् एवं द्विभाजी चरों के मध्य सहसम्बन्ध की गणना करते हैं–

(A) द्विपंक्तिक सहसम्बन्ध विधि से

(B) गुणन–आघूर्ण विधि से

(C) बहु–सहसम्बन्ध विधि से

(D) फाई सह सम्बन्ध विधि से

115. (A) द्विपंक्तिक सहसम्बन्ध विधि का व्यवहार दो चरों के बीच सम्बन्ध निकालने के लिए किया जाता है, जिसमें एक चर सतत् होता है तथा दूसरा द्विभाजी होता है।

$$r\ bis = \frac{MP - M4}{\sigma t} \times \frac{P4}{u}$$

116. अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के महान समर्थक थे–

(A) गोपाल कृष्ण गोखले

(B) लाला लाजपत राय

(C) दादा भाई नौरोजी

(D) विट्ठल भाई पटेल

116. (A) गोपाल कृष्ण गोखले ने 19 मार्च, 1910 को केन्द्रीय सभा में अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में बिल पेश किया था।

117. शिक्षा में 'प्राच्य–पाश्चात्य' विवाद का प्रारम्भ किया था–

(A) लॉर्ड मैकाले ने

(B) लॉर्ड कर्जन ने

(C) लॉर्ड डलहौजी ने

(D) लॉर्ड रिपन ने

117. (A) शिक्षा में 'प्राच्य–पाश्चात्य' विवाद का प्रारम्भ लॉर्ड मैकाले के समय में हुआ। लॉर्ड मैकाले ने परामर्श देने की आड़ में भारतीयों को मानसिक रूप से ब्रिटेन के गुलाम बनाने हेतु 1835 में प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

118. अभिप्रेरणा के प्रत्यय की प्रकृति है–

(A) मनोवैज्ञानिक

(B) मनो–सामाजिक

(C) मनो–शारीरिक

(D) सामाजिक

118. (C) अभिप्रेरणा इच्छाओं, अभिलाषाओं, आवश्यकताओं और अन्य ऐसी शक्तियों के सम्पूर्ण वर्ग के लिए प्रयुक्त एक सामान्य शब्दावली है। यह कहना कि प्रबन्धकगण अपने अधीनस्थ की अभिप्रेरणा करते हैं, बिल्कुल यही कहने के बराबर होगा कि वे उन सभी कार्यों को करते हैं जिनको वे समझते हैं कि उनसे इन इच्छाओं एवं आकांक्षाओं की सन्तुष्टि हो सकेगी तथा अधीनस्थों को अपेक्षित तरीके से कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा सकेगा।'' अभिप्रेरणा के प्रत्यय के दौरान आवश्यकता, अन्तर्नोद प्रोत्साहन तथा अभिप्रेरक शब्दों का प्रयोग होता है। इन चारों को अभिप्रेरण के संघटक कहा जाता है। ये मनो–शारीरिक होते हैं।

119. निम्नलिखित में से कौन-सा सिद्धान्त सीखने में स्थानान्तरण से सम्बन्धित है ?

(A) शीलगुण सिद्धान्त

(B) प्रकार सिद्धान्त

(C) संज्ञानात्मक

(D) सामान्यीकरण सिद्धान्त

119. (D) सामान्यीकरण के सिद्धान्त का प्रतिपादन सन् 1908 में सी.एच.गुड ने किया था।

120. सांस्कृतिक परिवर्तन में सम्मिलित नहीं है–

(A) सांस्कृतिक आदान–प्रदान

(B) सांस्कृतिक विलम्बन

(C) सामाजिक स्वीकृति

(D) रचनात्मक विलोपन

120. (B) सांस्कृतिक परिवर्तन के अंतर्गत संस्कृति आदान–प्रदान, सामाजिक स्वीकृति, रचनात्मक विलोपन को शामिल किया जाता है, परन्तु कल्चरल लैग (सांस्कृतिक विलंबना) को शामिल नहीं किया जाता। विलियम एफ. ऑगबर्न (W.F. Ogburn) ने संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन के सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम 1922 ई. में अपनी पुस्तक 'Social Change' में सांस्कृतिक पिछड़' अथवा 'सांस्कृतिक विलम्बना' के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया। आपके अनुसार, सांस्कृतिक का तात्पर्य मनुष्य द्वारा निर्मित सभी प्रकार के भौतिक और अभौतिक (Material and non-material) तत्वों से है। 'lag' का तात्पर्य 'लँगड़ाना' अथवा 'पीछे रह जाना होता है। इस प्रकार संस्कृति के भौतिक पक्ष की तुलना में जब अभौतिक पक्ष पीछे रह जाता है, तब सम्पूर्ण संस्कृति में असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसी स्थिति को हम 'सांस्कृतिक विलम्बना' अथवा 'सांस्कृतिक पिछड़ा कहते हैं।

121. वह कारक जो किसी गतिविधि को प्रारम्भ करता है तथा जारी रखता है, कहलाता है–

(A) अभिवृत्ति

(B) अभिक्षमता

(C) मूल प्रवृत्ति

(D) प्रेरणा

121. (D) गुड के अनुसार, ''अभिप्रेरणा किसी कार्य को प्रारम्भ करने, जारी रखने अथवा नियन्त्रण करने की प्रक्रिया है।''

122. उपयुक्त शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये। "सीखना ..... सिनेप्टिक प्रतिरोध का परिणाम है।"

(A) बढ़ोतरी

(B) कटौती

(C) (A) और (B) दोनों

(D) न (A) और न ही (B)

122. (B) सीखना कटौती सिनेप्टिक प्रतिरोध का परिणाम है।

123. बच्चे की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों की ओर ध्यान आकृष्ट कराने वाला प्रथम पथ प्रदर्शक निम्नलिखित में से कौन था ?

(A) रवीन्द्र नाथ टैगोर

(B) पेस्टालॉजी

(C) अरस्तू

(D) रूसो

123. (C) बच्चों की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों की ओर ध्यान आकृष्ट कराने वाले प्रथम पथ प्रदर्शक अरस्तू थे।

124. निम्नलिखित में से कौन–सा एक शैक्षिक अभिलेख है?

(A) शुल्क रजिस्टर

(B) अवकाश रजिस्टर

(C) उपस्थिति रजिस्टर

(D) छात्रवृत्ति रजिस्टर

124. (C) विद्यालय अभिलेख 5 प्रकार के होते हैं–

(1) शैक्षिक अभिलेख–छात्र एवं शिक्षक उपस्थिति रजिस्टर, परीक्षा सम्बन्धी फाइल आदि।

(2) वित्तीय अभिलेख–फीस रजिस्टर, छात्रवृत्ति वेतन रजिस्टर आदि।

(3) सामान्य अभिलेख–लॉक बुक, अवकाश रजिस्टर आदि।

(4) साज–सज्जा सम्बन्धी अभिलेख– खेलकूद रजिस्टर, पुस्तकालय रजिस्टर आदि।

(5) पत्र व्यवहार सम्बन्धी अभिलेख– पत्र प्राप्ति एवं पत्र भेजने का रजिस्टर आदि।

125. समाज की संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया को कहते हैं–

(A) सामाजीकरण

(B) सामाजिक परिवर्तन

(C) सांस्कृतिक परिवर्तन

(D) संस्कृतीकरण

125. (B) श्री किंग्स्ले डेविस के अनुसार, ''सामाजिक परिवर्तन केवल वे ही परिवर्तन समझे जाते हैं जो कि सामाजिक संगठन अर्थात् समाज की संरचना और प्रकार्यों से घटित होते हैं। सामाजिक परिवर्तन की सैद्धान्तिक व्याख्या पहले समाजशास्त्र के जनक विचारकों ने की थी। शायद सबसे पहले 1893 ई. में दुर्खीम ने श्रम विभाजन की व्याख्या में सामाजिक परिवर्तन का उल्लेख किया था। दुर्खीम ने पूर्व औद्योगिक समाज की तुलना औद्योगीकरण समाज से की। पूर्व औद्योगीकरण समाजों में सामाजिक स्तरीकरण किसी भी अर्थ में चौंकने वाला नहीं था। औद्योगिक समाज में स्तरीकरण अधिक तीव्र हो गया।

इस समाज में मानदण्ड एवं मूल्यों में भी परिवर्तन आ गया। दुर्खीम की पदावली में पूर्व औद्योगिक समाज वस्तुतः यांत्रिक समाज था। जब इस समाज का उद्विकास सावयवी समाज में हुआ तब परिवर्तन की गति तीव्र हो गयी। इस परिवर्तन का मूल्याकंन दुर्खीम ने किया है। औद्योगीकरण समाज में जो परिवर्तन देखने को मिलता है वह समानता पर आधारित नहीं है, विभिन्नता या स्तरीकरण पर आधारित है।

❑❑

प्रैक्टिस सेट-4

1. भारत में शिक्षा विभिन्न स्तरों के लिए गुणवत्तापूर्ण डिजिटल विषय–सूची तैयार करने के लिए भारत सरकार द्वारा की गई पहल में शामिल है–
   (A) भारत सरकार का साक्षात् पोर्टल
   (B) प्रौद्योगिकी के बल पर बेहतर सीखने सम्बन्धी राष्ट्रीय कार्यक्रम
   (C) सीखने और ऑनलाइन शिक्षण के लिए मल्टीमीडिया शैक्षणिक संसाधन
   (D) उपर्युक्त सभी
2. जेम्स और प्राउट द्वारा उल्लिखित प्रतिमान की मुख्य विशेषताएँ हैं–
   1. बच्चों को समाज का निर्माण माना जाता है।
   2. बचपन सामाजिक विश्लेषण का एक चर है।
   3. बचपन समाज की संस्कृति का विकास करता है।
   4. बच्चे को सक्रिय सामाजिक एजेंट के रूप में देखा जाना चाहिए।

   (A) 1, 2, 3 (B) 1, 3, 4
   (C) 1, 2, 4 (D) ये सभी
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE) 1986 के तहत स्कूलों में निम्न में से किसे लागू किया गया था?
   (A) आनुवंशिकी (B) योग
   (C) रोबोटिक्स (D) कला
4. आप उन छात्रों को कैसे बंद करवाएँगे जो शरारती हैं और मदमत्त पदार्थ लेते हैं?
   (A) आप उसे कठोर सजा दें और बाद में सुधार की शिक्षा दें
   (B) आप उसे, इसकी हरकतों से होने वाले रोगों से अवगत करायें और बाद में उन्हें शिक्षा दें
   (C) आप उसे मदमत्त पदार्थ दें और बाद में शिक्षा दें
   (D) आप केवल उन छात्रों तक जायें जो मदमत्त पदार्थ नहीं लेते हैं
5. मोहन खिलौनों के घटकों के अन्वेषण के लिए उन्हें तोड़कर अलग–अलग कर देता है। आप क्या करेंगे?
   (A) मोहन को कभी खिलौनों से नहीं खेलने देंगे।
   (B) सदैव कड़ी नजर रखेंगे।
   (C) उसके स्वभाव को प्रोत्साहित करते हुए उसकी ऊर्जा को सही दिशा प्रदान करेंगे।
   (D) उसे समझाएँगे कि खिलौने नहीं तोड़ने चाहिए
6. निम्न में से कौन–सा नियत कार्य उत्तर बचपन के लिए उपयुक्त नहीं है?
   (A) सामान्य खेलों के शारीरिक कौशल का अधिगम
   (B) पुरुष या स्त्री का सामाजिक कर्तव्य निभाना
   (C) वैयक्तिक स्वातंत्र्य प्राप्त करना
   (D) अपने सम उमर वालों से साथ निभाना
7. किन्डरगार्टन पद का अर्थ है–
   (A) बच्चों का
   (B) बच्चों का घर
   (C) बच्चों का स्कूल
   (D) बच्चों का खेल मैदान
8. अभिप्रेरणा के सिद्धान्तों के अनुसार एक शिक्षक ज्ञान को ऐसे बढ़ा सकता है–
   (A) अपेक्षा के एक समान मानक सामने रखकर
   (B) अपने विद्यार्थियों से कोई अपेक्षा न रखते हुए
   (C) बहुत उच्च अपेक्षाएँ सामने रखकर
   (D) विद्यार्थियों से यथार्थवादी अपेक्षाएँ सामने रखकर
9. सिनेमा क्लिप को देखने के बाद कक्षा में छात्रों के अधिगम को सुनिश्चित करने की उपयुक्त विधि.....है।
   (A) प्रयोगशाला कार्य (B) कक्षा वार्तालाप
   (C) अधिन्यास लिखना (D) परियोजना कार्य
10. बच्चे के शिक्षण उपलब्धि के स्तर के बारे में निम्न में से कौन-सा अत्यधिक अविश्वसनीय भविष्य कथन है?
    (A) माता–पिता की भूमिका
    (B) क्लास में आचरण
    (C) सामाजिक–आर्थिक स्थिति
    (D) बच्चे की ऊँचाई और भार
11. वायगोत्सकी के सामाजिक विकास सिद्धान्त ने ..... की नींव रखी।
    (A) व्यवहारवाद
    (B) मानवतावाद
    (C) संरचनावाद
    (D) प्रभाव डालने का अनुकूलता सिद्धान्त
12. विद्यालयों में आजकल ज्यादा बल दिया जा रहा है–
    (A) रटने की प्रवृत्ति पर
    (B) मानसिक ज्ञान वृद्धि पर
    (C) ज्ञान संग्रह पर
    (D) समस्या समाधान पर
13. प्राथमिक स्तर पर इतिहास पढ़ाने की सबसे महत्वपूर्ण व प्रभावी शिक्षण विधि है–
    (A) कहानी कथन विधि
    (B) व्याख्यान विधि
    (C) परिचर्चा विधि
    (D) प्रश्नोत्तर विधि
14. शिक्षार्थी जो सीख चुके हैं, उसे दोहराने अथवा याद करने में सहायता करना महत्वपूर्ण है क्योंकि–
    (A) किसी भी कक्षा अनुदेश हेतु यही सुविधाजनक शुरुआत है
    (B) पूर्वज्ञान को नई जानकारी से जोड़ना अधिगम को बढ़ाता है
    (C) पुराने पाठों को दोहराने का यही प्रभावपूर्ण तरीका है
    (D) यह शिक्षार्थी की स्मृति को बढ़ाता है और इससे अधिगम को सशक्त बनाने में मदद मिलती है
15. एक अध्यापिका कक्षा में 'रामायण' पढ़ाना चाहती है। उसके द्वारा अपनाई जाने वाली विधि होनी चाहिए–
    (A) ह्यूरिस्टिक विधि
    (B) क्षेत्र–भूषण विधि
    (C) कहानी विधि
    (D) व्याख्यान विधि
16. अव्यक्त अथवा अन्तर्निहित संदेश जो विद्यार्थियों को विद्यालय में प्राप्त होते हैं निम्नलिखित में से कौन-सी पाठ्यचर्या कहलाती है?

(A) सुनिश्चित पाठ्यचर्या
(B) समेकित पाठ्यचर्या
(C) प्रच्छन्न या गुप्त पाठ्यचर्या
(D) कुण्डलित पाठ्यचर्या

17. प्राथमिक स्तर पर अंकगणित पढ़ाने की सबसे उपयुक्त शिक्षण विधि–
(A) खेल विधि (B) समीकरण विधि
(C) प्रदर्शन विधि (D) संश्लेषण विधि

18. रचनात्मकता (Creativity) सामान्यतः इससे जुड़ी होती है–
(A) अनुकरण (Imitation)
(B) अभिसार (Convergent) सोच
(C) अपसारित (Divergent) सोच
(D) प्रतिरूपण (Modelling)

19. ह्यूरिस्टिक विधि के जन्मदाता हैं–
(A) आर्मस्ट्रांग (B) किलपेट्रिक
(C) यूलर (D) फ्रॉबेल

20. हॉवर्ड गार्डनर के बहु-बुद्धिमत्ता सिद्धान्त के अनुसार, विद्यालयों में बुद्धिमत्ता के किस रूप का सम्मान नहीं किया जाता है?
(A) स्थानिक
(B) भाषा सम्बन्धी
(C) तार्किक
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

21. एक अध्यापिका ने क्षेत्रमिति पढ़ाना प्रारम्भ करते समय सबसे पहले सभी सूत्र श्यामपट्ट पर लिख दिए। इससे पता लगता है कि वह अनुसरण कर रही है–
(A) आगमन उपागम का
(B) निगमन उपागम का
(C) प्रायोगिक उपागम का
(D) व्यावहारिक उपागम का

22. भारत में वर्तमान शैक्षिक प्रणाली के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती..... है।
(A) वैश्विक तापमान
(B) शारीरिक दंड
(C) शिक्षा में समानता
(D) समावेशी शिक्षा

23. 'दीपावली त्योहार का समारोह' इस प्रोजेक्ट को पूर्ण करते समय बालकों के समूह ने काफी कुछ गणितीय कौशल सीखे। इस प्रकार का अधिगम कहा जायेगा–
(A) प्रासंगिक अधिगम
(B) औपचारिक अधिगम
(C) अनौपचारिक अधिगम
(D) गैर–औपचारिक अधिगम

24. वाक्यांश विद्यार्थियों की आवश्यकताओं' की व्याख्या करने में–
(A) सभी दार्शनिक समूह इस बात पर सहमत हैं कि शिक्षा को मूल रूप से विद्यार्थियों की स्व–अनुभूति आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए
(B) प्रयोगवादी कहते हैं कि आवश्यकताओं के अंतर्गत सम्भावित परिणामों के समझदारीपूर्ण विचार सम्मिलित होने चाहिए
(C) यथार्थवादी के अनुसार विद्यार्थी की आवश्यकताएँ उसकी उस क्षण की इच्छाएँ या संवेग होते हैं
(D) प्रयोजनवादी के अनुसार आवश्यकता वह होती है जो प्रौढ़ व्यक्ति अनुभव करते हैं कि विद्यार्थी के लिए अच्छी है

25. निम्नलिखित में से कौन-सा विशिष्ट अधिगम निःशक्तत्ता का उदाहरण है?
(A) पठनवैकल्य (Dyslexia)
(B) ए.डी.एच.डी.
(C) ऑटिस्टिक स्पैक्ट्रम विचार
(D) मानसिक मंदन

26. विज्ञान की एक अच्छी पाठ्य-पुस्तक की विशेषता है–
(A) अव्यवस्थित विषयवस्तु
(B) नवीनतम जानकारी का समावेश
(C) श्वेत–श्याम चित्रों (ब्लैक एण्ड ह्वाइट)
(D) महँगी पुस्तक

27. माध्यमिक स्तर पर सह–शिक्षा के बारे में 1952–53 शिक्षा आयोग ने सुझाव दिया है कि–
(A) शुरू करने के लिए, कई राज्यों द्वारा संसाधनों का वहन नहीं किया जा सकता है
(B) सहशिक्षा विद्यालय का विस्तार करने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए
(C) लड़कों और लड़कियों के लिए अलग स्कूल बनाए जाने चाहिए
(D) हमारे देश की परिस्थिति सहशिक्षा विद्यालय से अधिक लड़कों के स्कूलों की स्थापना की माँग कर रही है।

28. निम्नलिखित में से कौन-सा विज्ञान शिक्षकों द्वारा शिक्षा में लैंगिक पक्षपात की समस्या का समाधान करने के लिए किए गए प्रयासों का एक उदाहरण है?
(A) लड़कों को लड़कियों का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित करना
(B) लड़कियों को विज्ञान विषय में भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित करना
(C) लैंगिक मुद्दों पर बात करना
(D) पक्षपात की कहानियाँ सुनाना

29. एक आक्रामक, क्रोधी एवं विद्रोही प्रवृत्ति वाले छात्र से निपटने के लिए आप निम्नलिखित उपाय पर भरोसा करेंगे–
(A) स्वयं के व्यवहार का निश्चयीकरण एवं सुदृढ़ संतुलन
(B) उक्त छात्र के व्यवहार जैसा ही अपना व्यवहार बदल लेंगे
(C) आप छात्र के व्यवहार को नम्य बनाने का भरसक प्रयास करेंगे
(D) आप छात्र को उसके हाल पर छोड़ देंगे

30. सामाजिक अध्ययन विषय की एक अध्यापिका कक्षा आठ के विद्यार्थियों को 'मतदान प्रक्रिया' के बारे में पढ़ाना चाहती है। सबसे उपयुक्त विधि, जिसका उपयोग किया जाना चाहिए–
(A) आगमन-निगमन विधि
(B) पाठ्य–पुस्तक विधि
(C) प्रयोजना विधि
(D) डाल्टन विधि

31. ''शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक अभिवृद्धि का व्यवस्थित अध्ययन है।'' शिक्षा मनोविज्ञान की यह परिभाषा दी गई है–
(A) स्किनर द्वारा
(B) सी.वी. गुड द्वारा
(C) जे.एम. स्टीफन द्वारा
(D) सी.एच. जुड द्वारा

32. विद्यालयी पाठ्यचर्या का उद्देश्य होता है–
(A) भारतीय शिक्षा को एकरूपता प्रदान करना
(B) बच्चे को एक प्रभावी और अर्थपूर्ण जीवनयापन के लिए अपेक्षित कौशल प्रदान करना
(C) बच्चे को संघटित अर्थपूर्ण शैक्षिक अनुभूतियाँ प्रदान करना
(D) शैक्षिक उपलब्धि के मानक स्थापित करना

33. उपचारात्मक शिक्षा (Remedial teaching) का हेतु (purpose) है–
(A) नई भाषा-वस्तु को दाखिल (Introduce) करना
(B) तत्कालीन पढ़ाई वस्तु की कसौटी
(C) सही तरीके से न पढ़ाई गई भाषा वस्तु को फिर से पढ़ाना
(D) पढ़ाई गई भाषा वस्तुओं को फिर से पढ़ना

34. हरग्रीब्स ने विफल सुधारों पर साहित्य का संक्षिप्त विवरण दिया है। उन्होंने कहा है कि शैक्षिक परिवर्तन लड़खड़ा या विफल हो जाते हैं क्योंकि–
(A) परिवर्तन पूरी तरह से एक अवधारणा है या उसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित नहीं किया

गया है। यह जाहिर है किसे लाभ होगा और कैसे। छात्रों के लिए किस परिवर्तन को प्राप्त किया जाएगा, उसे बताया नहीं गया है।

(B) बदलाव बहुत ही व्यापक और महत्वाकांक्षी होते हैं ताकि शिक्षकों को कई मोर्चों पर काम करना पड़े या यह बहुत ही सीमित और विशिष्ट होते हैं ताकि कुछ वास्तविक परिवर्तन किया जा सके।

(C) निपटने के लिए परिवर्तन लोगों के लिए बहुत तीव्र होता है, या बहुत धीमा होता है जिससे लोग अधीर या बोर हो जाते हैं, और कुछ करने लगते हैं

(D) उपर्युक्त सभी

35. समावेशी भाषा क्या होती है?

(A) शिक्षा की भाषा जो छात्र की मातृभाषा के साथ मिलीजुली हो

(B) वह भाषा जो सरल हो और ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के शब्दों का उपयोग करती हो

(C) संयुक्त रूप से छात्रों द्वारा बोली जाने वाली सभी बोलियों का उपयोग

(D) किसी कक्षा में शिक्षक द्वारा शिक्षण के विभिन्न छात्रों द्वारा बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं का उपयोग

36. प्रायः शिक्षक होते हैं–

(A) निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि वाले

(B) निम्न आर्थिक आस्था वाले

(C) संकुचित विचारों वाले

(D) इनमें से कोई नहीं

37. शिक्षक-शिक्षा के दौरान, सूक्ष्म-शिक्षण निम्नलिखित में से किसकी ओर संकेत करता है?

(A) एक समय में कम विषय-वस्तु को पढ़ाना

(B) शिक्षक-प्रशिक्षक का बारीकी से अवलोकन करने के द्वारा शिक्षण

(C) ऐसी छोटी कक्षा को पढ़ाना जिसमें सहपाठी शिक्षार्थियों की भूमिका निर्वाह कर रहे हों

(D) छोटे समूहों में शिक्षार्थियों को पढ़ाना

38. शिक्षक क्लास में इसलिए प्रश्न पूछता है–

(A) विद्यार्थियों को व्यस्त रखने के लिए

(B) अनुशासन बनाये रखने के लिए

(C) विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए

(D) अध्यापन के लिए

39. यदि कोई छात्र दिए गए प्रश्नों का उत्तर न दे सके, तो–

(A) शिक्षक को उन्हें उत्तर देना चाहिए

(B) शिक्षक को अन्य छात्रों को पूछना चाहिए

(C) शिक्षक को छात्र को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए

(D) शिक्षक को छात्र को सजा (दण्ड) देना चाहिए

40. राज्य स्तर की एक एकल–गायन प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थियों को तैयार करते समय एक विद्यालय लड़कियों को वरीयता देता है। यह दर्शाता है–

(A) प्रयोजनात्मक उपागम

(B) प्रगतिशील चिंतन

(C) लैंगिक पूर्वाग्रह

(D) वैश्विक प्रवृत्तियाँ

41. विद्यार्थियों के अवांछनीय व्यवहार में बदलाव लाने के लिए सबसे समर्थ पद्धति है–

(A) विद्यार्थी को दंडित करना

(B) माता–पिता को सूचित करना

(C) अवांछनीय व्यवहार के कारणों को जानना और उनका उपाय बताना

(D) नजर अंदाज करना

42. यदि बालक अपने विज्ञान सम्बन्धी प्रयोगों में अथवा कथनों में स्पष्ट रूप से त्रुटियों का पता कर लेता है, तो बालक द्वारा प्राप्त उद्देश्य है–

(A) ज्ञानात्मक (B) अभिभावात्मक

(C) मनोक्रियात्मक (D) कौशलात्मक

43. विद्यार्थी को सही/उपयुक्त ज्ञान कैसे दिया जाता है?

(A) पाठ को याद करके

(B) पाठ को समझाकर

(C) विद्यार्थी को स्व–अध्ययन द्वारा

(D) रुचिकर तरीके से शिक्षण देकर

44. पियाजे के ज्ञान के संज्ञानात्मक सिद्धान्त के अनुसार, संज्ञानात्मक ढाँचे के रूपान्तरित होने की प्रक्रिया को कहते हैं–

(A) समायोजन (B) आत्मसात्करण

(C) रूपरेखा (D) बोध

45. ''स्पेअर द रॉड–स्पोईल द चाइल्ड'' (Spare the rod-spoil the child) यह धारणा इस प्रकार की शाखा से संबंधित है जिसका समर्थन किया है–

(A) नेचरालिस्ट फिलोसोफी ने

(B) प्रेगमेटीक फिलोसोफी ने

(C) विक्टोरियन युग में

(D) डेमोक्रेटिक युग में

46. विद्यालयों में खेल रखने का सबसे महत्वपूर्ण कारण है–

(A) विद्यार्थियों को मजबूत बनाना

(B) विद्यार्थियों को व्यस्त रखना

(C) विद्यार्थियों में सहयोग और शारीरिक समन्वय बढ़ाना

(D) विद्यार्थियों द्वारा खेलों की मांग किया जाना

47. एक प्रश्न–पत्र का निर्माण करने के पश्चात् अध्यापक यह जानना चाहता है कि क्या इससे उन विशिष्ट अधिगम उद्देश्यों का परीक्षण हो जाएगा, जो उस पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित किए गए थे। बताइये, वह अध्यापक निम्नलिखित में से किससे सम्बद्ध है?

(A) परीक्षण की वैधता

(B) विषय–वस्तु का विस्तार

(C) परीक्षण की विश्वसनीयता

(D) परीक्षण की वस्तुनिष्ठता

48. व्याख्यान विधि किस स्थिति में सर्वाधिक उपयुक्त विधि होगी?

(A) अभिरुचि के विकास और पाठ्य सामग्री के संपूरक के रूप में

(B) जब पाठ्य सामग्री का पूर्ण रूप से प्रतिपादन करना हो

(C) जब विवादास्पद विषयों को पढ़ाना हो

(D) उपद्रवी कक्षा का ध्यान आकृष्ट करने के लिए

49. शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 लागू नहीं होता–

(A) निःशक्त बच्चे

(B) 6-14 आयु वर्ग के बच्चे

(C) 14-18 आयु वर्ग के बच्चे

(D) बच्चों की नियमित उपस्थिति

50. दुनिया में विविध संस्कृतियों में नैतिक विकास कोहलबर्ग का सिद्धान्त से पता चला है–

(A) इस सिद्धान्त के लिए कोई सार्वभौमिक समर्थन नहीं है

(B) सिद्धान्त की सार्वभौमिकता के मामले में परस्पर विरोधी परिणाम है

(C) पहले चार चरणों की सार्वभौमिकता के लिए समर्थन मिलता है

(D) इनमें से कोई नहीं

51. निरपेक्ष श्रेणीकरण में बच्चों की निष्पत्ति के आकलन का संदर्भ बिंदु होता है?

(A) पूर्व निर्धारित मानक

(B) सामान्य संभावना वक्र के आधार पर निर्धारित मानक

(C) अंकों के आधार पर ऊपर से नीचे तक बराबर प्रतिशत श्रेणी में बाँट कर निर्धारित मानक

(D) विभिन्न ग्रेडिंग समूहों के लिए स्वेच्छा से चुने गए प्रतिशत श्रेणी के आधार पर निर्धारित मानक

52. मस्तिष्क की गतिविधियों को मापने की प्रमुख विधियाँ हैं–
(A) ई.आर.पी.
(B) एफ.एम.आर.आई.
(C) इ.ई.जी.
(D) उपरोक्त सभी

53. 'चक्षु–बाधित' V- श्रेणी के छात्र को
(A) निम्न स्तर के कार्यों से छूट मिलनी चाहिए
(B) अभिभावकों/मित्रों द्वारा उसके दैनिक कार्यों में मदद मिलनी चाहिए
(C) कक्षा में सामान्य व्यवहार किया जाना चाहिए तथा ऑडियो सीडी के माध्यम से सहायता दी जानी चाहिए
(D) कक्षा में विशेष व्यवहार किया जाना चाहिए

54. छात्रों में श्रम (मेहनत) की भावना विकसित करने के लिए एक शिक्षक को क्या करना चाहिए?
(A) मेहनत करने वाले लोगों का उदाहरण देना चाहिए
(B) शिक्षक को मेहनत के काम में लगाना चाहिए
(C) मेहनत के महत्व पर विस्तृत व्याख्यान देना चाहिए
(D) छात्रों को प्रायः मेहनत करने के मौके देने चाहिए।

55. आप एक कमजोर छात्र को कैसे पढ़ाएँगे?
(A) उन्हें हर दिन हर एक नई किताब देकर
(B) उन्हें बुद्धिमान छात्र के साथ पढ़ाना चाहिए
(C) उन्हें अलग से समय देकर पढ़ाना चाहिए
(D) उन्हें कहना चाहिए कि उसको कठिन परिश्रम करके सफल होना चाहिए

56. विद्यार्थियों को गृह काम देने का यह फायदा है–
(A) वे घर में व्यस्त रहते हैं
(B) घर में पढ़ाई करते हैं
(C) उनकी प्रगति घरवाले जाँच सकें
(D) स्व–अध्ययन की आदत डाल सकें

57. निम्न में कौन बाकी तीन के समूह से संबंधित नहीं है?
(A) तर्कसंगत वैधता (B) संरचना वैधता
(C) प्रतिदर्श वैधता (D) पाठ्यक्रमी वैधता

58. निम्नलिखित में से वह कौन–सा है जिसे ब्रिटिश काल में भारतीय शिक्षा का मैग्ना कार्टा (महा-अधिकार अभिलेख) समझा जाता है?
(A) सार्जेंट आयोग (B) मैकाले मिनट
(C) वुड्स डिस्पैच (D) हंटर आयोग

59. यदि विद्यालयों को समाज की अपेक्षाओं पर खरा उतरना है तो नीचे दिए गए कथनों में से तीन कथन ऐसे हैं जिन्हें अध्यापकों को अनिवार्य रूप से करना चाहिए। जो नहीं करना चाहिए वह कौन–सा है?
(A) उन्हें चाहिए कि विद्यालय को प्रौढ़ समाज की एक प्रतिकृति का रूप प्रदान करें
(B) उन्हें विद्यालयों की सांस्कृतिक धरोहर को जानना चाहिए
(C) उन्हें चाहिए कि विद्यालयी क्रियाकलाप को सांस्कृतिक प्रतिरूपों से संबंधित करें
(D) उन्हें चाहिए कि व्यवहार को सामाजिक अन्योन्य क्रिया के लिए निर्देशित करें और उसका रिकॉर्ड रखें

60. ई.सी.एम. .....के विकासात्मक सिद्धान्त में दोनों व्यावहारिक और संज्ञानात्मक दृष्टिकोण को स्थापित करता है।
(A) सामाजिक अधिग्रहण
(B) भाषा अधिग्रहण
(C) विविधता
(D) आचार संहिता

61. निम्नलिखित में से आट्टवे के शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन संबंधी कौन-सा विचार था?
(A) शिक्षा समाज को परिवर्तित करती है।
(B) शैक्षिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन के बाद आता है
(C) शैक्षिक परिवर्तन और सामाजिक परिवर्तन एक दूसरे से स्वतंत्र हैं
(D) शैक्षिक परिवर्तन और सामाजिक परिवर्तन अन्तर–आश्रित हैं, मगर यह निश्चित नहीं किया जा सकता कि इनमें से कौन-सा कारण है और कौन-सा उस कारण का प्रभाव है

62. निम्न में से कौन–सा कथन सही नहीं है?
(A) वह विशेषता चर होगी जिसका मानक विचलन का मान शून्य से अधिक हो
(B) शोध के शीर्षक में चर, जनसंख्या और शोध विधि प्रदर्शित होने चाहिए
(C) पूर्ण जनसंख्या के प्रदत्तों के आधार पर प्राचल की गणना की जाती है
(D) न्यादर्श के संदर्भ में प्राचल और सांख्यिकी में कोई अंतर नहीं है

63. **सूची–I**

(शब्दावली)

a. मानक विचलन
b. चतुर्थक
c. प्राप्तांक विचलन
d. माध्य विचलन

सूची–II

(संकल्पना)

1. मध्यमान तथा किसी प्राप्तांक अंतर
2. सर्वाधिक तथा सर्वाल्प प्राप्तांक
3. सभी विचलनों का मध्यमान
4. वर्गमूल माध्यवर्ग विचलन
5. अर्द्ध–चतुर्थांक अंतर

	a	b	c	d
(A)	2	4	1	3
(B)	3	1	5	2
(C)	5	3	4	1
(D)	4	5	1	3

64. भाषा के संबंध में कोठारी आयोग द्वारा सिफारिश की नई नीति है–
(A) त्रिभाषा सूत्र (B) द्विभाषा सूत्र
(C) हिंदी (D) मातृभाषा

65. निम्नलिखित में से किस दर्शन के सिद्धान्त चार आर्य सत्यों पर आधारित हैं?
(A) सांख्य (B) वेदान्त
(C) बौद्ध मत (D) जैन मत

66. किसी के व्यक्तित्व में अपनी खुद की संस्कृति के आत्मसातीकरण की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) सांस्कृतीकरण
(B) परसंस्कृतीकरण
(C) समाजीकरण
(D) संस्कृतीकरण

67. सूची–I दार्शनिक और दर्शन के नाम हैं जबकि सूची–II में उस दर्शन संबंधी दार्शनिक के कथन हैं। सूची–I को सूची–II से सुमेलित कीजिए–

सूची–I

a. टैगोर
b. विवेकानन्द
c. महात्मा गाँधी
d. बौद्ध धर्म

सूची–II

1. व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास
2. कर्म सिद्धान्त
3. सभी प्रकार की पुस्तकों से बालक अधिक महत्वपूर्ण है
4. योग शिक्षा के माध्यम के रूप में
5. धर्म सिद्धान्त

कोड :

	a	b	c	d
(A)	5	1	2	4
(B)	3	4	1	2
(C)	3	4	2	5
(D)	4	2	1	3

68. जीवन के नैतिक मूल्य, दर्शन की किस समस्या से संबंधित?
(A) तत्वशास्त्र (B) ज्ञानशास्त्र
(C) मूल्यशास्त्र (D) विश्वशास्त्र

69. सोक्रेटिक विधि आधारित है–
(A) आज्ञापन (B) परिचर्चा
(C) वार्तालाप (D) प्रश्न पूछना

70. प्रवज्जा समारोह का अर्थ है।
(A) बौद्ध बिहार में प्रवेश
(B) जैन समारोह
(C) यज्ञ का समारोह
(D) गुरुकुल में प्रवेश

71. वेदांत सूत्र : ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या का शैक्षिक निहितार्थ क्या है?
(A) व्यक्तिगत सत्य की खोज शिक्षा का चरम लक्ष्य है
(B) हर प्रकार की शिक्षा का अंतिम उद्देश्य आध्यात्मिकता है
(C) छात्रों को दुनियादारी का परित्याग करने की हिदायत देनी चाहिए
(D) शिष्यों को गुरु के आदर्श का अनुसरण करना चाहिए

72. कौन–सा दर्शन आचरण के पाँच सिद्धान्तों (सत्य, अस्तेय, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) पर विश्वास करता है?
(A) बौद्ध दर्शन (B) जैन दर्शन
(C) वैदिक दर्शन (D) इस्लाम दर्शन

73. ''प्रकृति और अनुभव को अपना निर्देशक बनने दो।'' यह कथन निम्न में से किसका घोषित सूत्र है?
(A) व्यवहारवाद (B) यथार्थवाद
(C) प्रकृतिवाद (D) अस्तित्ववाद

74. शिक्षा की औपचारिक संस्थाएँ अस्तित्व में आने का कारण क्या है?
(A) समाज अत्यधिक संलिष्ट हो गया और संस्कृति में विशिष्ट अभिव्यक्ति विकसित हो गई
(B) एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान का रूपान्तरीकरण समाज के लिए आवश्यक हो गया
(C) समाज और संस्कृति समय के साथ एकत्र हो गए
(D) समाज समझ गया कि हर व्यक्ति समाज के विकास में योगदान देता है।

75. निम्न में से फ्रॉयड के सिद्धान्त में कौन–सा नहीं है?
(A) आत्मपीड़न
(B) पर पीड़न
(C) निर्जीव को जीव में देखना
(D) स्वाप्रेम

76. "बुद्धिमत्ता की ओर अग्रसर ज्ञान सही शिक्षा है" यह कथन है–
(A) ऋग्वेद का
(B) छान्दोग्य उपनिषद का
(C) सामवेद का
(D) भगवद् गीता का

77. निम्नलिखित में से किस दर्शन का व्यक्तिवाद की ओर झुकाव है?
(A) जैन
(B) सांख्य
(C) बौद्ध
(D) इनमें से कोई नहीं

78. कक्षा में व्यक्ति भेद का ज्ञान अध्यापक को मदद करता है–
(A) कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के लिए
(B) विद्यार्थियों का गृहकार्य का मूल्यांकन करने के लिए
(C) अध्ययन/अध्यापन कार्य की योजना बनाने के लिए
(D) कक्षा में आवश्यक व्यवस्था करने के लिए

79. ''वरण–स्वातंत्र्य व्यक्ति के लिए सर्वोच्च मूल्य है।'' इस विचार में तात्पर्य क्या है?
(A) यदि आप स्वतंत्र नहीं हैं, आप वरण नहीं कर सकते
(B) विचार की स्वतंत्रता के बिना उत्तम जीवन असंभव है
(C) स्वतंत्र वरण वास्तविक वरण है
(D) मनुष्य के जीवन में सभी प्रकार के अज्ञान से मुक्ति से बेहतर और कुछ नहीं है

80. शिक्षा में अवसरों की समानता कैसे संभव है?
(A) बिना किसी भेदभाव के शैक्षिक संस्थाओं के द्वार सभी के लिए खोलना
(B) और अधिक शैक्षिक संस्थान खोलना
(C) देश में शिक्षा प्रणाली का निजीकरण करना
(D) शिक्षा का लोक वित्तीकरण

81. राष्ट्रीय एकता के विकास में कौन बाधक तत्व नहीं है ?
(A) जातिवाद (B) साम्प्रदायिकता
(C) भाषावाद (D) चरित्र का निर्माण

82. इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी–
(A) सन् 1902 ई. में (B) सन् 1882 ई. में
(C) सन् 1887 ई. में (D) सन् 1885 ई. में

83. संविधान की किस अनुच्छेद से धर्मनिरपेक्षता का संबंध है?
(A) धारा 15 (B) धारा 28
(C) धारा 20 (D) धारा 25

84. वैदिक युग की शिक्षा मुख्य रूप से आधारित थी–
(A) गीता और रामायण पर
(B) कर्मकांड पर
(C) शिक्षकों की इच्छा पर
(D) वेदों पर

85. चेस तथा कार्ड को निम्न में किसमें वर्गीकृत किया जा सकता है?
(A) लड़ाई वाले खेल
(B) बौद्धिक खेल
(C) प्रायोगिक खेल
(D) गतिमान खेल

86. समस्त समूह के द्वारा प्रदर्शित किए जाने वाले कार्य का नमूना होता है–
(A) प्रतिमान (B) मानक
(C) मूल प्राप्तांक (D) अन्यमनस्क

87. अनौपचारिक शिक्षा का साधन नहीं है–
(A) सिनेमाघर (B) कक्षा शिक्षण
(C) टी. वी. (D) परिवार

88. 'तिसिवरा' एक पहनावा था–
(A) वैदिक शिक्षा प्रणाली
(B) मुस्लिम शिक्षा प्रणाली
(C) बौद्ध शिक्षा प्रणाली
(D) मिशनरियों की शिक्षा

89. कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग का अध्यक्ष कौन था?
(A) फिलिप हर्टांग
(B) जॉन क्रिस्टी
(C) डॉ. माइकेल सैडलर
(D) डॉ. ग्रेगरी

90. 'प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण' (T.A.T.) में कुल कितने कार्ड होते हैं ?
(A) 30 (B) 31
(C) 35 (D) 36

91. मूल्यांकन किया जाना चाहिए–
(A) मूल्यांकन से बच्चे पढ़ेंगे
(B) पता लगता है बच्चों की उपलब्धि का
(C) बच्चों के सीखने के स्तर का ज्ञान होता है
(D) शिक्षकों की उपलब्धि का पता लगता है

92. कैटल द्वारा बनाए गए प्रश्नावली उपकरण का नाम है–
(A) 16 पी. एफ. प्रश्नावली
(B) 20 पी. एफ. प्रश्नावली
(C) व्यक्तित्व अनुसूची
(D) व्यक्तित्व प्रश्नावली

93. शिक्षा में मूल्यांकन से अभिप्राय है–
(A) योग्यताओं को अंक प्रदान करना
(B) पाठ्यवस्तु की रचना
(C) प्रतिमा–निर्देश
(D) व्यवसाय–निर्धारण

94. राज्य शिक्षा का साधन है–
(A) औपचारिक
(B) अनौपचारिक
(C) औपचारिकेतर
(D) इनमें से कोई नहीं

95. उत्तर प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में निजी प्रबंधनों द्वारा अंग्रेजी माध्यम के समानांतर प्राथमिक विद्यालय क्यों चलाए जा रहे हैं?
(A) शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हैं
(B) शिक्षक किसी–न–किसी राजनैतिक दल द्वारा संरक्षण प्राप्त हैं
(C) निजी प्रबंधन शिक्षकों को बेहतर नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण में रखते हैं
(D) हिंदी माध्यम के विद्यालय शिक्षा–शुल्क नहीं लेते हैं।

96. 'शैक्षिक समाजशास्त्र' अध्ययन है–
(A) समाज में मानव आवश्यकताओं का
(B) शिक्षा व समाज के सम्बन्ध का
(C) मानव समाज के प्रकारों का
(D) समाज में परम्परागत शिक्षा का

97. त्रिभाषा-सूत्र इसलिए सुझाया गया है–
(A) संस्कृति के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए
(B) उर्दू भाषा के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए
(C) मातृभाषा के अतिरिक्त किसी एक अन्य भारतीय भाषा के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए
(D) अंग्रेजी के अतिरिक्त किसी अन्य आधुनिक यूरोपियन भाषा के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए

98. वैदिक काल में गुरुकुलों में शिष्यों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता था?
(A) गुरु अपने कार्य के लिए उनका शोषण किया करते थे।
(B) उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था।
(C) उन्हें दण्ड दिया जाता था।
(D) उनके साथ पुत्र जैसा व्यवहार किया जाता था।

99. इनमें से कौन पाठ्यचर्या (NCF) 2005 का मार्गदर्शी सिद्धान्त नहीं है?
(A) ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना
(B) पढ़ाई को रटन्त प्रणाली से मुक्त कराना
(C) अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देना
(D) बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर उपलब्ध करना

100. विश्वविद्यालय आयोग (1948-49) के अध्यक्ष थे–
(A) जाकिर हुसैन
(B) राधाकृष्णन
(C) कोठारी
(D) मुदालियर

101. प्रौढ़ों को जो पढ़ाया जाता है उसे वे न भूलें, यह देखने के लिए प्रौढ़–साक्षरता कार्यक्रम में कौन–सा कार्य किया जाना चाहिए?
(A) प्रवचनों की व्यवस्था करना
(B) इसे प्रासंगिक बनाना
(C) प्रयोग एवं भूल पद्धति का उपयोग करना
(D) शिक्षा कार्यक्रम को जारी रखे रहना

102. स्थानीय स्वायत्त शासन की कौन–सी संस्था उत्तर प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में प्राथमिक विद्यालय चलाने के लिए उत्तरदायी है?
(A) ग्राम पंचायत (B) जिला परिषद्
(C) क्षेत्र समिति (D) शिक्षा निदेशालय

103. 'सिद्धिरस्तु' नामक पुस्तक पढ़ायी जाती थी–
(A) प्राथमिक शिक्षा स्तर पर
(B) पूर्व प्राथमिक शिक्षा स्तर पर
(C) उच्च शिक्षा स्तर पर
(D) माध्यमिक शिक्षा स्तर पर

104. ऑपरेशन 'ब्लैक बोर्ड' का तात्पर्य है–
(A) विद्यालय में 'श्यामट्ट' की सुविधा देना
(B) विद्यालय में भवन की सुविधा देना
(C) विद्यालय में शिक्षकों को सुविधा देना
(D) विद्यालय की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करना

105. गैर-औपचारिक शिक्षा की आवश्यता क्यों है?
(A) वास्तविक शिक्षा की दिशा में आँखें खोलने हेतु
(B) विपक्षी दल को संतुष्ट करने हेतु
(C) औपचारिक संस्थाएँ अपने यहाँ भर्ती कराने की भीड़ को सँभाल पाने में असमर्थ हैं
(D) इनमें से कोई नहीं

106. विकास के किस काल को 'अत्यधिक दबाव और तनाव का काल' कहा गया है?
(A) किशोरावस्था
(B) प्रौढ़ावस्था
(C) मध्यावस्था
(D) वृद्धावस्था

107. रचनात्मक लेख का नियोजन होना चाहिए–
(A) केवल उन छात्रों के लिए जो कक्षा स्तर पर पढ़ते हैं।
(B) केवल उन छात्रों के लिए जो लम्बे वाक्य को लिख सकते हैं।
(C) केवल उन छात्रों के लिए जो समाचार–पत्रों के लिए लिखना चाहते हैं
(D) सभी छात्रों के लिए

108. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–

	सूची–I	सूची–II
a.	रिपब्लिक	1. जॉन डीवी
b.	एमिल एण्ड एजुकेशन	2. दयानन्द सरस्वती
c.	दि स्कूल एण्ड सोसायटी	3. प्लेटो
d.	संध्या विधि	4. रूसो

कूट :

	a	b	c	d
(A)	3	4	1	2
(B)	4	3	1	2
(C)	2	1	4	3
(D)	1	2	3	4

109. 'यह वितरण के औसत से सब विचलनों के वर्गों के वर्गमूल है।' इसको क्या कहते हैं ?
(A) मध्यमान
(B) मध्यांक
(C) मानक विचलन
(D) चतुर्थांश विचलन

110. व्यक्तित्व से क्या तात्पर्य है ?
(A) व्यक्ति के चेहरे की बनावट
(B) व्यक्ति का सौन्दर्य
(C) मनुष्य के आंतरिक तथा बाह्यगुणों का रूप
(D) इनमें से कोई नहीं।

111. कर्टलेविन के अनुसार, समूह में जो परिवर्तन होते हैं, उन्हें.....।
(A) परस्परता कहते हैं
(B) रचनात्मकता कहते हैं
(C) गतिशीलता कहते हैं
(D) संगति कहते हैं

112. निम्न में से कौन अधिगमकर्ता को अधिक स्वतन्त्रता देता है ?
(A) संरचनावाद
(B) क्रियाशीलतावाद
(C) व्यवहारवाद
(D) सृजनशीलतावाद

113. निम्न में से कौन–सा स्टर्नबर्ग का बुद्धि का त्रिस्तरीय सिद्धान्त का एक रूप है?
(A) व्यावहारिक बुद्धि
(B) प्रायोगिक बुद्धि
(C) संसाधनपूर्ण बुद्धि
(D) गणितीय बुद्धि

114. एक बच्चा जो.....से ग्रस्त है, वह 'saw' और 'was' 'nuclear' और 'unclear' में अन्तर नहीं कर सकता।
(A) शब्द 'जम्बलिंग' विकार
(B) डिस्लेक्सिमिया
(C) डिस्मोरफीमिया
(D) डिस्लेक्सिया

115. ''अधिगम प्रत्यक्ष है, विचारों की मध्यस्थता नहीं होती'' यह कथन जुड़ा है–
(A) थॉर्नडाइक (B) वाटसन
(C) पॉवलॉव (D) कोहलर

116. क्रियानुसंधान (Action Research) क्या है ?
(A) ऐसा अनुसंधान जिसमें कार्य करना पड़ता है।
(B) यह अनुसंधान का प्रयोगात्मक उपयोग है।
(C) इसमें वैज्ञानिक विधि से समझने का अध्ययन किया जाता है।
(D) ऐसा अनुसंधान जो पैसा लेकर किया जाता है।

117. भारतवर्ष 'बुनियादी शिक्षा' की योजना किसके आदर्शों के आधार पर बनाई गई ?
(A) महात्मा गाँधी
(B) रबीन्द्रनाथ टैगोर
(C) सर्वपल्ली राधाकृष्णन
(D) जवाहरलाल नेहरू

118. निम्नलिखित का मध्यांक (Median) क्या है ?
2, 4, 2, 2, 11, 12, 13, 16, 10
(A) 8 (B) 6
(C) 2 (D) 10

119. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 दस्तावेज में भाषा के लिए निहित है–
(A) एकभाषा (B) द्विभाषा
(C) तीनभाषा (D) बहुभाषा

120. सहसंबंध (Correlation) क्या है ?
(A) दो पद मालाओं के वर्ग का अंतर है।
(B) दो चर राशियों में पाया जाने वाला संयुक्त संबंध है।
(C) दो जीवों का पारस्परिक संबंध है।
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

121. अध्वर्यु :
(A) यज्ञ कराता था।
(B) यज्ञ के समय मंत्र पढ़ता था।
(C) यज्ञ की वेदी का निर्माण करता था और दूसरे शारीरिक श्रम करता था।
(D) उपर्युक्त में से कुछ नहीं करता था।

122. बोर्ड ऑफ हाईस्कूल एण्ड इण्टरमीडिएट एक्ट कब पास हुआ ?
(A) सन् 1925 ई. में (B) सन् 1921 ई. में
(C) सन् 1930 ई. में (D) सन् 1939 ई. में

123. विद्यालय–आधारित आकलन प्रारम्भ किया गया था ताकि–
(A) राष्ट्र में विद्यालयी शिक्षा संगठनों (Boards) शक्ति का विकेन्द्रीकरण किया जा सके।
(B) सभी विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास को निश्चित किया जा सके।
(C) विद्यार्थियों की उन्नति की बेहतर व्याख्या के लिए उनकी सभी गतिविधियों के नियमित अभिलेखन हेतु अध्यापकों को अभिप्रेरित किया जा सके।
(D) विद्यालय अपने क्षेत्रों में विद्यमान अन्य विभिन्न विद्यालयों की तुलना में प्रतियोगिता द्वारा अपनी विशिष्टता का प्रदर्शन करने हेतु अभिप्रेरित हो सकें।

124. भारतीय संदर्भ में शिक्षा की सहायता से सामाजिक परिवर्तन लाने में सबसे बड़ी बाधा किस तथ्य से सम्बन्धित है ?
(A) नृजातीयता
(B) धर्म
(C) क्षेत्रवाद
(D) विभिन्न प्रकार की विविधताएँ

125. कक्षा में भूमिका द्वन्द्व, सहयोग और प्रतिस्पर्धा का अध्ययन का सम्बन्ध किससे होगा?
(A) पेशेवर और नैतिक नीतिशास्त्र
(B) शान्ति शिक्षा
(C) शिक्षा का समाजशास्त्र
(D) शैक्षिक मनोविज्ञान

व्याख्यात्मक हल

1. (D) भारत में शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए गुणवत्तापूर्ण डिजिटल विषय–सूची तैयार करने के लिए भारत सरकार द्वारा की गयी पहल में निम्न शामिल है–
(i) साक्षात–सर्वांगीण शिक्षा के लिए भारत सरकार का निःशुल्क पोर्टल
(ii) प्रौद्योगिकी के बल पर बेहतर सीखने सम्बन्धी राष्ट्रीय कार्यक्रम
(iii) सीखने और ऑनलाइन शिक्षण के लिए मल्टीमीडिया शैक्षणिक संसाधन
(iv) ई–पाठशाला जो विद्यालय शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के सभी स्तरों पर डिजिटल योग्य संसाधनों का एक साथ उपयोग।

2. (C) जेम्स और प्राउट द्वारा उल्लिखित प्रतिमान की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं–
- बच्चों को समाज का निर्माण माना जाता है।
- बचपन सामाजिक विश्लेषण का एक चर है।
- बच्चे को सक्रिय सामाजिक एजेंट के रूप में देखा जाना चाहिए।
- बचपन अनेक सामाजिक–सांस्कृतिक संबंधों को ग्रहण करता है।
- बचपन सक्रिय सामाजिक निर्माणाधीन अवस्था में है।

3. (B) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE) 1986 के तहत स्कूलों में खेल और शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत योग शिक्षा को शामिल किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 के अनुसार– 'शरीर और मन के समेकित विकास के साधन के रूप में योग शिक्षा पर विशेष बल दिया जायेगा। सभी विद्यालयों में योग की शिक्षा की व्यवस्था के लिए प्रयास किये जायेंगे और इस दृष्टि से शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में योग की शिक्षा भी सम्मिलित की जायेगी।'

4. (B) एक शिक्षक को ऐसे छात्र जो शरारती हैं तथा मदमत्त पदार्थ लेते हैं उनके व्यवहारों में सुधार लाने के लिए उन्हें उसकी हरकतों से होने वाले रोगों से अवगत कराये और बाद में उन्हें शिक्षा देनी चाहिए।

5. (C) यदि मोहन खिलौनों के घटकों के अन्वेषण के लिए उन्हें तोड़कर अलग–अलग कर देता है तो हमें उसके स्वभाव को प्रोत्साहित करते हुए उसकी ऊर्जा को सही दिशा प्रदान करनी चाहिए क्योंकि बच्चे जन्मजात जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं। उनकी यह जिज्ञासा उनके अधिगम में सहायक होती है तथा उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करती है।

6. (B) पुरुष या स्त्री का सामाजिक कर्त्तव्य निभाना उत्तर बचपन के लिए उपयुक्त नहीं है जबकि सामान्य खेलों के शारीरिक कौशल का अधिगम, वैयक्तिक स्वातन्त्र्य प्राप्त करना तथा अपने सम उमर वालों का साथ निभाना आदि उत्तर बचपनावस्था के लिए उपयुक्त है।

ध्यातव्य है कि उत्तर बचपन की अवस्था 9–12 वर्ष की आयु तक को माना जाता है। इस उम्र में बालक अपने समूह को महत्व देने लगता है तथा सामूहिक खेलों आदि में रुचि लेता है।

7. (C) 'किन्डर गार्टन' पद का अर्थ है बच्चों का स्कूल। किन्डर गार्टन पद का प्रतिपादन फ्रेडरिक फ्रोबेल ने किया था। किन्डर गार्टन का शाब्दिक अर्थ है 'बच्चों का बगीचा'। फ्रोबेल ने बालक को पौधा, स्कूल को बाग तथा शिक्षक को माली की संज्ञा देते हुए कहा है कि विद्यालय एक बाग है, जिसमें बालक रूपी पौधा शिक्षक रूपी माली की देखरेख में अपने आंतरिक नियमों के अनुसार स्वाभाविक रूप से विकसित होता रहता है। माली की भाँति शिक्षक का कार्य अनुकूल वातावरण प्रस्तुत करना है, जिससे बालक का स्वाभाविक विकास हो सके।

8. (D) अभिप्रेरणा के सिद्धांतों के अनुसार एक शिक्षक विद्यार्थियों की योग्यता के अनुरूप उनसे यथार्थवादी अपेक्षाएँ सामने रखकर ज्ञान को बढ़ा सकता है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों से उच्च अपेक्षाएँ रखता है तो शिक्षार्थी उसकी अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य नहीं कर सकेंगे जिससे उनमें कुण्ठा की भावना उत्पन्न होगी। इसी प्रकार निम्न अपेक्षाएँ भी उन्हें उपलब्धि प्राप्त करने में हतोत्साहित करेंगी।

9. (C) कक्षा में किसी सिनेमा के क्लिप दिखाने के बाद विद्यार्थियों में अधिगम को सुनिश्चित करने के लिए सबसे उपयुक्त तरीका अधिन्यास (Assignment) लिखने के लिए देना है। अधिन्यास लिखने में वे अपने अर्जित ज्ञान तथा अनुभव का प्रयोग करेंगे।

10. (D) बच्चे के शिक्षण उपलब्धि के स्तर के बारे में बच्चे की ऊँचाई और भार अत्यधिक अविश्वसनीय भविष्य कथन है। बच्चे की उपलब्धि स्तर पर बच्चे की ऊँचाई और भार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। बच्चे के शिक्षण उपलब्धि पर उसके माता–पिता की भूमिका, क्लास में आचरण, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, विद्यालय का वातावरण, मानसिक योग्यता आदि का प्रभाव पड़ता है।

11. (C) वायगोत्सकी के सामाजिक विकास सिद्धांत ने संरचनावाद की नींव रखी। जीन पियाजे की तरह वायगोत्सकी भी मानते हैं कि 'बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं।'

12. (B) विद्यालयों में आजकल मानसिक ज्ञान वृद्धि पर बल दिया जा रहा है। मानसिक ज्ञान वृद्धि होने पर बालक समस्याओं का शीघ्रता से समाधान, सामाजिक समायोजन जैसी क्रियाओं को शीघ्र कर लेता है।

13. (A) प्राथमिक स्तर पर इतिहास पढ़ाने की सबसे महत्वपूर्ण व प्रभावी शिक्षण विधि कहानी कथन विधि है। कहानी के द्वारा बालक की न केवल कल्पना शक्ति का विकास होता है वरन् वे गम्भीर से गम्भीर विचारों व समस्याओं को रोचक तरीके से सहजता से समझ लेते हैं। कहानी से विषय-वस्तु बोधगम्य हो जाती है। उच्च कक्षाओं में भी इसका प्रयोग सम्भव हो सकता है।

14. (B) शिक्षार्थी जो सीख चुके हैं, उसे दोहराने अथवा याद करने में सहायता करना महत्वपूर्ण है क्योंकि पूर्वज्ञान को नई जानकारी से जोड़ना अधिगम को बढ़ाता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान शिक्षक पाठ को पढ़ाने से पहले बच्चों से प्रस्तावनात्मक प्रश्न करता है ताकि उनके पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ते हुए प्रस्तुत कर सके। इस प्रक्रिया से बच्चे नवीन ज्ञान का सहजतापूर्ण अधिगम कर लेते हैं।

15. (C) यदि कोई अध्यापिका कक्षा में 'रामायण' पढ़ाना चाहती है तो उसके द्वारा अपनायी जाने वाली सर्वाधिक उचित विधि होगी, कहानी विधि। कहानी विधि में किसी विषय-वस्तु को कहानी के माध्यम से पढ़ाया जाता है तथा बच्चों को सक्रिय रखने के लिए बीच-बीच में प्रश्न पूछा जाता है। चूँकि रामायण से सम्बन्धित पात्रों के बारे में सभी छात्र कुछ-न-कुछ अवश्य जानते रहते हैं इसलिए रामायण को कहानी के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है।

16. (C) **प्रच्छन्न या गुप्त पाठ्यचर्या**–अव्यक्त अथवा अन्तर्निहित संदेश जो विद्यार्थियों को विद्यालय में प्राप्त होते हैं तथा जिनका पाठ्यचर्या में सीधे तौर पर उल्लेख नहीं रहता है, ऐसी पाठ्यचर्या प्रच्छन्न या गुप्त पाठ्यचर्या कहलाती है।

17. (A) प्राथमिक स्तर पर अंकगणित पढ़ाने की सबसे उपयुक्त शिक्षण विधि खेल विधि है। खेल विधि के माध्यम से पढ़ाने से विद्यार्थियों का ज्ञान अधिक स्थायी होता है, क्योंकि यह प्रायोगिक तरीके से सम्पन्न कराई जाती है। इस विधि से गणना करना, जोड़-बाकी करना आदि सिखाया जा सकता है।

18. (C) रचनात्मकता अपसारित (Divergent) सोच से जुड़ी होती है। अपसारित सोच विचार की एक प्रक्रिया या उपाय है जो बहुत सारे संभावित समाधानों की खोज रचनात्मक विचारों को उत्पन्न करने के साथ करती है।

19. (A) ह्यूरिस्टिक विधि के जन्मदाता प्रो. एच. ई. आर्मस्ट्रांग माने जाते हैं। उन्होंने ह्यूरिस्टिक विधि को परिभाषित करते हुए कहा–"बालकों को जितना कम-से-कम सम्भव हो उतना बताया जाए और जितना अधिक-से-अधिक सम्भव हो उतना खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।"

20. (A) हावर्ड गार्डनर के बहु–बुद्धिमत्ता सिद्धांत के अनुसार, विद्यालयों में बुद्धिमत्ता के स्थानिक रूप का सम्मान नहीं किया जाता है। हावर्ड गार्डनर के बहु–बुद्धि सिद्धांत के अनुसार स्थानिक बुद्धि से तात्पर्य स्थानिक चित्रण व कल्पनाशक्ति से है। इनके अनुसार विद्यालयों में प्रायः पाठ्य-वस्तु को पारम्परिक तरीके से पढ़ाने पर जोर दिया जाता है जिसमें बच्चों की कल्पनात्मकता, सृजनात्मकता आदि की उपेक्षा होती है।

21. (B) यदि अध्यापिका ने क्षेत्रमिति पढ़ाना प्रारम्भ करते समय सबसे पहले सभी सूत्र श्यामपट्ट पर लिख दिये हैं तो इससे पता लगता है कि वह निगमन उपागम का अनुसरण कर रही है। निगमन उपागम में 'सामान्यीकरण से विशिष्ट की ओर' तथा 'सूक्ष्म से स्थूल की ओर' शिक्षण सूत्रों का प्रयोग किया जाता है। इस उपागम में पहले नियम बताये जाते हैं फिर उससे सम्बन्धित उदाहरणों को प्रस्तुत किया जाता है। इस उपागम का प्रयोग सामान्यतः ऊँची कक्षाओं के लिए किया जाता है।

22. (C) भारत में वर्तमान शैक्षिक प्रणाली के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती शिक्षा में समानता है। यद्यपि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पहुँच को बढ़ाने और भागीदारी की दृष्टि से भारत ने महत्वपूर्ण प्रगति की है फिर भी देश में शिक्षा के विकास की सम्पूर्ण स्थिति मिली–जुली रही है। वर्तमान में शिक्षा तक पहुँच और भागीदारी, प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा में समता, व्यवस्थागत कार्यकुशलता, प्रशासन एवं प्रबंधन आदि वर्तमान शिक्षा की चुनौतियाँ हैं।

23. (A) 'यदि दीपावली त्योहार का समारोह' इस प्रोजेक्ट के पूर्ण करते समय बालकों के

समूह ने काफी कुछ गणितीय कौशल सीख लिया है तो इस प्रकार का अधिगम प्रासंगिक अधिगम कहा जायेगा। प्रासंगिक अधिगम किसी विषय के साथ सीखा गया वह कौशल होता है जो उस विषय से प्रत्यक्ष रूप से नहीं जुड़े होते हैं।

24. (A) 'विद्यार्थी की आवश्यकताओं' की व्याख्या करने में सभी दार्शनिक समूह इस बात पर सहमत हैं कि शिक्षा को मूल रूप से विद्यार्थियों की स्व–अनुभूत आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए।

25. (A) पठनवैकल्य (डिस्लेक्सिया) को भाषायी और सांकेतिक कोडों और भाषा की ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करने वाले वर्णमाला के अक्षरों या संख्याओं का प्रतिनिधित्व कर रहे अंकों के संसाधन में होने वाली कठिनाई के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह भाषा के लिखित रूप, मौखिक रूप एवं भाषायी दक्षता को प्रभावित करता है।

26. (B) विज्ञान की एक अच्छी पाठ्य-पुस्तक की विशेषता है नवीनतम जानकारी का समावेशन। इसके साथ ही पाठ्य-पुस्तकों में गतिविधियों, सूक्ष्म अवलोकन, प्रयोग आदि को भी शामिल किया जाना चाहिए और विज्ञान के प्रति एक ऐसे सक्रिय रुख को बढ़ावा देना चाहिए जो बच्चे को उसके आस-पास की दुनिया से जोड़ सके और केवल सूचना आधारित न हो।

27. (A) माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952–53 ने माध्यमिक स्तर पर सह-शिक्षा शुरू करने पर सुझाव दिया कि सह-शिक्षा शुरू करने के लिए कई राज्यों द्वारा संसाधनों का वहन नहीं किया जा सकता है। ध्यातव्य है कि माध्यमिक शिक्षा आयोग जिसे मुदालियर आयोग भी कहा जाता है, ने माध्यमिक शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन कर 29 अगस्त, 1953 को अपना सुझाव भारत सरकार को प्रस्तुत किया।

28. (B) विज्ञान शिक्षक द्वारा लड़कियों को विज्ञान विषय में भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित करना लैंगिक पक्षपात की समस्या का समाधान करने का एक प्रयास है, क्योंकि सामान्यतया लड़कियों को विज्ञान विषय का चयन नहीं करने दिया जाता है, बल्कि उन्हें ऐसे विषय चुनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो घरेलू कार्यों में उपयोगी हों। सामाजिक पूर्वाग्रहों के अनुसार विज्ञान विषय लड़कों के भविष्य बनाने के लिए उचित है।

29. (C) एक आक्रामक, क्रोधी एवं विद्रोही प्रवृत्ति वाले छात्र से निपटने के लिए एक शिक्षक को छात्र के व्यवहार को नम्य बनाने का भरसक प्रयास करना चाहिए। इसके लिए उसे सामूहिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

30. (C) यदि सामाजिक अध्ययन विषय की एक अध्यापिका कक्षा आठ के विद्यार्थियों को 'मतदान प्रक्रिया' के बारे में पढ़ाना चाहती है तो सबसे उपयुक्त विधि प्रायोजना विधि होगी। प्रायोजना विधि के माध्यम से वह बच्चों को मतदान करने, मतदान में प्रयुक्त सामग्री, मतदान के कार्यकलापों आदि वास्तविक परिस्थिति में सक्रिय सहभागिता के माध्यम से सिखा सकती है।

31. (C) जे. एम. स्टीफन के अनुसार–"शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक अभिवृद्धि का व्यवस्थित अध्ययन है।"

32. (C) विद्यालयी पाठ्यचर्या का उद्देश्य बच्चे को संघटित, अर्थपूर्ण, शैक्षिक, अनुभूतियाँ प्रदान करना होता है। पाठ्यचर्या के द्वारा ही स्पष्ट किया जाता है कि विद्यालय में विभिन्न स्तरों पर किस-किस विषय का ज्ञान छात्रों को दिया जाएगा। इस प्रकार पाठ्यचर्या से पाठ्य-सामग्री का निर्धारण होता है जिससे शिक्षण प्रक्रिया को सुनियोजित करने में सहायता मिलती है। पाठ्यचर्या की सहायता से छात्रों की योग्यता का मूल्यांकन एक निश्चित समय के पश्चात किया जाता है।

33. (C) उपचारात्मक शिक्षा का हेतु है, सही तरीके से न पढ़ाई गयी भाषा-वस्तु को फिर से पढ़ाना। उपचारात्मक शिक्षण व्यवस्था में कक्षा के वर्तमान स्वरूप और संरचना में कोई परिवर्तन नहीं किया जाता है। यदि छात्र किसी विषय-वस्तु के खण्ड को समझने में कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं या उन्हें जो पढ़ाया जा रहा है, उससे संबंधित अपेक्षित पूर्व ज्ञान उसे नहीं है, तो शिक्षक छात्र को पाठ का पुनः अधिगम कराता है। पहले पढ़ाये पाठ को पुनः पढ़ाता है और छात्रों की अधिगम संबंधी कठिनाइयों को दूर करता है।

34. (D) हरग्रीब्स ने विफल सुधारों पर साहित्य का संक्षिप्त विवरण दिया है। उन्होंने कहा है कि शैक्षिक परिवर्तन लड़खड़ा या विफल हो जाते हैं क्योंकि परिवर्तन पूरी तरह से एक अवधारणा है या उसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित नहीं किया गया है। यह जाहिर है किसे लाभ होगा और कैसे। छात्रों के लिए किस परिवर्तन को प्राप्त किया जायेगा, उसे बताया नहीं गया है। दूसरे, बदलाव बहुत ही व्यापक और महत्वाकांक्षी होते हैं ताकि शिक्षकों को कई मोर्चों पर काम करना पड़े, या यह बहुत ही सीमित और विशिष्ट होते हैं ताकि कुछ वास्तविक परिवर्तन किया जा सके, इससे भी शैक्षिक परिवर्तन विफल हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त शैक्षिक परिवर्तन या तो बहुत तीव्र होता है या बहुत धीमा होता है जिससे लोग अधीर या बोर हो जाते हैं और कुछ करने लगते हैं। इससे भी शैक्षिक परिवर्तन विफल हो जाते हैं।

35. (B) समावेशी भाषा वह भाषा होती है जो सरल हो और ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के शब्दों का उपयोग करती हो। इसलिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2005 में भाषा-शिक्षण को बहुभाषायी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता पर बल दिया गया है, ताकि कक्षा में बच्चों की भाषाओं को स्वीकार किया जाये क्योंकि बच्चों की भाषा को नकारने का अर्थ है उनकी अस्मिता कोन कारना।

36. (D) एक अच्छे शिक्षक में धैर्य, नेतृत्व शक्ति, विनोदप्रियता, उत्साह, आत्म–सम्मान, मनोविज्ञान का ज्ञान, सम्बन्ध स्थापित करने का गुण, विद्यार्थियों के साथ अच्छे सम्बन्ध, उच्चगुणवत्ता, छात्रों से प्रेम व सहानुभूति, कुशल वक्ता, समय का पाबन्द, विषय का पूर्ण ज्ञान, शिक्षण विधियों का प्रयोग आदि प्रकार के गुण होने चाहिए।

37. (C) सूक्ष्म-शिक्षण में कक्षा का आकार छोटा होता है अर्थात् छात्रों की संख्या पाँच से दस तक होती है, जिसमें प्रायः सहपाठी छात्राध्यापक या छात्राध्यापिकाएँ ही छात्रों की भूमिका का निवर्हन करते हैं। सेवा पूर्व तथा सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए यह एक उपयोगी विधि है।

38. (C) शिक्षक क्लास में इसीलिए प्रश्न पूछता है ताकि विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया जा सके। कक्षा में प्रश्न पूछने के कई उद्देश्य होते हैं, जैसे विद्यार्थियों को अधिगम हेतु प्रेरित करने के लिए, कक्षा में अनुशासन बनाये रखने के लिए, विद्यार्थियों के ज्ञान को जाग्रत करने के लिए, विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए, विद्यार्थियों को कक्षा में सक्रिय रखने के लिए आदि।

39. (B) यदि कोई छात्र दिये गये प्रश्नों का उत्तर न दे सके तो शिक्षक को या तो संकेतात्मक प्रश्न उसी छात्र से पूछने

चाहिए या फिर वही प्रश्न दूसरे छात्र से पूछने चाहिए और ऐसा तब तक करते रहना चाहिए जब तक सही उत्तर की प्राप्ति नहीं हो जाती। प्राप्त सही उत्तर की सहायता से पहले छात्र को उत्तर देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इस प्रकार के प्रश्न को अनुशीलन प्रश्न कहते हैं।

40. (C) यदि राज्य स्तर की एक एकल-गायन प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थियों को तैयार करते समय एक विद्यालय लड़कियों को वरीयता देता है तो वह व्यवहार लैंगिक पूर्वाग्रह को दर्शाता है। लैंगिक पूर्वाग्रह किसी लिंग विशेष के प्रति एक निश्चित धारणा है जो किसी व्यक्ति या संस्था को एक निश्चित प्रकार के व्यवहार के लिए प्रेरित करती है।

41. (C) विद्यार्थियों के अवांछनीय व्यवहार में बदलाव लाने के लिए सबसे समर्थ पद्धति है, अवांछनीय व्यवहार के कारणों को जानना और उनका निराकरण करना। विद्यार्थियों का व्यवहार कई कारणों से प्रभावित होता है, जैसे– सामाजिक वातावरण, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में रुचि न होना, सीखने के लिए प्रेरणा का अभाव आदि। शिक्षक इन कारणों का पता लगाकर उनके व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने का प्रयास करता है।

42. (A) ज्ञानात्मक सिद्धान्त एन.एल. गज द्वारा प्रतिपादित किया गया। यह सिद्धांत अध्यापकों से अपेक्षा करता है कि वे विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक योग्यताओं एवं क्षमताओं का सर्वोत्तम उपयोग करने हेतु अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को संज्ञानात्मक अधिगम के प्रक्रियाकरण तथा सोचने-समझने तथा समाधान की स्वतंत्रता आदि से अनुप्रेरित करने का प्रयत्न करेंगे।

43. (C) विद्यार्थी को सही/उपयुक्त ज्ञान उन्हें स्व–अध्ययन के लिए प्रेरित करके दिया जा सकता है। स्व–अध्ययन एक आवश्यक जीवन कौशल है जिसका लाभ उन्हें शिक्षा ही नहीं, अपितु जीवन के किसी भी क्षेत्र में मिलता है। स्व-अध्ययन छात्र को स्वावलंबी बनाता है और उसके भीतर स्वयं शिक्षण ग्रहण करने की इच्छा को जाग्रत करता है।

44. (A) पियाजे के ज्ञान के संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार, संज्ञानात्मक ढाँचे के रूपांतरित होने की प्रक्रिया समायोजन कहलाती है। समायोजन से तात्पर्य नवीन अनुभवों की दृष्टि से पूर्ववर्ती बौद्धिक संरचनाओं में सुधार करने, विस्तार करने या परिवर्तन करने से है। यह विद्यमान बौद्धिक संरचनाओं को परिवर्तित करने की प्रक्रिया है जिससे नवीन अनुभवों अथवा ज्ञान को उचित ढंग से व्यवस्थित किया जा सके।

45. (C) 'स्पेअर द रॉड–स्पोईल द चाइल्ड' अर्थात् ज्यादा लाड़–प्यार से बच्चे बिगड़ जाते हैं, इस धारणा का सम्बन्ध विक्टोरियन युग से है। इस युग के लोगों की धारणा थी कि बच्चे कठोर अनुशासन के द्वारा बेहतर सीखते हैं।

46. (C) विद्यालयों में खेल रखने का सबसे महत्वपूर्ण कारण विद्यार्थियों में सहयोग और शारीरिक समन्वय बढ़ाना है। खेल बच्चों में सृजनात्मक कौशलों को पोषित करने में सहायता करता है साथ-ही-साथ कई जीवन कौशलों जैसे समस्या समाधान, नेतृत्व क्षमता, तर्क पूर्ण ढंग से सोचना, स्वः अभिव्यक्ति, संप्रेषण कौशल, सहकारी अधिगम समूह में रहना आदि का विकास करता है।

47. (A) उपर्युक्त प्रश्न में अध्यापक परीक्षण की वैधता की जाँच कर रहा है। किसी परीक्षण की एक महत्वपूर्ण विशेषता उसकी वैधता होती है। अच्छे परीक्षण को वस्तुनिष्ठ, व्यापक, विभेदीकरण एवं विश्वसनीय होने के साथ–साथ वैध होना आवश्यक है। यदि परीक्षण उस उद्देश्य की पूर्ति करता है जिसके लिए उसे बनाया गया है तो हम ऐसे परीक्षण को वैध परीक्षण कहेंगे। परीक्षण के इस गुण को परीक्षण की वैधता कहा जाता है।

48. (A) व्याख्यान विधि अभिरुचि के विकास और पाठ्य सामग्री के संपूरक के रूप में सर्वाधिक उपयुक्त विधि होगी। व्याख्यान विधि से अधिक विषय-वस्तु को कम समय में पढ़ाया जा सकता है।

49. (C) शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, 14-18 वर्ष की आयु के बच्चे पर लागू नहीं होता है। इस अधिनियम में निःशुल्क बच्चों की शिक्षा 6-14 आयु वर्ग के बच्चों की निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा तथा बच्चों की नियमित उपस्थिति से सम्बन्धित प्रावधान है।

50. (C) दुनिया में विविध संस्कृतियों में नैतिक विकास (कोहलबर्ग का सिद्धांत) से पता चला है कि पहले चार चरणों की सार्वभौमिकता के लिए समर्थन मिलता है। नैतिक विकास के पहले चार चरणों में बालक का नैतिक विकास या तो स्वयं के हित से संबंधित होता है या सामाजिक न्याय, कानून या विधि से। ऐसे बच्चों का नैतिक विकास सभी संस्कृतियों में लगभग समान होता है। वहीं दूसरी ओर अंतिम दो चरण में बालक का नैतिक विकास तर्कपूर्ण और सार्वभौमिक मानवता के सिद्धांतों पर आधारित होता है। ऐसे में सभी बच्चों के नैतिक विकास में भिन्नता आने लगती है जो दुनिया की विविध संस्कृति के सापेक्ष भिन्न-भिन्न हो सकती है।

51. (B) निरपेक्ष श्रेणीकरण में बच्चों की निष्पत्ति के आकलन का संदर्भ बिन्दु सामान्य संभावना वक्र के आधार पर निर्धारित मानक होता है। उदाहरण के लिए निष्पत्ति आकलन में यदि किसी छात्र को 30 अंक तथा दूसरे छात्र को 55 अंक प्राप्त होते हैं तो यह कहा जायेगा कि पहला विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थी से योग्यता में 25 अंक कम है। यहाँ हम पास फेल को महत्व नहीं देते क्योंकि हो सकता है परीक्षण कठिन हो और अधिकांश विद्यार्थी 33% अंक भी न प्राप्त कर सके हों। ऐसी स्थिति में निरपेक्ष श्रेणीकरण किया जाता है।

52. (D) आधुनिक समय में मस्तिष्कीय स्कैनिंग यानी बारीक जाँच की अनेक प्रणालियाँ विकसित हुई हैं जिनके द्वारा मस्तिष्क ऊतकों को बिना क्षति पहुँचाए मस्तिष्क की क्रिया प्रणाली का अध्ययन किया जा सकता है। मस्तिष्कीय स्कैनिंग मस्तिष्क के विशिष्ट क्षेत्रों में विद्युतीय एवं जैव रासायनिक क्रियाओं को मापने का उपकरण है। वर्तमान में मस्तिष्कीय गतिविधियों को मापने के लिए निम्न उपकरण या विधियाँ प्रयोग में लायी जाती हैं–

- ई.आर.पी.
- एफ.एम.आर.आई.
- इ.ई.जी.
- एस.क्यू.यू.आई.डी.
- स्पैक्ट
- पी. इ. टी.
- सी.टी. स्कैनिंग

53. (C) 'चक्षु–बाधित' V–श्रेणी के छात्र को कक्षा में सामान्य व्यवहार किया जाना चाहिए तथा ऑडियो सीडी के माध्यम से सहायता दी जानी चाहिए। यदि कक्षा में उनके साथ विशेष व्यवहार किया जाता

है तो उनमें आत्महीनता तथा परनिर्भरता जैसी भावना उत्पन्न होगी जो उसके विकास को बाधित करेगी।

54. (D) छात्रों में मेहनत की भावना विकसित करने के लिए एक शिक्षक को छात्रों को प्रायः मेहनत करने का मौका देना चाहिए ताकि वे श्रम के मूल्य को स्वयं अनुभव कर सकें।

55. (C) शिक्षक को एक कमजोर छात्र को अलग से समय देकर पढ़ना चाहिए। प्रत्येक कक्षा वर्ग में ज्यादातर छात्र औसत होते हैं, कुछ छात्र कमजोर होते हैं तथा कुछ प्रतिभाशाली होते हैं। ऐसी स्थिति में कमजोर और प्रतिभाशाली दोनों प्रकार के छात्रों को अतिरिक्त अनुदेशन देकर उनकी योग्यता व क्षमता को विकसित करना चाहिए।

56. (D) विद्यार्थियों को गृहकार्य इसलिए दिया जाता है ताकि वे स्वतंत्र वातावरण में अध्ययन के अभ्यस्त हो सकें तथा स्वतंत्र वातावरण में रचनात्मकता का विकास किया जा सके।

57. (C) विभिन्न मापनविदों ने वैधता के भिन्न–भिन्न वर्गीकरण दिये हैं–

- तर्कसंगत वैधता
- संरचना वैधता
- पाठ्यक्रमी या विषयी वैधता
- अवयवात्मक वैधता
- कार्यात्मक वैधता
- रूप वैधता

58. (C) वुड्स डिस्पैच (भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा)–वुड का आदेश पत्र या वुड का घोषणा-पत्र सर चार्ल्स वुड द्वारा बनाया गया सौ अनुच्छेदों का लम्बा पत्र था जो 1854 में आया था। इसमें भारतीय शिक्षा पर विचार किया गया था और उसके सम्बन्ध में सिफारिशें की गई थीं। इस घोषणा-पत्र को भारत में अंग्रेजी शिक्षा का मैग्नाकार्टा भी कहा जाता है। प्रस्ताव में पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार को सरकार ने अपना उद्देश्य बनाया। उच्च शिक्षा को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से दिये जाने पर बल दिया गया, परन्तु साथ में देशी भाषा को भी महत्व दिया गया।

59. (A) यदि विद्यालयों को समाज की अपेक्षाओं पर खरा उतरना है तो उस विद्यालय के अध्यापकों को सांस्कृतिक धरोहर को जानना चाहिए, विद्यालयी क्रियाकलाप को सांस्कृतिक प्रतिरूपों से सम्बन्धित करना चाहिए तथा व्यवहार को सामाजिक अन्योन्यक्रिया के लिए निर्देशित करना चाहिए और उसका रिकॉर्ड रखना चाहिए। विकल्प B,C,D सही हैं।

60. (B) ई.सी.एम. भाषा अधिग्रहण के विकासात्मक सिद्धांत में दोनों व्यावहारिक और संज्ञानात्मक दृष्टिकोण को स्थापित करता है। इसलिए इसे भाषा विकास का वर्णसंकर मॉडल भी कहा जाता है।

61. (B) आट्टवे के अनुसार जब कोई परिवर्तन होता है तो वह सर्वप्रथम समाज में होता है। समाज के आदर्शों, मूल्यों और विचार में उसकी आवश्यकता अनुसार परिवर्तन होता रहता है। इसी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ, अनुशासन के ढंग, मूल्यांकन के तरीके। शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध सभी में तेजी से परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

62. (D) मैक नेमर ने कहा है कि जो प्रदत्त प्रतिदर्श के आधार पर प्राप्त किये जाते हैं। उन्हें सांख्यिकी कहते हैं तथा जो प्रदत्त जनसंख्या के आधार पर प्राप्त किये जाते हैं उन्हें प्राचल कहते हैं।

63. (A) **मानक विचलन**–प्राप्तांकों के मध्यमान से प्रत्येक प्राप्तांक के विचलन के वर्गों के औसत के वर्गमूल को कहते हैं।

चतुर्थक–वह प्राप्तांक जो तृतीय चतुर्थक तथा प्रथम चतुर्थक के अन्तर का आधा हो।

प्राप्तांक विचलन–मध्यमान तथा किसी प्राप्तांक के अंतर को प्राप्तांक विचलन कहते हैं।

माध्य विचलन–माध्य विचलन, मध्यमान से भिन्न प्राप्तांकों के विचलनों का मध्यमान, जबकि धनात्मक एवं ऋणात्मक चिह्नों को ध्यान में रखा गया हो।

64. (A) कोठारी आयोग ने त्रि-भाषा सूत्र का प्रत्यय दिया था जिसमें हिन्दी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषा को सम्मिलित किया गया था।

65. (C) बौद्ध धर्म में चार आर्य सत्य बताए गए हैं–

(i) जीवन दुःखों से पूर्ण है,
(ii) दुःख का कारण है,
(iii) दुःखों का निवारण है,
(iv) दुःखों के अंत का उपाय है।

66. (A) किसी के व्यक्तित्व में अपनी खुद की संस्कृति के आत्मसातीकरण की प्रक्रिया को सांस्कृतीकरण कहा जाता है।

67. (B) **टैगोर**–सभी प्रकार की पुस्तकों से बालक अधिक महत्वपूर्ण है

विवेकानन्द–योग शिक्षा के माध्यम के रूप में

महात्मा गाँधी–व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास

बौद्ध धर्म–कर्म सिद्धान्त

68. (C) दर्शन के मुख्य रूप से तीन पक्ष हैं–

(i) तत्व मीमांसा
(ii) ज्ञान मीमांसा
(iii) मूल्य मीमांसा

तत्व मीमांसा का सम्बन्ध पारलौकिक जगत से, ज्ञान मीमांसा का सम्बन्ध ज्ञान प्राप्त करने तथा ज्ञान के श्रोत से तथा मूल्य मीमांसा का सम्बन्ध नैतिकता, आचरण से है।

69. (D) सुकरात की सोक्रेटिक विधि प्रश्न पूछने पर आधारित है। वह सार्वजनिक स्थानों पर खड़ा होकर लोगों से प्रश्न पूछता तथा उन्हीं प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करता और वह उन प्रश्नों को लोगों से पूछता था जिसका उत्तर उन्हें नहीं आता था। इस विधि के माध्यम से सुकरात लोगों के अंदर ज्ञान प्राप्ति की ललक जाग्रत कर देता और फिर उन प्रश्नों का उत्तर वह स्वयं प्रदान कर देता था।

70. (A) बौद्ध धर्म में बालक को विहार में प्रवेश के समय सिर मुंडाकर पवित्रता धारण करता था और शरणत्रयी–बुद्धम् शरणम्, गच्छामि, धम्मम् शरणम् गच्छामि, संघम् शरणम् गच्छामि में उसका संघ में प्रवेश होता था। यही प्रवज्जा संस्कार था। यहीं से बालक की शिक्षा की शुरुआत होती थी।

71. (D) वेदांत दर्शन के अनुसार इस संसार की उत्पत्ति ब्रह्म के द्वारा अपनी माया शक्ति से की गयी है। माया एक प्रकार भ्रम है, क्षणिक है, सत्य तो केवल ब्रह्म है और उसी ने इस जगत का निर्माण किया है। जीवन का अन्तिम उद्देश्य सत्य की प्राप्ति है जो ब्रह्म एवं आत्मा का एक हो जाना है। शिक्षा के माध्यम से इन उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

72. (B) जैन दर्शन में त्री–रत्न की बात की गयी है। ये त्री–रत्न हैं–(1) सम्यक ज्ञान (2) सम्यक् दर्शन, (3) सम्यक चरित्र, जैन दर्शन में त्री–रत्न की प्राप्ति के लिए पंच महाव्रत बताए गए हैं यह हैं– (i) सत्य, (ii) अहिंसा, (iii) अस्तेय, (iv) अपरिग्रह, (v) ब्रह्मचर्य।

73. (C) प्रकृतिवाद प्रकृति को ही सर्वश्रेष्ठ मानता है। प्रकृतिवाद का उद्घोष है–'प्रकृति की ओर लौटो' और प्रकृतिवादी प्रकृति को ही सर्वश्रेष्ठ शिक्षक मानते हैं। प्रकृति की गोद में बालक स्वयं से करके सीखे।

74. (D) समाज के विकास में किसी एक व्यक्ति विशेष का हाथ नहीं होता वरन सम्पूर्ण समाज का होता है। ऐसे में समाज का विकास किस प्रकार होगा, वह समाज के नागरिक पर निर्भर करता है। नागरिक जितने अधिक योग्य, कार्य कुशल, व्यवहार कुशल और कर्मठ होंगे समाज का उतना विकास होगा और ये योग्य, कर्मठ और कुशल व्यक्ति स्कूल तथा अन्य औपचारिक संस्थाओं से आते हैं जिससे इसका अस्तित्व बढ़ गया। इसके अलावा सामाजिक प्रथा परम्पराओं का संवर्धन और संरक्षण तथा एक-पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरण भी औपचारिक संस्थाएँ ही करती हैं।

75. (B) फ्रॉयड के सिद्धान्त में आत्मपीड़न; निर्जीव को जीव में देखना, स्वप्रेम शामिल है लेकिन पर पीड़न का सम्बन्ध फ्रायड के सिद्धान्त से सम्बन्धित नहीं है।

76. (B) छान्दोग्य उपनिषद् में कहा गया है– बुद्धिमत्ता की ओर अग्रसर ज्ञान सही शिक्षा है।

77. (A) जैन दर्शन में प्रत्येक व्यक्ति को वैयक्तिक रूप से देखा जाता है और वैयक्तिक रूप में उत्थान की बात की गयी है। इसलिए यह व्यक्तिवादी दर्शन है।

78. (C) कक्षा में अध्यापक व्यक्तिगत विभिन्नता का ज्ञान प्राप्त करके छात्रों की क्षमताओं का ज्ञान प्राप्त करता है और इसी के आधार पर अध्ययन, अध्यापन की कार्य योजना का निर्माण करता है, क्योंकि प्रत्येक बालक की रुचि, रुझान, योग्यता में अन्तर होता है और इसी के आधार पर वह शिक्षण के लिए विषय–वस्तु एवं शिक्षण विधि का चयन बालकों को पढ़ाने के लिए करता है।

79. (B) राष्ट्र के नागरिकों को अपने विचारों, भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को संविधान का एक अभिन्न अंग बना दिया गया है।

80. (A) शिक्षा में अवसरों की समानता का अर्थ होता है–सभी को उनकी योग्यता और क्षमता के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार, इसके लिए आवश्यक है कि बिना किसी भेदभाव के शैक्षिक संस्थाओं के द्वार सभी के लिए खोल दिए जाएँ।

81. (D) राष्ट्रीय एकता में जातिवाद, साम्प्रदायिकता एवं भाषावाद है लेकिन चरित्र निर्माण राष्ट्रीय एकता में सहायक है।

82. (C) इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना 1887 में वुड घोषणा-पत्र को आधार मानकर बम्बई, कलकत्ता, मद्रास के बाद की गयी।

83. (B) भारतीय संविधान के अनुच्छेद–28 में सर्वधर्म के लिए शिक्षा की व्यवस्था है जिससे धर्मनिरपेक्षता परिलक्षित होती है।

84. (D) वैदिक काल में शिक्षा मुख्यतः वेदों पर आधारित थी। वेदों की संख्या चार है।

85. (B) चेस तथा कार्ड को बौद्धिक खेलों की श्रेणी में रखा जाता है।

86. (A) समस्त समूह द्वारा किए जाने वाले कार्य का नमूना प्रतिमान कहलाता है। कैलिफौर्निया उपलब्धि परीक्षण माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए निर्मित किया जाता है।

87. (B) कक्षा शिक्षण औपचारिक शिक्षा का साधन है जबकि सिनेमाघर, टी. वी. व परिवार अनौपचारिक शिक्षा के साधन हैं।

88. (C) बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था में विद्यालय के लिए जो पहनावा था उसे तिसिवरा कहा जाता है।

89. (C) माइकेल सैडलर 1917 में स्थापित कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग के अध्यक्ष थे।

90. (B) प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण (T.A.T.) की रचना 1935 में सी. डी. मार्गन तथा एच. ए. मूरे ने की थी। इस परीक्षण में कुल 31 कार्ड होते हैं जिनमें से 30 कार्डों पर अस्पष्ट काले सफेद रंग से चित्र बने होते हैं, जबकि एक कार्ड सादा होता है।

91. (C) मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से अधिगमकर्त्ता के सीखने के स्तर का पता लगाया जाता है। अतः मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य बच्चों के सीखने के स्तर के ज्ञान की जानकारी प्राप्त करना होता है।

92. (A) कैटल द्वारा बनाए गए व्यक्तित्व प्रश्नावली उपकरण 16 पी.एफ. प्रश्नावली है।

93. (D) शिक्षा के मूल्यांकन से तात्पर्य है व्यक्तियों का मूल्यांकन के आधार पर व्यवसाय निर्धारण में प्रयोग किया जाना।

94. (B) राज्य शिक्षा के अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक मदद करते हैं लेकिन शिक्षित करने व शिक्षा प्रदान करने में प्रत्यक्ष मदद नहीं देते जैसे कि विद्यालय, विश्वविद्यालय आदि।

95. (C) निजी प्रबन्धन में शिक्षकों को बेहतर नियन्त्रण एवं पर्यवेक्षण में रखते हैं।

96. (B) शैक्षिक समाजशास्त्र शिक्षा व समाज के सम्बन्ध का अध्ययन करता है।

97. (C) त्रिभाषा-सूत्र पर कोठरी आयोग ने राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया है जिसमें त्रिभाषा के अतिरिक्त एक अन्य भारतीय भाषा को पढ़ाने पर बल दिया गया।

98. (D) गुरुकुल शिक्षा प्रणाली वैदिक काल में प्रचलित थी। इस काल में गुरु शिष्यों के साथ पुत्रवत् व्यवहार करता था।

99. (C) ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना, पढ़ाई को रटन्त प्रणाली से मुक्त कराना तथा बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर उपलब्ध कराना राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूप रेखा (NCF) 2005 के प्रमुख मार्गदर्शी सिद्धान्त हैं जबकि अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देना इसका सिद्धान्त नहीं है।

100. (B) 1. कोठारी आयोग – 1964-66 शिक्षा आयोग के अध्यक्ष
2. मुदालियर – 1952-53 माध्यमिक शिक्षा आयोग

101. (B) प्रौढ़ों के प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए कार्यक्रम को प्रासंगिक बनाना चाहिए। इस प्रकार प्रौढ़ों को जो पढ़ाया जाएगा वह भूलेगा नहीं।

102. (A) स्थानीय स्वायत्तशासन की संस्था ग्राम पंचायत हैं, प्राथमिक विद्यालयों को स्थानीय शिक्षण कहते हैं।

103. (A) चीनी यात्री इत्सिंग के विवरण के अनुसार बच्चों की शिक्षा प्राथमिक स्तर पर सिद्धिरस्तु नामक पुस्तक पढ़ायी जाती थी। इसमें वर्णमाला के 49 अक्षर तथा स्वरों और व्यजंनों की दस हजार से भी अधिक मात्रायें होती थीं।

104. (D) ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड द्वारा प्राथमिक विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं की पूर्ति की गयी जिसमें दो कमरे व अन्य शिक्षण सामग्रियाँ हैं।

105. (C) बढ़ती जनसंख्या और सबको उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षा के अनौपचारिक साधन हैं। यह औपचारिक साधनों की असमर्थता को पूरा करती है।

106. (A) किशोरावस्था (13-19 वर्ष) को मनोवैज्ञानिकों द्वारा अत्यधिक दबाव एवं तनाव की अवस्था के रूप में स्वीकार किया गया है।

107. (D) रचनात्मक लेख का नियोजन उन सभी छात्रों के लिए होना चाहिए जो कक्षा स्तर

पर पढ़ते हैं, वे जो लम्बे वाक्य लिख सकते हैं तथा वे भी जो समाचार–पत्र के लिए लिखना चाहते हैं।

108. (A) **सही मेल है**

रिपब्लिक – प्लेटो
एमिल एण्ड – रूसो
दि स्कूल एण्ड सोसायटी – जॉन डीवी
संध्या विधि – दयानन्द सरस्वती

109. (C) मध्यमान से प्राप्ताकों के विचलन के वर्गों के मध्यमान के गुणात्मक वर्गमूल को ही मानक या प्रामाणिक विचलन कहते हैं। विचलन के समस्त प्रमापों में यह सबसे महत्वपूर्ण एवं विश्वसनीय है।

110. (C) आलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व व्यक्ति के मनो–शारीरिक गुण का गतिशील व अपने वातावरण से अनोखा सामंजस्य है।

111. (C) कर्टलेविन का विचार था कि समूह में जो परिवर्तन होते हैं उन्हें गतिशीलता कहा जा सकता है।

112. (D) सृजनशीलतावाद, अधिगमकर्ता को नये विचारों या रचनाओं को पैदा करते या उन्हें खोलने का भरपूर (स्वतन्त्र रूप से) अवसर प्रदान करता है।

113. (A) स्टर्नबर्ग ने अपने बुद्धि त्रिस्तीय सिद्धान्त में तीन तरह की बुद्धि बताई है–

1. विश्लेषणात्मक बुद्धि
2. सर्जनात्मक बुद्धि
3. व्यावहारिक बुद्धि।

114. (D) 'डिस्लेक्सिया' पढ़ने से सम्बन्धित एक शारीरिक अक्षमता है इससे ग्रस्त बच्चा 'saw' और 'was' 'nuclear' और 'unclear' में अन्तर नहीं कर पाता है।

115. (B) वाटसन महोदय के अनुसार,"अधिगम प्रत्यक्ष है, विचारों की मध्यस्थता नहीं होती।"

116. (B) यह अनुसंधान का एक प्रकार है इसमें जो व्यक्ति या शिक्षक तात्कालिक समस्याओं के समाधान के लिए उपयोगी है। यह दूसरी परिस्थति के लिए उपयोगी नहीं होता है।

117. (A) महात्मा गाँधी के विचारों के आधार पर 1937 में वर्धा शिक्षा सम्मेलन में जाकिर हुसैन समिति के प्रत्यावेदनों के आधार पर बनी ।

118. (D) आँकड़ों का आरोही क्रम = 2, 2, 2, 4, 10 11, 12, 13, 16N = 9

$$\text{Median} = \frac{N+1}{2} \text{ वाँ पद} = \frac{10}{2} = 5$$

= वाँ पद

= 10

119. (D) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) 2005 के अनुसार, भाषा शिक्षण बहुभाषिक होना चाहिए, केवल कई भाषाओं के शिक्षण के अर्थ में ही नहीं अपितु रणनीति तैयार करने लिए भी जिससे बहुभाषिक कक्षा को एक संसाधन के रूप में प्रयोग में लाया जा सके।

120. (B) सहसम्बन्ध दो चर राशियों में सम्बन्ध होता है। यह धनात्मक, ऋणात्मक व शून्य होता है।

121. (D) अध्वर्यु ज्ञान के समय आहुति देने वाला होता है। यज्ञ के समय कोई त्रुटि होने पर प्रायश्चित करने वाला कार्यकर्त्ता होता था।

122. (D) 1938 में ही राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिक पुनर्निर्माण के आकलन का कार्य शुरू हुआ जिसमें हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट एक्ट 1939 में पारित हुआ।

123. (B) किसी भी विद्यालय का मूल उद्देश्य विद्यार्थी के सामाजिक विकास की प्रारम्भिक प्रक्रिया को मजबूत करना और उनमें तर्क की क्षमता पैदा करना होता है। इसके माध्यम से कोई भी विद्यालय विद्यार्थी के सम्पूर्ण विकास की प्रक्रिया को बल प्रदान करने में सहायक होता है। इसी आधार पर विद्यालय आधारित आकलन पद्धति को प्रारम्भ किया गया था।

124. (D) परिवर्तन प्रकृति का शश्वत व अटल नियम है। परिवर्तन समाज की परम्पराओं, विचारधाराओं, रीति–रिवाजों, फैशन, रहन–सहन के ढंगों, तौर–तरीकों, व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों में होता है। गिन्सबर्ग के शब्दों में, "सामाजिक परिवर्तन से हमारा अभिप्राय सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन से है अर्थात् समाज के आकार, इसके विभिन्न अंगों के बीच के सन्तुलन अथवा समाज के संगठन में होने वाला परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन है"

सामाजिक परिवर्तन में उस समय बाधा पहुँचती है, जब समाज वांछनीय परिवर्तन को स्वीकार नहीं करता। भारतीय समाज में शिक्षा की सहायता से सामाजिक परिवर्तन लाने में सबसे बड़ी बाधा विभिन्न प्रकार की विविधताएँ हैं तथा निर्धनता, बेकारी, पूँजी की कमी, मशीनों के प्रति पूर्वाग्रह, सांस्कृतिक प्रतिरोध जैसे जातिवाद, धर्म, रूढ़ियाँ, संयुक्त परिवार प्रणाली, आधुनिकता का अभाव, आलस्य, अकर्मण्यता आदि।

125. (C) **शिक्षा का समाजशास्त्र–**शैक्षिक समाज-शास्त्र शिक्षा और समाजशास्त्र का समन्वित रूप है। शैक्षिक समाजशास्त्र व्यक्तियों की अंतःक्रियाओं एवं सामाजिक वातावरण का अध्ययन करता है। इसके अन्तर्गत सामाजिक संख्याओं, समूहों तथा प्रक्रियाओं की व्याख्या एवं विश्लेषण सम्मिलित है। कक्षा–कक्ष में भूमिका, द्वन्द्व, सहयोग और प्रतिस्पर्धा आदि के अध्ययन का सम्बन्ध शिक्षा के समाजशास्त्र के अन्तर्गत आता है।

❑❑